बरिस-3 अंक-10

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अक्टूबर-दिसंबर 2020

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह-सम्पादक	:	1. भावेश
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2.मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले । रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही । कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई ।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. संपादकीय
   - संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात - तारकेश्वर राय / 5
2. कनखी
   - बिकास अब त घरे आजा - डॉ अनिल चौबे / 7
3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
   - उमा - इन्दु उपाध्याय / 33
   - फूलवा - कनक किशोर / 34
   - लोक लाज - कनक किशोर / 36
   - मर्दानगी - गीता चौबे "गूँज" /37
   - हमार गाँव के लोग - समता सहाय / 58
   - अगिया बाबा - राम प्रकाश तिवारी / 74
   - भुनेसर भाई के ठेकुआ - विशाल नारायण / 77
   - बिलइया - कुमार चंदन / 78
4. कविता
   - माई त बस माई हीयऽ - संजीव कुमार त्यागी / 21
   - हमे बिहान मिलल बा - पीयुष पराशर / 21
   - चल मिलजुलि के धरती बचाईं - देवेन्द्र कुमार राय/22
   - समाज बदल रहल बा - इंदु उपाध्याय/22
   - मनहरण घनाक्षरी छंद - दीपक सिंह / 23
   - आइल गइल तऽ लगले रही - माया चौबे / 23
   - भोजपुरी दोहे - बाबूराम सिंह कवि / 24
   - बा एकरे नाम जिंदगी - सुजीत सिंह / 24
   - सोझबक - मदनमोहन पाण्डेय/25
   - बरवै छंद - अमरेन्द्र सिंह/25
   - जब मंत्री बनि जाइब - अरविन्द श्रीवास्तव / 53
   - हमार जिंदगानी - हरेश्वर राय / 61
   - गुंडई के भासा - हरेश्वर राय / 61
   - बनत नइखे गणित - अनीताशाह / 61
   - हँसत बा चेहरा - अनीताशाह / 61
   - फूलवा - अजय अजनबी / 69
   - कुंडलिया - दीपक तिवारी / 69
   - हर दर्द हसी के छुपावे पडेला - राजू साहनी / 70
   - हम हिंदुस्तानी हई - अभियंता सौरभ कुमार / 70
   - माई के नेहिया - पूजा प्रसाद प्रज्ञा / 73
   - जहिया टूटि जइहें - रविनंदन सैनी / 79
   - कोरोना - कृष्णा श्रीवास्तव / 79
5. गीत/ गजल
   - डॉ जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 8
   - तंग इनायतपुरी जी के भोजपुरी ग़ज़ल / 11
   - सुनाव$ हाल काका - संजय मिश्र संजय/20
   - कहिया ले ? - संजय मिश्र संजय/20
   - का होखत बा आह लगावऽ - अशोक कुमार तिवार/26
   - बनल रहे दे ते हमके नादान रे माई - विमल कुमार/26
   - संगीत सुभाष जी के गीत - संगीत सुभाष/27
   - ई भारत देश महान हवे - आकाश महेशपुरी/27
   - देवी गीत - विद्या शंकर विद्यार्थी / 38
   - हमरा लिखला के जोर - विद्या शंकर विद्यार्थी /38
   - नीड़ इनकर ना रहल - गीता चौबे गूँज / 39
   - सजनिया कईलू रोपनिया - राजकुमार तिवारी 'मधुर'/39
   - कुण्डलिया-आ जा हमरे गाँव में - माया शर्मा / 40
   - बात सगरो जहान तक पहुँचल - राज जौनपुरी / 40
   - शोभा सिंधु महान की जय - संगीत सुभाष/ 41
   - कबहूँ गंगा, कबहूँ जमुना - संगीत सुभाष/ 41
   - सुख दुःख - सुरेश गुप्त / 42
   - रिस्ता में बयपार घुसावल बन्द करीं - सुरेश गुप्त / 42
   - हम इश्क़ करीं - अतुल कुमार राय / 52
   - बिटिया (पूर्वी) - कन्हैया प्रसाद रसिक / 52
   - जा करोना जा -लाल बिहारी लाल / 56
   - बाबा विश्वकर्मा राउर,महिमा -लाल बिहारी लाल / 56
   - तीज व्रत गीत - -गणेश नाथ तिवारी"विनायक" /56
   - कोरोना बेमारी - कृष्ण मुरारी राय / 57
   - काठ करेजा कइके - विजय कुमार चौबे "मनु" / 57
   - करीले निहोरा - अमन पाण्डेय / 62
   - बा जरूरी पढ़ाई - पद्म सागर यादव / 62
   - बिधना कौन बिधि भेजलऽ - श्याम श्रवण / 71
   - आइल गइल तऽ लगले रही - सन्तोष कुमार / 71
   - ओल्हा पाती आइस-पाइस - रघुवंश मणि दूबे / 72
   - नेतवा महान बा - अनिल कुमार / 72
6. पुरुखन के कोठार से
   - राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता / 9
   - स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 10
7. नाटक / एकांकी
   - परवरिस - विद्या शंकर विद्यार्थी / 43
8. आलेख/निबंध
   - भोजपुरी काव्य में बिम्ब -जयकान्त सिंह' / 28
   - भय बिनु होत न प्रीत - तारकेश्वर राय "तारक"/48
   - भोजपुरी: माटी के - डॉ मनोज कुमार सिंह / 54
   - महतारी भाखा ब्यंग - अमरेन्द्र कुमार सिंह / 59
   - कविता भाषा क सबसे -परिचय दास / 63
   - योग अउर योगी - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी /65
9. सबद कौतुक
   - दुनिया रंग-रंगीली - दिनेश पाण्डेय / 12
10. संस्मरण
   - बाबूजी ! बाबूजी ! - माया चौबे / 50
11. हंसी / ठिठोली - 67
12. सतमेझरा -68,80,81,82

लोक कल्याण खातिर सिरिजनन

आनंद की तीरथ में, रस देवता के मंदिर का आंगन में सब मानव के कल्याण खातिर, विश्व कल्याण बदे कइल अर्चना के नाम कविता ह।

जिदगी की चौमुहानी पर रचनाकार के बाँसुरी ब जेला इहे सुनावे खातिर कि जवना प्रेम की राह में ईश्वर बोलवले बाडन उहवाँ पहुंचे में साहित्य सहयोगी बा। दुःख के स्वीकारे में भरपूर सम्बल ह साहित्य।

कवनो कला तबे कला होला जब लोक कल्याणकारी होखे। कलाकार के कला जब लोक कल्याणकारी आ जन साधारण खातिर सुलभ होई तबे ओ कला के लोक जीवन में स्थान मिली। जब कवनो चीज थोड़े लोग खातिर होले त ओकर महत्व कम हो जाला। ईश्वरीय सौंदर्य के कवनो भी भाषा के माध्यम से दरसावले रचनाकार भा कवि के कर्तव्य होला।

रचनाकार जेतना गहिराहे ए सौंदर्य सागर में गोता लगावेलें ओतने ढेर अपना कर्तव्य में हो लें। संसार में घटेवाली घटना के, पदारथ के त सभे देखेला। बाकी जवनी आँखि से एगो रचनाकार देखेला ऊ विलक्षण होले। पदारथ रूपी चित्र के चित्रकार के हाथ की महिमा, गुण, दोष रचनाकार के आँखि पहचानेले। प्रकृति देवी के सुरमई संगीत कवि के कान सुनेला। बैज्ञानिक पदारथन के बाहरी अंग के खोजबीन करेलें आ अवयव के आपसी सम्बन्ध खोज निकालेलें। नीतिज्ञ समाज खातिर परिणाम निकालेलें बाकी ओकर आंतरिक सौंदर्य खोजल कवि के लक्ष्य होला। इहे रचना अउर रचनाकार के सच्चा आदर्श ह। एही आदर्श की जेतना नियरा कवि लोग पहुँचेला ओकर रचना ओतने प्रभावशाली आ स्थायी होला। लेखक की सृष्टि में सम्पूर्ण प्रजातंत्र होला।

कवनो भाषा, भाषा होखे के पहिले

बोली ही रहेले। फेर ओ के व्याकरण, रचना, साहित्य लिपिबद्ध हो के ओ के बोली से भाषा के दर्जा दिआवे में सहायक होले। भाषा कबो स्थिर ना रहे। ओ में परिवर्तन होते रहेला। हजारों बरिस पहिले जवन भाषा बोलल भा लिखल जात रहे ओकर आजो उहे रूप नइखे। भाषा के विद्वान लोग के मत ह कि भाषा में परिवर्तन रुक जाव त ओकर उन्नति भी रुक जाला। बहुत खुशी के बात बा कि आज सोशल मीडिया के जमाना में भोजपुरी भाषा के विकास खातिर रोज रोज नया नया संगठन बनता। खूब प्रचार प्रसार होता। गीत संगीत के माध्यम से जन मानस की सोझा अपनी भाषा में आपन बात राखल जात बा। ई प्रयास एकदिन जरूर रंग ले आई।

सिरिजन के ई दसवाँ अंक ह। पढ़ीं आ अपने दोस्त मीत के भी पढ़े खातिर उकसाईं आ अपना अनमोल सुझाव से पत्रिका के अवगत करावत रहीं, ताकि भविष्य में अउर बेहतर से बेहतर रूप में सिरिजन रउआ सोझा निखर के आवत रहे।

रउरे

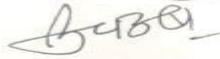

✍ (डॉ अनिल चौबे)

सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

कोविड महामारी के चलते जिनिगी थथमल बाकी गवहीं-गवहीं सही, सरक रहल बा, रुकल नइखे, रुकियो नइखे सकत। समूचे देश एह महामारी में बन्हाइल जाता तांडव मचा के रख देले बिया ई बेमारी। का शहर, का गाँव, का महानगर, दुनिया में कवनो अइसन जगह नइखे जहवाँ एकर पैसार नइखे। एह बेमारी के चपेट में आवेवालन के संख्या ऊपर मुहें सरपट भागल जा रहल बा। जब तक दवाई नइखे मिल जात तब ले ढिलाई जीव के जँवजाल बन जाई, एह बात के गाँठ बान्हल समय के माँग बा। दुई ग़ज़ के दूरी मास्क बा जरूरी एह बात के भुलइलो भुलाए के नइखे । आसते-आसते सही, सब बंधेज खोल रहल बिया सरकार। का करब, ना खोलले काम कइसे चली ? एह बेमारी के संगहीं जीए के आदत डाले के परी। हमनी के एकर निदान हाली भेटाये के उम्मीद के किरण लउकत नइखे। कोशिश में सभे लागल बा।

सरकार त आपन काम मुस्तैदी से करी रहल बिया, समय-समय पर दिशानिर्देश जारी हो रहल बा। कुछ काम हमनियों के करि लेवे के चाही जवना से परिवार समाज अउरी देश के सुरक्षा जुड़ल होखे त उ काम मे लापरवाही त करहीं के ना चाही । जानत सभे बा लेकिन लापरवाही अउरी भेड़चाल से हमनी के पुरनकी भवदी ह । आदत छुटल मुश्किले बा । संक्रमित के संख्या में बढ़ोतरी खाती इहो एगो मुख कारण बा। मानवीय हानि इन्सान के नाते कष्ट त देबे करेले । समाज मे दू तरह के बोल सुने के भेटात बा सख्ती हो जाव त तानाशाही अउरी ढील दे दिहल जाव त लापरवाही ।

अपना देश के अर्थव्यवस्था के पटरी पर ले आवे खातिर अनलॉक कइल जरूरी बा। अब अउरी सचेत होखे के परी बाकी घर से बहरी ना निकलले जिनिगी चली कइसे? फाले फाल खतरा बा, चललो जरूरी बा । कठिन समय समझदारिए से कटेला अउरी ओकरा खातिर अबहीं जागरूक भइल एकमात्र उपाय नजर आवता। जीडीपी में गिरावट से ढेर घबराये के नइखे, बैश्विक महामारी के चलते बा ई, अल्पकालिक बा, संकुचन आइल बा लेकिन भविष्य उज्जवल बा ।

आपन देश के चीन से लागत सीमा पर स्थिति सामान्य नइखे। पड़ोसी देश के रिश्ता में खटास अइला का ओजह से दुन्नो देश के सैनिकन में तनाव जारी बा। अपना देश के मजबूत सैन्य शक्ति ई बतावे खातिर काफी बा कि ई पुरनका भारत ना ह जवन अपमान के घूँट चुपचाप पी लीही, अब मुहँ तोड़ जबाब देवे में सक्षम बा आपन देश। एतना त बड़ले बा कि अब चीन "हिन्दी चीन भाई भाई" के नारा लगा के पीठ में छुरा भोंके के हिम्मत त केहू नाहिए करी ।

बर्तमान समय कुल काम भले खराबे कइले होखे लेकिन कुछ काम नीको भइल बा । दुश्मन के पसीना छोड़ावे वाला राफेल भारतीय वायु सेना में शामिल हो गइल। चीन से तनाव के समय पर वायु सेना के हाथे राफेल लगला के चलते जवानन के मनोबल में खाफी इजाफा भइल बा ।

इतिहास एह बात के साखी रही कि अयोध्या के राम जन्मभूमि विवाद पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसला जब आइल त समूचा देश एकर दिल खोल के स्वागत कइलस आ सौहाद्र अउरी भाईचारा के अनूठा मिसाल पेश कइलस। अयोध्या में राममंदिर के निर्माण के असम्भव लागेवाला काम एगो हकीकत बने जा रहल बा ।

अमेरिका हथियार बेचे में लागल बा। चीन नावा वायरस बेचे में लागल बा, अरब तेल बेचे में बाझल बा आ जबसे बिहार में चुनाव के बिगुल फुकाइल बा राजनीतिबाज नावा सिरा से सपना बेचे खातिर एड़ी चोटी के जोर लगावत लउकताड़े। अज्ञानी दूसरा के ज्ञान बेच रहल बाण अउरी एगो झूठा दूसरा के साँच के पूरा गोदाम बेचे के जुगाड़ में भीड़ल बा। सभे नेता अपना के दूध क धोवल आ दोसरा के कुकर्मी साबित करे खातिर शब्दन के बाण छोड़ रहल बाण, जय हो लोकतंत्र के।

आवेवाला तिमाही अपना भोजपुरिया बघार खातिर उत्सव के पाहूर ले के जुमही वाला बा। खेतिहर रब्बी के फसल लगावे खातिर खेत के तइयारी में लउकत बाड़ें संगहीं धरती पुत्र के पेशानी प खरीफ के फसल के बिटोर के ओकर भंडारन के चिन्तो लउकता। एही तिमाही में पड़ी हिन्दू के सबसे लमहर दस दिन तक चले वाला दसहरा । पहिलका नौ

दिन दुर्गा माई के अलगा अलगा रूप के पूजा अर्चना कइल जाला फिर दसवाँ दिने रावण के पुतला जरा के एह पर्व के पुर्णाहुति कइल जाला । ई पर्व बतावेला बुराई केतनो बलशाली उत्तम अउरी ज्ञानी होखे ओके हार के सुवाद के चिखहीं के परेला । रावण परम ज्ञानी सोने के लंका आ परम बलशाली सेना महारथी साथ होखला के बावजूद बानर भालू बनवासी आ गिनल चुनल लड़ेवाला से खाली हरहि के ना परल जिनिगियो से हाथ धोवे के परल, एतने ना राज पाट त नास भइबे कइल साथे साथ कुल के भी विनाश हो गइल। साँच कहि त रावण मरबे ना कइल हमनी के बहरी मने रावण के जरावेलींजा आ मानस में ओके जियवले रहेनीजा। ऊ सतयुग रहे ओमा एगो रावण रहे दस गो सिर भले ही रहे बाकी चेहरा एकही रहे। आज हर घर मे रावण बा आ एगो सिर पर कइगो चेहरा लागल बा ओकरा पर बिजय प्राप्त कइल दुरूह काम बा लेकिन नामुमकिन नइखे । अन्हार के भगावे बदे एगो छोटी चुकी दीया खाफी बा ओहि तरे रावण के नाश करे के सोच ही काफी बा । हमनी के मानस के रावण धनुष से ना मुई ओकरा खातिर राम बने के परी आ ऊ मुई सँस्कार से ज्ञान से इच्छा शक्ति से संयमित बेवहार से । खाली दसहरे में ना बल्कि साल के तीन सै पैंसठो दिन मारे के प्रयास करे के परी आपन दिनचर्या के हिस्सा बनावे के परी । तबे सार्थक होई दसहरा । एकरा बीस दिन बाद आवेला दिया दियारी । पुरुषोतम राम के लंका विजय अउरी बनवास खत्म क के वापस अयोध्या लउटे के खुशी के मनावल जाला ई त्योहार । राम के बनगमने बहाना बनल आसुरी शक्ति के बिनाश के आ वतर्मान परिपेक्ष्य में आपन घर दुवार दुकान दउरी के साफ सुथरा रंग रोगन करावे के बहाना बनी जाले दीवाली । जीवन के एक रसता टुटेला मनफेरवट हो जाला नवका पीढ़ी के आपन अतीत के जाने के मोका मिल जाला। समय के मर मीठा लक्ष्मी पूजा दीपोत्सव के साथे आतिशबाजी अउरी जुआ जइसन बुराई भी जुड़ गइल ओके दूर क के साफ साँच मन से श्रद्धा से एह पर्व के मनावल जाव। एकरा बाद आवेला गोधना जेमे बेटी बहिन फुवा लोग आपन परिजन के श्रापे के रित है एकर बाद रेंगनी के कांट के गड़ा के ओकर पश्चाताप भी कइल जाला । रेंगनी जइसन चीझ के भी पूछ बढ़ी जाला गोधना के । भइया दूज जइसन तेवहार भाई बहिन के रिश्ता के नावा ऊर्जा दे जाला । ससुरइतिन बहिन से मिले के बहाना बनी जाला तेवहार।

दीया-दीयारी के ..... दिन बाद आवेला छठ । पहिले त ई मुख्यरूप से बिहार झारखण्ड आ पूर्वी उत्तरप्रदेश में ही मनावल जात रहे लेकिन आज पलायन आ रोजी-रोजगार के चलते देश विदेश में लोग गइल बा। जे जहाँ बा ऊ ओहिजे एह पर्व के मनावत बा। आपन राजनीतिक फायदा खातिर सही स्थानीय प्रसाशनो बढ़-चढ़ के हिस्सा लेलन। चार दिन तक चले वाला ई त्योहार साफ सफाई के बहाना त बनबे करेला साथे साथ फलाहार के बढ़ावा देला बिना संसाधन के जमीन पर सुतल आ बिना चप्पल जूता के खाली गोड़े रास्ता पर चलल केतना दूभर बा ओकर एहसास होला । सामाजिक सौमनस्य के वातावरण बनेला काहे की ई पूजा घर के बहरी तालाब नदी-पोखरा के जरी कइल जाला ओसे केंहू घाट बनावेला त केंहू साफ सफाई में लाग जाला । केंहू बरती के घाटे पहुँचावे में मदद कई के पुण्य के भागी बनल चाहेला । छठ परदेशी के आपन जर तर लउटे के बहाना बन जाला । नीबू, सुथनी, काँची हरदी, कन्ना, ऊख, केला, शरीफा जइसन अनगिनत फल के प्रसाद के रूप में ग्रहण करे के रीति ह एह पर्व में । शहरी जीवन मे सूप के उपयोग छठे में होला। बिना पुरोहित के सम्पन्न होखे वाला पूजा में गिनल जाला छठ के। प्रकृति के पूजा के भावना के जोर देली छठी मइया।

राउर स्नेह पियार दुलार के हवा में बहत सिरिजन के सफर इकाई से दहाई अंक कहे के मतलब दसवाँ अंक तक पहुँच गइल बा दसवाँ अंक रउरि सोझा बा । हमनी के दिया बारी देले बानी जा एमे स्नेह रूपी तेल डालत रहे के जिम्मा रउरा सभेके बा । राउर सहयोग रूपी तेल, दीया के भेटात रही त सफर अनवरत जारी रही । एही आशा अउरी विश्वास के साथ सिरिजन रउरा लोगन के हवाले ।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

(तारकेश्वर राय)

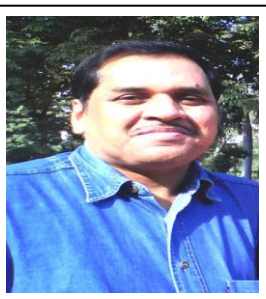

बिकास अब त घरे आजा

प्रिय बबुआ बिकास,

सदा खुश रह।

बाबू तू जहवाँ भी होखS अब घरे आजा, तोहके केहू कुछू ना बोली। अच्छा दिन आ गइल बा , हिन्दू मुसलमान एक्के साथे जन गण मन गावे लागल बा लोग। गंगा जी के जल अमृत हो गइल बा। हिन्दूलोग रोज आचमन करता। मुसलमान वजू क के सजदा । मिनरल वाटर के सभे हिकारत भरल नजर से देखे लागल बा। पुलिस के रवइया सगे सम्बन्धी जइसन हो गइल बा। ऑफिस के बाबू लोग टेबुल के नीचे से होखेवाली निचली आय के माथे से लगावल छोड देले बा । गाँव गाँव में सफाई अभियान बड़ा जोर पकड़ले बा । भँइस सड़क गोबर कइल छोड़ दिहली सन। सरकारी अस्पताल में मरीज इलाज करावे में डेरात नइखन । शहर में दिन भर छेड़छाड़ करेवाला आवारा नवयुवक लोग विवेकानन्द बने की परकीरिया में लागल बा। गरीबी देश से बाहर जाये की फिराक में बिया। त अइसन हाल में एगो जिम्मेदार आदमी के हमेशा देश में रहल बहुत जरूरी बा।

बाबू, तू आजा। अब तोहके केहू कुछ ना बोली। ओ दिन काका तोहके गाँजा पियला खातिर डाँट दिहले आ तहरा दुःख लाग गइल। अब ऊ गँवई आदमी का जानत रहले कि छोट लोग गम गलत करे खातिर छोट नशा करेला आ ग्लैमर वाला बड़ लोग ड्रग्स लेला। देवता लोग सोमरस पान करे बाकी स्वर्ग से कबो ढिमला के नीचे ना गिरल। बाबू बिकास, तू धन्य बाड़S कि कई बेर पी के गिरला के बादो देस के अर्थव्यवस्था के नीचे ना गिरे दिहल। नशा कइल अब फैशन आ गलैमर के निशानी हो गइल बा। घर के लोग ई ना नू जानत रहे कि तू भीतरे भीतर बड़ होखत बाड़S। तू आपन जिगर देश की चिन्ता में धुँआ धुँआ करत रहलS। बिहार में चुनाव नियरा गइल बा, प्रत्याशी लोग सब व्यवस्था करबे करी। हमके मालूम बा कि एक बेर ई चिताहरण पुड़िया जेकरा मुँहे लागी जाव ऊ सब तरह की चिन्ता से मुक्त हो जाला। कुछ दिन पहिलहीं सब चैनल की मुँहे एक बेर लाग गइल आ देखS ना देश कोरोना महामारी, बाढ़, बेरोजगारी, सगरे से चिता मुक्त हो गइल। त बाबू बिकास, चीठ्ठी मिलते जल्दी घरे लवटि आवS। ढेर दिन से लोगबाग राह निहारत बा।

थोर लिखल के ढेर समझिहS।

तहार बड़कू भाई,

गुप्तेसर।

✍ (डॉ अनिल चौबे)

सम्पादक "सिरिजन"

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गीत/गज़ल

हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ

अखबारी झकझोर खबर बा, हमहूँ सोंचीं तुहूँ सोंचऽ।
मानवता के क्षय के डर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

आकुल नयन बेचैन अधर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंच ।
सारा सपना एहर-ओहर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

सुना पंघट गाँव नगर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंच ।
जीवन कतना टेढ़ डगर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

काँच के हमरो-तहरो घर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ
हाथ में दूनू के पत्थर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

सत्ता के बेमोल लड़ाई, उलझल बारें भाई-भाई ।
खतरा सबतर आठो पहर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

मज़हब धर्म में झगड़ा कइसन? मानवता में रगड़ा कइसन।
स्वारथ सब झगड़ा के जड़ बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

अंधा नगरी चौपट राजा, जस भाजी तस बाटे खाजा ।
सच्चाई कहवाँ जौहर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

रोईं कि गीत गाईं

ई दर्द का सुनाईं, ई लोर का देखाईं ।
अरमान के चिता पर, रोईं कि गीत गाईं ।।

हहरत हिया में हमरा, लहरत तूफान बाटे ।
जिनगी के नाव कवना, अब घाट पर लगाईं ।।

कोइल के कूक सुन के, कुहकत बा हमरो काया ।
सब हीत-मीत जाके, होने हँसी उड़ाई ।।

बाटे जे पास हमरा, किस्मत के अपना बखरा ।
ई आग अउर कतना छाती में हम दबाईं ।।

अमृत के बाट में ई, घोरल ह तहरे माहुर ।
पीहीले बन के शंकर, तहरा से का पिआईं?

एह मोह का नगर के, कारिख का कोठरी से ।
चुपचाप बबुआ जौहर नाता छोड़ा के जाईं ।।

जागत बा गाँव

जे चाहीं रउवा छीन लीं, पहुँचा मरोड़ के ।
बाकिर ई आग सुनुगी त जाई ना छोड़ के ।।

संतोषऽ हम करीले दिलासा के बा लकम ।
अँजुरी में अपना आँखऽ के मोती बटोर के ।।

जनता से दूरऽ ताजमहल के कनून बा ।
रउवे बताईं, चोर सहेला अँजोर के ?

कुर्सी के लोभऽ नाच रहल बाटे रोड पर ।
जागत बा गाँव रातऽ में टोला अगोर के ।।

गजरा के बा गमकऽ ना, कजरा कटार बा ।
लिख द गजलऽ करेज के कनखा खँखोर के ।।

जौहर डड़ेर खेतऽ के कचरत बा पान जस ।
का साँचो में बा आँच कहीं हाथ जोड़ के ।।

आह का बोली

चाह बोलत बा आह का बोली।
कतना बोली गुनाह का बोली ?
जीत केकरा से ई रोकाई अब ।
तय भइल बा गवाह का बोली ।।
आज विश्वास उठ रहल बाटे ।
बे पनाही - पनाह का बोली ?
देख के रउवा नू चले के बा ।
राह बोलेला,राह का बोली ।।
तेज-प्रताप ले गइल लालच ।
आज जिनगी चोटाह का बोली।।
बोल अनमोल बाटे जौहर के ।
साँच केहू निठाह का बोली ।।

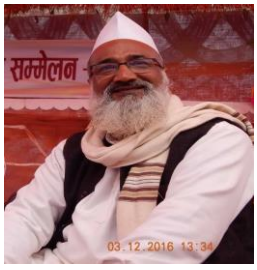

(डॉ जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी के कविता

अंजन जी के मुक्तक

1.
रास्ता का जानत बा कि साधू हवे कि चोर हवे
आन्हर का देखि कि सोनहुली साँझि सुहावन भोर हवे
अंजन रचवले पर लोग चिन्हले बा कि
आँखि ना हवे कटारी के कोर हवे

2.
मिलते नइखे त सधुआइल बाड़े
खाली भरमावे खातिर रंगाइल बाड़े
चीन्हे वाला चिन्हते बाटे कि
ऊहे हउवनि भेष बदलि के आइल बाड़े

3.
हमरा उमेदि बा जे हमके भुलइब ना,
हमके छोड़ी के कहीं जइब ना
रूप आ रतन तहरा ढेर-ढेर मिली
हमरा मन लेखा सच मन कहीं पइब ना

4.
जब अंखिया से अंखिया लड़े लागी
देख निहार का करेजा में गड़े लागी
संजोग से आँखि में आँखि गड़ि गइल
ऊपर से ढेर-ढेर मूड़ी पर पड़े लागी

5.
बचपन भूमिका हवे बुढ़ापा अध्याय ह
बचपन बछरू हवे बुढ़ापा गाय ह
एगो चहकत फुदकत में बीति जाला
एगो दर्द हवे टिस हवे हाय ह

6.
सपनवाँ अंखियन के किनी लिह
दरदिया जिनगी के छीनी लिह
जब आँसू के मोती छिटाये लागे
त हाथ बढ़ा-बढ़ा के बिनि लिह।

7.
ढेर दिन से रोवत आइल बानी
लोरि के बिया अन्हारे में बोवत आइल बानी
जेतना जेतना ईटा-ढेला-पहाड़ गिरल,
सगरो के सहेजि के चुपे-चुपे टोवत आइल बानी

अंगनवा में भोर

चंदन के बगिया
चंदन के बगिया रे महँ-महँ महँकेला,
बनवाँ में नाचेला मोर
रे गुइयाँ, आइल अंगनवा में भोर।

झांके झरोखवा से झिलमिल किरिनियाँ,
कनखी चलावेले नेइ-नेइ कोइनियाँ
चढ़ली जवनियाँ रे पागल मन बहकेला
भागे सरेहवा का ओर
रे गुइयाँ, आइल अंगनवा में भोर।

रतिया के साँवरी सुरतिया लजइली
दियरी के बतिया जुवा के बुढइली
चमकेला पगियारे घर-घर चमकेला
पसरेला रहि-रहि अंजोर
रे गुइयाँ, आइल अंगनवा में भोर।

जागि गइल घरवा दुवरवा बथनियाँ
खेतवा के खतवा पढ़ेले खरिहनियाँ
पिया नवरंगिया रे सवतिन संग सहकेला
विरहा मचावेला शोर
रे गुइयाँ, आइल अंगनवा में भोर।

पर्वत से पानी के संदेश लावे
बदरा पवनवाँ से पानी पेठावे
मोती जस बुनियाँ ले कले-कले उतरेला
ले ली धरतिया बिटोर
रे गुइयाँ, आइल अंगनवा में भोर।

✍ राधामोहन चौबे "अंजन"

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता

जवना कुक्कुर के नाँव अधिक जनता ओह घरी बतावेले ।
ओही कुक्कुर का गटई में सींकरि सरकार लगावेले ॥1॥

वेतन भत्ता से जकड़ि जकड़ि भेजेले सबके रजधानीं
पाके सगरे सुनहाव इहाँ तब राज करेले मनमानीं ॥2॥

ओहि में से एको मूवेला तब और नया बीनल जाला ।
कवरा खातिर हमनीं का आगे के थरिया छीनल जाला ॥3॥

अइसनका बन्हुवा कुकुरन के संख्या ना उहाँ दु चार हवे ।
सगरे भारत मिल के टोटल किछुवे कम चार हजार हवे ॥4॥

पहिले जनपद से एक एक अब तहसीले से चार चार ।
किछुवे दिन में हर गावें से ले जाए खातिर लगी कार ॥5॥

हमरा ना तनिको बा बुझात कवरा एतना कब तक आँटी ।
आ सब कुक्कुर काशी जइहें तब के इहवाँ पत्तल चाटी ॥6॥

एक मित्र मिटा दिहले शंका जे कुकुरे रोज चरावेले ।
कुकुरन के कवरा ना देले कुकुरन से कवरा पावेले ॥7॥

कवरा पत्तल किछऊ न मिले ई तब्बो ना अगुताले सन ।
एकनीं के अइसन जाति हवे कि सुखलो हाड़ चबाले सन॥8॥

खटमल अइसन कुकरो कुछ दिन तक सूखि पाखि के जियेले।
कहियो न कहियो जब दिन लौटेला तब लोहू पीयेले ॥9॥

कुक्कुर सगरे हमरे हउवन धन लागत सजी हमार हवे ।
कवरा दे दे फुसिलावे के बीचे मालिक सरकार हवे ॥10॥

दुनियाँ के औरी कई देश अब इहे चालि अपनावता ।
दुनियाँ भर के सब राजनीति बस एतने में चलि आवता॥11॥

बोलतू कुकुरन के बान्हि-2 कतहीं पर एक जगह कर दीं ।
कुरुसी दे दीं लमहर-लमहर कवरा मजगर सयगर दे दीं॥12॥

परजा का केतना सुख दुख बा केहु जोखले बा कि नपले बा।
एकनी के मुँहवा बंद रही त प्रजातंत्र त सफले बा ॥13॥

एह युग में राज चलावे के सबसे बढ़ियाँ ई मंत्र हवे ।
ईहे नू हवे समाजवाद ईहे नू परजातंत्र हवे ॥14॥

सरकारी कवरा जवन कुकुर जवना दिन से ना पावेला ।
ओही दिन से ऊ जोरदार जनता में अलख जगावेला ॥15॥

एह कुकुरन के इहे कसौटी । गोसयाँ भुइयाँ कुकुर पुजौटी ।
समय परी तब पोंछी हिलइहें । काम निकलला पर गुरनइहें॥16॥

मालिक सदा पाछे चलेला ई कुकुर आगे चलें ।
मालिक मुवो खइला बिना पर ई सदा सुख से पलें ॥17॥

सब घाट के पानी पिये के बानि बहुत पुरान बा ।
सबके खिया दीहल हवा इनका बहुत आसान बा ॥18॥

काम सबके ना करें पर 'ना' केहू के ना करें ।
जवने कहीं इनसे सदा पंद्रह घरी तक हाँ करें ॥19॥

✍स्व.पं. धरीक्षण मिश्र

तंग इनायतपुरी जी के भोजपुरी ग़ज़ल

अपना मूड़ी प ई इल्जाम लियाइल कइसे ?
दिल त पागल ह,मगर ओठ सियाइल कइसे ?

ई बहस नइखे कि मेला में बिकाइल कइसे ?
हर खुशी बेंच के ई दर्द किनाइल कइसे ?

चोर के दाढ़ी में तिनका के कहाउत बूझीं ,
सब से अनजान बा त ऊहे चिहाइल कइसे ?

सबसे बड़का ह इ अपराध गरीबी ना तऽ ,
कुछुओ भइला प ओकर नाम धराइल कइसे ?

व्यंग के बान चलावत केहू पूछल हमसे ,
ढेर दिन बाद एने राह भुलाइल कइसे ?

ज़िन्दगी हार गइल , दिल ना बतवलस कबहूँ ,
जान के , बूझ के , मेला में हेराइल कइसे ?

तंग साहेब के फ़कीरी से अमीरी पुछलस ,
दिल के सउदा भला महँगी में किनाइल कइसे ?

✍ **तंग इनायतपुरी**

ना आइल बा ना कबहूँ काम आई, तु आपन काम देखऽ
जवन जीती उहे आपन बनाई,तु आपन काम देखऽ ॥

इ का हिन्दू , मुसलमान आ इसाई, तु आपन काम देखऽ
ह सब के सब सियासत के लड़ाई, तु आपन काम देखऽ ॥

केहू के छत पिटाई त पिटाई, तु आपन काम देखऽ
कहाँ से झोपड़ी ला खर कटाई, तु आपन काम देखऽ ॥

इ हिनका और हुनका के बझाई, तु आपन काम देखऽ
सहतरो पाप पर गंगा नहाई, तु आपन काम देखऽ ॥

सियासत हऽ, उ छूटी भा धराई, तु आपन काम देखऽ
अदालत में गइल बा सीबीआई, तु आपन काम देखऽ ॥

केहू से का केहू रिश्ता निभाई, तु आपन काम देखऽ
कि निमना में हभे हऽ भाई -भाई, तु आपन काम देखऽ ॥

ए बड़का लोग में छोटका पेराई, तु आपन काम देखऽ
गहूँ के साथे घूनो का पिसाई, तु आपन काम देखऽ ॥

इ छोड़ऽ खा रहल बा के मलाई, तु आपन काम देखऽ
कहाँ से आज फेर सतुआ सनाई, तु आपन काम देखऽ ॥

फकीरी में इ का तोशक रजाई, तु आपन काम देखऽ
रहो बस तंग साहेब के चटाई, तु आपन काम देखऽ ॥

✍ **तंग इनायतपुरी**
सिवान।

दुनिया रंग-रंगीली

रंग के मूल संस्कृत के √रञ्ज ह- **'रञ्ज रागे'।** भ्वादिगण आ दैवादिगण दुन्नो में होखला का बादो एन्हनि के सरूप एके मानल जाला। अब चाहे हरिना के शिकार (रजयति मृगान्। न-लोप) होखे चाहे चिरईं के खुश (रञ्जयति पक्षिण:) करे के बात, बेगर √रञ्ज के बात ना बनी। ई रागर्थक धातु ह। राग (**रञ्जभावे घञ्।** न-लोप) में बरन, लाली, प्रीति, भाव, संवेग, हरख, आनंद, रोस, गीत-राग सबके अर्थबोध बा। जाहिर बा कि एकर अरथ के छाँहि रंग प पड़बे करी। रंग में राँगा, नाचरंग, रागरंग, रंगमंच, रंग पदारथ, खइर बरन, देहरंग, जुवपन, शोभा, प्रभाव, क्रीड़ा-कौतुक, उमंग, आनंद, दशा, प्रीति, रीति, खुशी वगैरह, सबके सब रंगाइल बाड़े।

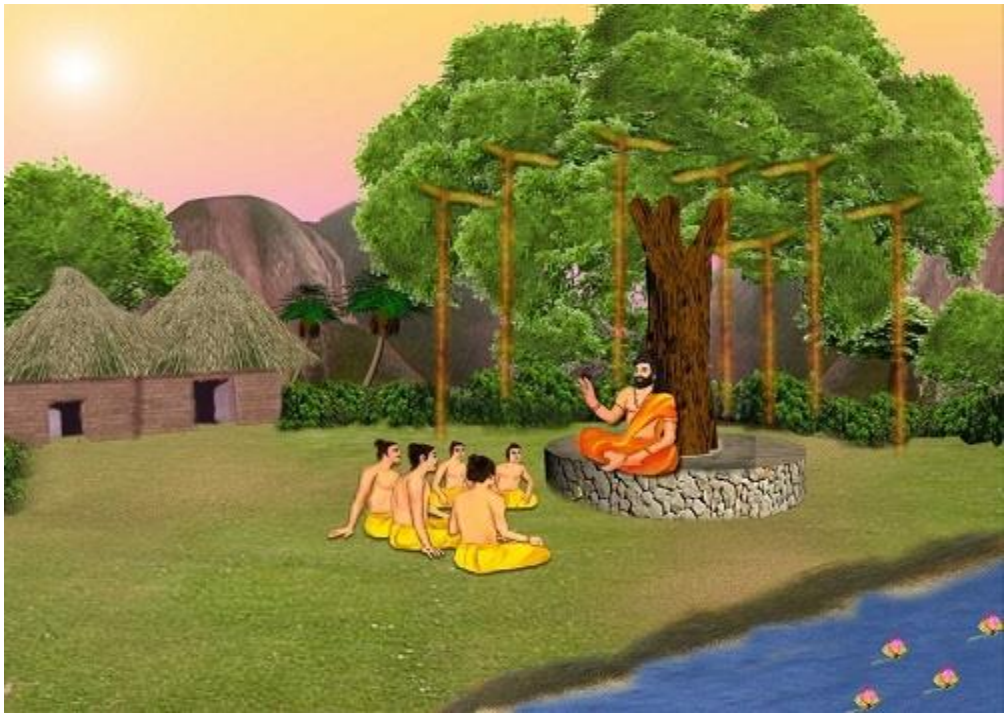

अइसन जनाता जे शुरुआती दौर में √रञ्ज में रक्त **(रञ्ज करणे क्त:)** वर्ण मुख होखी। रोस, लाज, अनुरक्ति, उत्तेजन, उन्माद, भाव-कुभाव सबमें चेहरा के भभूका भइल, आँखिन के रतनार होखल, सुबह-साँझ के रक्तिमता, रतनजोत के जरि से लेके परास के फुनगी तक, घुँघची के बीआ से लेके बिम्बा तक, गेरुई माटी से लेके पहाड़ के शिखर ले पसरल रकत-किरिन तक, समुंदर के सतह प पँवरत लोहित बरन से आसमान में उतर आइल रामधनु के सम्मोहन तक, देह से बहत लहू के तुचा प पसराव तक सगरे एही वर्ण के राज बा। बाद में समान गुन-धरम-असर से बाकी बरन का घुसपइस 'रंग' का भीतर भ गइल। 'रक्त' में रंगीन वस्तु, गहिर लाल रंग, अनुरक्त, प्रिय, सुहावना आदि के अर्थबोध बा। लाह आ गुंजा के संज्ञा **रक्ता** ह, रुधिर, तामा, केसर, सेनुर **रक्तम्** हवें, लाल आँखि वाला **रक्ताक्ष**, मूँगा **रक्तकंदल** भा **रक्तांग**, लाल वस्त्र **रक्ताम्बर**, खाल **रक्ताधार**, हृदय, तिल्ली आ जिगर र**क्ताशय**, लाल कमल **रक्तोपल**, मधुर कंठी कोइलर **रक्तकंठ**, सेनुर र**क्तचूर्ण**, सिंघ **रक्तजीव**, सुग्गा **रक्ततुंड,** कबूतर **रक्तदृश** ह। रजक, रजत, रजनी, रजस्, रजसानु, रजस्वल, रंज, रंजक, रंजन, रंजनी, राँगा, राग आदि शब्दनो के सोत ई 'रञ्ज' धातु ह।

सबसे पुरातन वैदिको साहित्य में रंग के प्रभाव आ छटा सगरी नजर आवेला। असल में अंधकार के गुफा से बहरी निकस आइल जागतिक प्रपंच एगो बरन-संजाल के सेवाय आउ कुछ ना ह। प्रकृति के हर उपादान आ एन्हनि के पीछे के मातृशक्ति के एगो अटूट रंग-जोजना से जुड़ाव बा। धवर उषा- **उद श्रिय उषस्**- अरुण बरन घोड़न- **अरुण युग्मिरश्वै-** के विशाल चंद्ररथ प सवार होके आवेली। ऊ आपन बिछंछल जोत से अन्हार के शक्ति के नाश क देवेली। उषा आ रात्रि के चरित बिचित्तर ह-

"सन्नादिवं परिभूमा विरूपे पुनर्भवा युवति स्वैभिरैवै:

कृष्णेभिरक्तोषा रूषदिर्भवपुभिरा चरतो अन्यान्या।" (ऋक् १.६२.८)

[अलग-अलग रूप के दूगो जुवति, उषा आ रात्रि आपन गति से आकाश आ धरती के चारो ओर सनातन काल से चलत बाड़ी। **करिया** रात्रि आ **दिव्य ललछौहीं** उषा कबो संगे ना चलस, इनकर राह अलगे-अलगे ह।]

छन-बिसेखी के भेद से भोर आ साँझ के रंग-रूप **साँवर, पीयर** आ **लाल** बरनवाली- **श्यावीमरुषीमजुप्रश्चित्र-मुछन्तीमुषस्-** बिछंछल उषा कहल गइल बा। **कृष्णवर्ण** रात आ **शुक्लवर्ण** दिन आपन रंग से संसार के रंगत रहेले-

"अहश्च कृष्णमहरर्जुन च वि वर्तते रजसी वेद्याभि:।

वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्जोतिषाग्निस्तमांसि।।

सविता घना अन्हेरा राह से घूमत देवता आ मानुस के उत्तिम काज में नियोजित करेलें। ऊ सब लोक के प्रकाशित करत **सोनहुला** रथ से आवेलें-

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयत्रमृतं मर्त्यं च।

हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।" (ऋक् १.३५.२)

सूरज **हिरण्यवर्ण** (ऋक् २३५.१०), **हिरण्यपाणि** (सोनबरनी हाथवाला) हवें। उनकर घोड़ा **शुभ्र** (सफेद), **शितिपाद** (ऊजर पैर) आ **हिरण्याक्ष** (काउँस) हवें (ऋक् १.३५.११)। अनते सूर्य के घोड़ा के **शुन्ध्युव:** (सप्तवर्णी) कहल गइल बा। सूर्या के बस्त्र **नीललोहित** ह। उनकर रथशिल्प में **टेसू** आ **सेमर** से बनल गाढ़ रंग के प्रयोग बा (ऋक् १०.८५.२०)।

एक ऋचा में **हरित** सोमपान से इन्द्र के मोंछ के **हरिताभ** हो जाए के रोचक बरनन बा, ताज्जुब कि उनकर दूनो घोड़ो **हरिताभ** (सबुज) बाड़ें-

"हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी।"

[हे इनरदेव, हरियर सोम पीये से राउर मोंछ हरियरछहूँ भ गइल बा आ दूनो घोड़ो हरियर बाड़े।] अनते इन्द्र के घोड़न के **शोणाघृष्णुनृवाहसा** (रक्तवर्णी संघर्षशील आ गतिवान) कहल गइल बा (ऋक् १.६.२)। इन्द्र के बज्जर **हिरण्यं सहस्रमृष्टि** (सोनहुला सौ धार के) ह जेकरा के त्वष्टा बना के देले रहन।

अरुणिम आकाश में रहेवाला सोम के कहईं **हरिताभ** त कहईं **बभ्रु** बरन कहल गइल बा।

अग्नि **हिरण्यकेश** (भूअर केशवाला) हवें (ऋक् १.७९.१)। ऊ **धूमकेतु** हवें यानि उनकर रथ के धजा के रंग धूँआ अस बा (ऋक् १.२७.११)।

रूद्र **श्विती** (गोर, ऋक् २.३३.८) भा **हिरण्यै** (सोनकांति, २.३३.९) सरूप रंग के हवें। ऊ सूर्य के समान साँवरी रात के आपन **उज्जर** सरूप से दमन करेले (**कृष्णां एनीम् वर्पसा अभिभूत**) आ श्यामा रात्रि के दूर क के **शुक्ला** उषा के प्राप्ति करावेलें (**असिन्किम् अपाजन् रुशतीम् एति**) । ऋक् १०.३.१।

ई कुछ परतुक हवे ई बतावे बदे कि वैदिक साहित्य में रंग के जथारथ बोध आ तेकर चाह तत्कालीन मानुस का मन में कहीं गहिरोर पइसल बा। एह चाहना के हई रूप अचरज पैदा करेवाला बा जहाँ संतान, धन-संपत्ति भा भोजन तक में रंग-प्रभाव आपन तीव्र रूप में मौजूद बा। खरा सोना के गुण, सुभाव आ बरन के संतान के कामना के बानगी देखल जाव-

"तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीहिरण्यवर्णा: परि यन्ति यह्वी:।" ऋक् २.३५.९।

इहाँ तक कि भोजनो ओज बढ़ावे वाला, पौष्टिक **हिरण्यवर्ण घृतमन्नमस्य** (अग्निदीप्त घिव के वर्ण आस्वाद वाला होखे, अइसन टिसुना मन में पलत बा। ऋक् २.३५. ११।

पुराणो काल में सब देवशक्ति के कवहों-ना-कवनों रंग से गहिर संबंध बा। लक्ष्मी **सोनकांति** (हिरण्यवर्णा), शिवा **गौरी**, सरस्वती **चंद्रकांति** (इंदोर्विभ्रति शुभ्रकान्ति), महाकाली **नीलम** बरन (नीलाश्मद्युति), दुर्गा **पद्मा**, विष्णु नील, शिव गौर, कृष्ण श्याम, राम साँवर, हनुमत लाल, एही तरे सब देवपुरुष के आपन रंग ह। उनकर प्रिय वस्त्र आदि के तय रंग ह। गरह-नछतरो के रंग ह, सूर्य अग्नि, चन्द्रमा शवेत, मंगल लाल, बुध हरा, गुरु पीला, शुक्र सफेद, शनि नीला, राहू काला, केतु चित्तला हवें।

संस्कृत भा एकरा से बिगसल आन उत्तर भारतीय आर्य भाषा में रंग के नाँव अधिकतर प्रकृति के विभिन्न

अवस्था दिन-रात, सुबह-साँझ, आँधी-बरखा, धूप आदि आ ओमें मौजूद बस्तु के रंग से सरिसता के आधार प बा। **अग्निवर्ण** आग के रंग अस चमकीला लाल रंग ह। अग्नि के सात जिह्वा मानल गइल बा। सबके रंग में भिन्नता बा-

"**कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता।**

सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वा: सप्त विभावसौ।।"

अरुण भोर के सुरुज के रंग, कुछ-कुछ लाल, भूअर, पिंगल, गुलाबी, सोनबरन, केसर बरन, के संज्ञा ह। **कौसुम्भी**, **रोहित आ लोहित** केसर, अग्निशिखा भा कुंकुम के रंग हवें । **काषाय, गैरिक** गेर सरिस रंग हवें। **पाटल** एही नाम के बिरिछ जस गुलाबी लाल रंग ह। **महारजन** केसर अस, **प्रवाल** मूँगा अस लाल ह त **रक्तवर्ण, रक्तिम, शोण, शोणित** खून जइसन लाल रंग हवें। **पिच्छल** दाड़िम याकि अनार अस लाल रंग ह। **श्वेतरक्त** गुलाबी रंग ह।

काल, कालिमन्, कृष्ण काला रंग के बोधक हवें। एकर रंगछाँहिन में **श्याम** [श्यै (जमल) +मक्] सूखल, कुम्हलाइल, झाँवर त **श्यामल** [श्याम+लच्, ल+क वा] काला, गाढ़ नील भा साँवर के अरथ बोध करावेलें। **कर्बुर** भसम, **धूम्र** आ **मेचक** धूँआ अस, **मेघवर्ण** बदरिआह, **कपोतकंठी** सिलेटी करिया रंग हवें।

उज्ज्वल, धवल, शुक्ल, शुक्लक, शुचि, शुभ, शुभ्र, श्वेत [श्यै+इतच्], **श्वेत** [श्वित्+घञ्, अच् वा] सफेद रंग के विविध छाँह हवें। **मक्खनी, मक्खनियाँ** भा **माखनी** मक्खन आ **मोतिया** मोती लेखा बारीक पियरछहूँ सफेद हवें।

कपिञ्जल, पीत, हरिद्राभ, सुवर्ण, पियर रंग के बोधक हवें। **कपिश** भूअर, सुनहरा, **कपिल** भूअर, **धूसर** भूअर धुँआइल, मटमइल, **नारङ्ग** संतरा के रंग, **श्याव** [श्यै+वत्] गहिरा भूरा, काला आ **वभ्रु** भूअर रंग हवें।

आकाशवर्ण, नील, लाक्षा, नीललोहित नीला रंग आ एकर छाया ह। **शबल** [शप्+अल्, बश्च।] धब्बेदार, चितकाबर त **रोचना** उज्जर आकाश भा गोरोचन (पियर) रंग के अरथ में प्रयोग होलें।

दुनिया में जतिने पदारथ ततिने रंग बाड़े, रंग के रहले रंग, रंग के ना रहले रंग। उत्तर भारतीय आर्य भाषा समूह के सब भाषा, बिभाषा भा बोली में शब्द भंडार के सोत एके रहला का ओजह से मामूली धुनि बदलाव का संगे सबमें आन शब्दन का तरे रंग बोधक शब्दनो में काफी समानता नजर आवेला। भोजपुरी रंगीली संस्कृति ह त एकरा में सुभावतन जिनिगी के बहुरंगी छाया के दरसन होखल लाजिमी बा। कवनों भाषा में बाकी गुन के अलावे ओकर एगो तागत एके बस्तु बदे समार्थी शब्दन के ऊ बहुलता ह जवना से ओह बस्तु के अलग-अलग स्थिति, रूपभेद आदि के सटीक परगटन होत होखे। एह नजरिए भोजपुरी के केहू शानी नइखे, रंगन के नाँव संदर्भ में एह तथ्य के जादे सोपट ढंग से देखल जा सकेला।

वैज्ञानिक लोगन के अनुसार करिया, ऊजर, लाल, नील आ पीअर इहे पाँच मूल रंग हवे, ओहू में करिया आ ऊजर अउवल में कवनों रंगे ना हवे, ई महज प्रकाश के मौजूदगी आ अभाव के स्थिति ह जेकरा ओजह से इन्ह रंगन के परतीति होखेला।

करिया सामान्य रूप से काला (हिं.) रंग के बोधक ह। एह शब्द से बनल **करियई** भा **कारा** ओरमाइल घन बादर के कालिमा ह, **करइल, करका** करिया माटी भा केवाल माटी अथवा ओकर क्षेत्र ह, **करखी** मुँह में लगावल जाला बाकी हरमेसे ना, ओह स्थिति में जब केहू के करम ओकरा के मुँह देखावे लाएक ना छोड़े तब। **करँगा** करिया दाना के धान के प्रजाति ह, **करियठ/करियठी, करियवा, करलूठा** एह बरन के मानुस-मानुसी के रंग बदे प्रयुक्त होला। **अंजनी, कजरारा, कजला, काला, सियाह** भा **स्याह,** करिया रंग बदे प्रयुक्त आन शब्द हवें। **करिखाह** के सरिसता कारिख से बा, कादो जगह बदलले एकर अरथो बदल जाला- **'ठाँव जान काजर, कुठाँव जान कारिख'। साँवर** के मूल संस्कृत के श्यामल ह जवन तनिक हलुका करिया रंग के मानुस भा आन जीव बदे जादे बेवहार में आवेला। **झाँवर** करिया पथल भा पाक के करिया पड़ल ईंटा के रंग ह, तेज घामो में झुलस के चेहरा झाँवर हो जाला। **कंजई** कंजा के फली के रंग ह, कुछ नीलापन लिहले करिया, **कौआपंखी** काग के पाँख तुल्य, **आबनूसी** आबनूस की लकड़ी अस, लोहई हलुका करिया। **सलेटी/सिलेटी** एही नाँव के पथल अस आ **सुरमई** सुरमा लेखा करिया रंग के कहल जाला। **धूमिल** मलीन रंग

याकि मइलपन के अर्थबोधक शब्द ह। **धुँअठल, धुँआइल, धुँआसा, धुँआह, धुँधला** में धूआँ भा धुंध के छाया होला।

उज्जर भा **ऊजर** संस्कृत के **उज्ज्वल** के तद्भव रूप ह, अरबी मूल के **सफेद** शब्द एही रंग के बोधक शब्द ह। उज्जर के छाँहिवाला रंगन में **कपासी, कपूरी, दूधिया** क्रमवार कपास, कपूर आ दूध जइसन सफेदी के अर्थबोध करावेलें। **गोर** संस्कृत के गौर के तद्भव ह जवन मुख्य तौर प उज्जर रंग के बोधक ह, एकर प्रयोग जादेतर आदिमी के चमड़ी के रंग बदे होला। गोरापन त्वचा के सुघराई के आदर्श मानल जाला। पौराणिक शिव के **'कर्पूर गौरं'** कहल गइल बा, शिवानी के **गौरी** नाँव उनकर गोराइए का ओजह से पड़ल। **धवर, धावर, धौर, धौला,** शब्द के मूल संस्कृत के धवल ह जवन अधिकतर गाय, बैल के त्वचा के सफेदी के अर्थ में आ एकरा अतिरिक्त चाननी, पहाड़ के बर्फीली चोटी, दिन के उजाला वगैरह बदे प्रयुक्त होला। **रुपहला** रूपा (रौप्=चांदी) जइसन सफेदीवाला रंग ह। श्वेत के **उजला, शरबती, संगमर्मरी,** हल्का पीला (क्रिमी) **मोतिया, मक्खनी, कपूरी,** हल्का भूरा **बादामी**, हल्का गुलाबी **प्याजी,** हल्का करिया **स्याह, सिलेटी, खंजनी** अनेक रंगछाया ह।

आम रूप से प्रकृति में **लाल** रंग के मौजूदगी व्यापक बा एसे एकर हर शेड बदे बेवहार के शब्द प्रयोग बेसी बाड़न। गुन सुभाव आ प्रभाव के नजरिए ई उछाह, नवजीवन, सफलता आदि के प्रतीक ह। ई सकारात्मकता में प्रगति आ नकारात्मकता में किरोध-बिरोध, दुस्साहस दे जाला। एकर जादुई असर बहरी-भितरी कहाँ नइखे? तबे त कबीर बाबा एह के प्रसार आ असर प भउँचक भइल बाड़े-

"लाली मोरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन हम गइन, हम भी हुइगा लाल।।"

लाल रंग के एगो रूप **अरुनाई** ह, ई भोर किरिन अस सुर्ख लाल, रक्तवर्णी भा सिंदूरी आभा वाली ललाई ह। **किरमिजी** मटमैला लाल रंग ह, **कंदई, खुनिया, रकतार, रत, सुर्ख, आ सुरखाबी** खून जइसन लाल रंग हवें, **चंपई** गहरा फिरोजी रंग ह जवना में नीली झलक होखे, **जोगिया** लाल मटमैला रंग ह। **गुलाबी** गुलाब, **गेरुआ** गेर, तनी जादे लाल **मलयागिरी**, **तांबई** भा **तामई** तामा, **बादामी** बादाम, **रोहित/लोहित** भा **लोहई** लोहपथल, **नारंगी** भा **संतरई** नारंगी, **सेबिया** सेब अस ललछौहीं रंग के बोधक शब्द हवें। **करेजई** भा **चुनौटिया** कसीस, मजीठ, हर्रे आदि के योग से बनल लाल रंग के एगो प्रकार ह जवन हृदय भा यकृत के रंग से मेल खात रंग ह। मजीठ पहाड़ में होखेवाली एगो लत्तर ह जवना के जड़ आ डंठल से एक प्रकार के लाल रंग बनेला जवना के **मंजिटा, मजीठा** भा **मजीठी** कहल जाला। **कुसुमी/कुसुंभी/कुसुम्हीं** कुछ पीलापन लिहले लाल रंग ह, **सिंदूरी** सेनुर अस हलुके संतरई आ **ईंगूरी** एकरा ले जादे नारंगी ह, **भगवा** सूर्योदय या सूर्यास्त के रंग हवें। **काकरेजी/कोकची** लाल आ गहिरा करिया रंग के मेल आ **किसमिसी** मधिम सियाह लाल, **कनेरिया** कुछ करछहूँ लाल रंग ह।

नीला रंग के मौजूदगी ब्रह्मांड में सबसे जादे बा। ई आतम-तत्त आ जल-तत्त से संबंधित रंग ह। एकरा बदे अंगरेजी के ब्लू (blue) शब्द अथवा तनिक उच्चारण भिन्नता से **'बूलू'** भोजपुरी में आम प्रचलन में आ गइल बा। **समुंदरी** बहुते हलुक समंदरजल अस, **आसमानी** हल्का नीला आकाश जइसन, **जमुनिया** भा **जामुनी** जामुन के फर के रंग के, **नीलकंठी** लीलकंठ के पाँख, **फिरोजी** फिरोजा नाँव के खनिज के नीलहरित रंग, **मोरपंखी** मोर के पाँख, **बैगनी** भा **भंटई** बैंगन के फर के रंग सरिस नीला रंग के बोधक शब्द हवें। **कोकई** (तु. कोक) कौड़ी सरिस रंच मात्र पिअरछहूँ आभा लिहले गुलाबी आ नीला रंग के मिश्रित रूप ह। नील रंग का बारे में 'पंचतंत्र' (१.२८३) में एगो रोचक बात आइल बा-

वज्रलेपस्य मूर्खस्य नारीणां कर्कटस्य च।
एको प्रहस्तु मीनानां नीलामद्यपयोर्यथा।।

[बज्जरलेव (भीति भा मूरत के मजगूत आ रंग पक्का करे बदे प्रयुक्त एगो मसाला), मूरुख, स्त्री, कोंकड़ा मछरी आ नील रंग कबो आपन रंग ना छोड़स।]

भारतीय संस्कृति में **पीला** रंग के खास अहमियत बा। ई मांगलिकता, बैराग आ संस्कृति से संबंधित ह। एकरा बदे भोजपुरी में प्रयुक्त **पिअर** भा **पीयर** शब्द संस्कृत के 'पीत' (पा+क्त) से व्युत्पन्न ह। धात्वर्थ के अनुसार एकरा में परिव्याप्ति आ तिरपिति के अर्थबोध बा। **पियरी** एह रंग में रंगल धोती/साड़ी, पीलापन आ

पीला रंग के अर्थ में ह। **पियरछौंहा, पियराई, पियराह** पीलापन के अभिव्यक्त करेलें। **कनइली** कनैल के फूल, **केसरिया** केसर, **हरदिया** हरदी, **सरसई** सरिसो के फूल, **कुंदन** भा **सोनहुला** सोना, **गंधकी** गंधक अस हलका पिअर रंग हवें। **जर्दी** पीला होखे के अवस्था, भाव भा पीताभा ह, ई अंडा के भीतर के लुगदी अस पीला रंग के बोधक ह। **बसंती/बासंती** आमतौर प बसंत में फूलेवाला सरिसो के फूल अस पिअर रंग के बाचक ह। **रामरजी** चटक पिअर रंग ह जवन एक तरे के माटी, जवना के तिलक के रूप में प्रयोग होला, के रंग ह।

मिश्रित रंग के कोटि में **हरियर** (हिं. हरा) रंग प्रमुख ह जवन नीला आ पिअर रंग संजोग से बनेला। बिहारी के एगो दोहा में एह रंगमिश्रण के बड़ा रोचक प्रयोग मिलेला-

"मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं पड़े, श्याम हरित दुति होय।।"

[निपुन राधा हमार भव बाधा के हर लेसि जिनकर छाँहि मात्र पड़े से कृष्ण हरियर हो जालें।] इहाँ ध्यान देवे के बात बा कि राधा के रंग गोर रकतार आ कृष्ण के रंग नीललोहित ह त उनका प हरियरी काहे ना छाई?

धरती प अधिकतर पादप समूह उनका मे मौजूद पर्णहरित (Chlorophyll) के कारण हरियरछहूँ दीखेलें। **काई** [कावार (सं)] सीलन वाला पथल, खलेटी, जल सतह आदि प जमे वाली बारीक रेशा जइसन घास अस गहिरा, **काही** कालापन लिहले सूखल घास जइसन, **धानी** धान अस गहिर हरियर रंग हवें त **अंगूरी** तेकरा बनिस्बत कुछ हलुक, अंगूर नियन। **सबुज/सब्ज** खुलता ताजा आ **सुआपंखी** भा **सुगापंखी** चटक हरियर रंग हवें। **मूँगिया** कुछ सियाह, **सिवारी** तेकरा ले जादे सियाह आ हलुके नीलापन के साथ हरियर **फिरोजी** ह।

धूसर रंग के दायरा में धूर के रंग, **भूअर** (भूरा), **धूमैल, मटमइल** किसिम के रंग आवेले। **मटियाला, मटियाह, खाकी, कपोती** (कबूतर जइसन) एन्हनि बदे कुछ प्रयुक्त शब्द हवें। **गर्दखोर** ऊ रंग हवें जवन गर्द-माटी से हाली खराब ना होखस। **छींट** कवनो सतह, कपड़ा आदि प पानी के छींटा से पड़ल धब्बा अस अनेक रंग, **कबरा, चितकबरा/चितकाबर, चितला, चित्तीदार** सफेद रंग प करिया, लाल याकि पिअर धब्बेदार, **धारीदार** कई रंग के पट्टी आ **बघछल** बाघ के रोआँ जइसह रंग हवें। **कत्थई, खइर, खैरा** खदिर के छाल से बनल कत्था जइसन रंग हवें। रंग के संख्या के अनुसार **कोरा, एकरंगा, दुरंगा, तिरंगा, पँचरंग, सतरंगी, बहुरंगा** होलें।

मानुस देह के रंग **गोर, साँवर, चंपई, गेहुँई, तामई, पक्का पानी, पकिया, अंजनाभ, पियराह, करियठ, करिया भुचेंग** होला। आँख के रंग **कंजड़** (एही नाँव के एगो पंछी अस हरियर)**, काँउस, रतनारी, बिल्लौरी** (स्फटिक अस), **तोताचश्मी, चमकीली, काली, कजरारी, नीली, पियराह** (पीलिया आदि बीमारी के दशा में), **लाल** (गुस्सा, उत्तेजना, रोग में) ह आ खुंखार पशु के दहकीली। केश के रंग **करिया, भूअर, कपिश, पिंगल, सफेद**, नृजाति आ वयस् भेद से **गंगाजमुनी, धवल, सुनहला**, **लाल** होखेला।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति में 'अश्व' के बहुत महत्व दिहल गइल बा। वेद में इन्द्र के 'हर्यश्व' कहल गइल बा। उनुकर ई नाँव घोड़न के कारण ह। **'हरि'** कुम्मैत भा लाखी घोड़ा ह जवह हलुके भुअराह भा पिअरछहूँ लाल होला (ऋक् १.३)। सौरमंडल बदे घोड़ा के रूपक देखे जोग बा-

"कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रह्न ऋजु उत शोणो यशस्वान (ऋक्१०.२०.९)।"

[जोतेलें भूअर-लाल घोड़ा जे एह अहथिर लोकन के इरिद-गिरिद घुमेलें, आसमान में तारा चमकत बाड़े।]

पुरातन में अश्व के सरबस अध्ययन बदे 'अश्वशास्त्र' के अलगा से बिस्तार भइल। इहे कारन बा कि घोड़ा के रंग के बारीक-से-बारीक भेद के बाखूबी पहिचानल गइल बा। 'अभिधानचिंतामणि' में हेमचंद्र घोड़न के कइ रंग के जिकिर कइले बाड़ें, ई सब संस्कृत/प्राकृत भाषा में प्रयुक्त होत रहन। **कर्क, कोकाह** सफेद, **खोड़्गाह** पिअरछहूँ सफेद (अ.चि. ४/३०३), **सेराह** अमृत भा दूधिया रंग, **हरिय:** पीला, **खुड़्गाह** करिया, **क्रियाह** लाल (अ.चि. ४/३०४), **नीलक** अत्यंत नीला, **श्रीयूह** कपिल, **वोल्लाह** श्रीयूह के पोंछ आ अयाल पांडू (अ.चि. ४/३०५), **उराह** थोरिका पिअर आ करिया जाँघ, **सुरूहक** गदहरंगा, **वोरुखान** पाटल वर्ण (अ.चि. ४/३०६), कुलाह पिअर बरन ठेहुना करिया, **उकनाह**

पिअर लाल या करिया लाल (अ.चि.४/३०७), **आकनद** सुर्ख कमल, **हरिक:, हालक:** पिअर आ लाल रंग के मेल, **पङ्गुल:** सफेद काँच सरिस आ **हलाह** चितकाबर (अ. चि. ४/३०८) रंग के घोड़ा हवें। महासामन्त जयदत्तकृत 'अश्ववैद्यकम्' में घोड़न के बेसुमार रंगभेद के उल्लेख बा जवना में से प्रमुख रंगभेद के नीचे के श्लोकन में देखल जा सकेला-

"श्वेत **कोकाह** इत्युक्त: कृष्ण: **खड्गाह** उच्यते।
पीतको **हरित:** प्रोक्त: कषायो **रक्तक:** स्मृत:।।
पक्वतालनिभो वाजी **कयाह:** परिकीर्तित:।
पीयूषवर्ण: **सेराहो** गर्दभाभ: **सुरूहक:**।।
नीलो **नीलक** एवाश्व **स्त्रियूह:** कपिल: स्मृत:।
खिलाह: कपिलो वाजी पाण्डुकेशर**बालधि:**।।
हलाहश्चित्रलश्चैव **खड्गाह:** श्वेतपीतक:।
ईषत्पीत: **कुलाह**स्तु यो भवेत् कृष्णजानुक:।।
कृष्णा चास्ये भवे**ल्लेखा** पृष्ठवंशानुगामिनी।
उराह: कृष्णजानुस्तु **मनाक्** पाण्डुस्तु यो भवेत्।।
वेरुहान: स्मृतो वाजी पाटलो य: प्रकीर्तित:।
रक्तपीतकषायोत्थवर्णजो यस्य दृश्यते।।"

(अश्ववैद्यकम्, २.१००-१०५)

भोजपुरी में **अब्लख** (अरबी मूल) सफेद आ लाल रंग के, **चीनियाँ** पूरा देह सुफेद आ लाल-लाल छींटा, **छर्रा** कइ रंग के धारी आ बूना, **कुल्ला** भूअर देह आ ठेहुना से सुम तक करिया टांग, **अर्जट/रजली** एक गोड़ सुफेद आ सारा शरीर दोसर रंग के, **नुकरा** एकरंगा सफेद, **कुमइत** (कुम्मैत) चारो टांग, पीठ, केश आ पोंछ करिया आ शेष भाग लाल काला मिश्रित, **आठगाँठ कुम्मैत** सुम के छोड़ के सारा शरीर स्याह-सुर्ख, **तेलिया कुम्मैत** लाल रंग में बहुत हल्का करिया, सुरंग सुर्ख रंग, **समन्द** बादामी, **अलाय** पीयर देह, **सिरगा** सफेद पोंछ, **संगली** जहाँ-तहाँ पीयर रंग के धारी बाकी देह लाल, **सबुज** नीला रोंआँ के सफेद **करका** सफेद, **बिल्लौरी** जियादह नीला सबुज, **मुश्की** हलुक करिया, **करमुहाँ** करिया मुँह के, **लाखी** मुश्की के देह प तनी जियादा लाली आ **सिराजी** सफेद रंग आ पीयर अयाल के घोड़ा हवें।

अश्व के तरे भारतीय लोक-संस्कृति में गायो के स्थान महत्वपूर्ण बा। कृषि कर्म के सारा दारोमदार गायकुल प रहल ह। एसे गायन्ह के सूक्ष्म बरन भेद के शब्द काफी बाड़े। **कजरी** करिया आँख, **गोली, लल्लो** (रोहितवर्णा) लाल, **धवरी** सफेद, **श्यामा, साँवरी, कृष्णा** भा **करिअई** करिया बरन के गाय हई। **श्यामकाली, सुन्नकाली** गाढ़ करिया रंग के गाय हई। **कबरी, चितकबरी** सफेद करिया धारी, **सोंकनी** सफेदी लिहले सलेटी, **छर्री** कई रंग, **भूअरी,** कपिला भूअर रंग, **कड़ंजी, कंजी** सफेद पुतलीवाली, **टिकरी, टिकुली, चँहुली** सफेद लिलार के, **पियरी, सिरकटी** सियार अस रंग, **चरनामिरती** कुछ सफेद खुर आ **चँवरी** उज्जर पोंछ के रंगवाली गाय होखेली।

भँइसि के रंग में **सौंकारी** बिलकुल करिया, **ललछँहीं** ललाई लिहले चमड़ी, **लोहरी**, **खैरी** खइर, **भूअरी** हलुक भुअराह, **करिअई** हलुक करिया, **धूसरी** करिया ऐन भा थन, **कनपट्टी** आँख आ कान के बीच सफेद धारी आ **टीकर** माथ प सफेद धब्बा/धारी के भँइसि होली।

भोजपुरी में रंग के प्रविशेषण के भरपूर प्रयोग होला। रंग खुलता आ मोहक होखे त **चोखा, चटक, चहचहा, झकास**, **शोख**, दबल होखे त **फीका, हल्का**, मटियाला होखे त **अगरई, सियरभक** भा भकभूसरा ह। झलक भा छाँहि रंग बदे -आह/आही, -आर, -ई प्रत्यय के प्रयोग होला। रंग-बिसेख के प्रविशेषण में रत-रत (लाल), कुचकुच (करिया) दगदग (पिअर) बगबग (उज्जर) फहफह (सफेद), लहलह (हरियर), टहटह (इँजोर,लाल), टेस, (लाल) झाँवर, झोंकारल, भुचेंग, भुच्च (करिया), मजीठ (करिया,लाल) प्रमुख बाड़े। मनहूस रंग बदे **मधिम, दबल** जइसन कमतीसूचक शब्द के प्रयोग होला।

रंग सूचक शब्दन के लाक्षणिक आ मुहावरेदार प्रयोग के कमी नइखे। ई **'दुनिया रंग-बिरंगी'** त हइए ह, **'रंग बदलती'** भी ह। गिरगिट में अनुकूलन भा प्राकृतिक सुरक्षा तंत्र से बाताबरन के अनुरूप रंग बदले के गुन ह। अदिमी में जानवर से सीखे के आदत ह। सीखे के दिशा हरमेसे बढ़ोतरी का ओर आ जोगात्मक होखे के चाहीं, गुन के पिछलगू बनल आदर्श ह बाकी नकारात्मकता के? अदिमी के **'गिरगिट अस रंग बदलल'** कबो आदर्श ना हो सके, एकर परोजन आ प्रभाव के सुचिताई संदेहिते रही बाकी आजु के इहे हकीकत ह। जानवर के बफादारी

संदिग्ध ना होखे, अदिमी के रंग बदले के आदत सदा संदेह पैदा करेवाला अवगुन मानल जाई।

रंग अइला में मजा बा, **रंग कटे** में उहे बात, **रंग खेले** में मजा का संगे फागो खेले के अर्थ बा। सब अवस्था के खेल ह, जेकर जवानी, ओकर जमाना। **रंग चूअल** भा **टपकल** जुवपन आ तंदुरुस्ती के निशानी ह, **रंग पकड़ले** आ **रंग प अइला** में जवानी का संगे बढ़ोतरी, **रंग खुले** में रंगत में निखार, **रंग चढ़ला** आ **रंग निकलला** में रंगत, प्रभाव, स्वास्थ्य आ रसिकता, **रंग निखरला** में चटकीलापन, गोरापन, **रंग चोख भइला** में बेसी प्रभाव आ सुंदरता में इजाफा के भाव होला। कहल गइल बा कि जुवपन, धन, प्रभुता आ अबिबेक, एकहूँ अनर्थ के जड़ हवें, जहवाँ चारो होखस त का कहे के? **रंग जमावल** (धाक) कुछ लोग के गुन ह त कुछ के फितरत, कयि लोग अनेरे **रंग बान्हेलें** (रोब, अतिरंजना)। **रंग ले आवे** (प्रभाव उत्पन्न कइल) के कला से केहू **रंग जाला** (पूरहर प्रभाव में आइल) त केहू **रंग में बन्हा** (प्रभाव जमल) जाला। **रंग-बिरंग** (बहुरंगीपन, रसिकता, विचित्रता) त दुनिया के जथारथ ह बाकी **रंगरेली** (मजा लूटल) के अतिरेक कव बे **रंग फीका क देला। रंग उखड़े** (धाक खत्म, मजा बिगड़े), **रंग उड़े**, **उतरे** भा **फक् पड़े** (फीका पड़े, लाज भा डर से चेहरा जर्द होखे), **रंग बिगरे** (बुरा हाल, प्रभाव बेअसर) अथवा **रंग में भंग** (आनंद में बाधा) के हालात आ असर से के परिचित नइखे? आज-काल्ह जेकरे देखीं ऊ दोसरा के **रंग देखावे** (फेरा में डाले) के नीत-रीत प चलत बा बाकी उनुकर ई हरकत का **रंग देखावत** (परिनाम) बा, ई अहसास कहवाँ बा? आन के आपन **रंग में ढलल** (मन मोताबिक चलल) केकरा ना नीमन लागे? एकरा बदे भलहीं केहू के आपन रंग में **रंग देवे** (छद्म प्रेम, भुलावा) पड़े, बखत अइले **रंग बदल** लिआई, का हरज? ए में कवनों **रंग भरल** (अतिरंजित) बात नइखे। ज'ले सवारथ के सिद्धि बा त'ले अबोध भाव से मीरा के भजन के आसरे **रंग काटल** जा सकेला- " मैं तो गिरिधर के **रंगराची** (अनुरक्त बानीं)।"

ई त रहे हकीकत के कुछ **रंग-ढंग** (हालत, बेवहार, लक्षन) बाकी एकदमें निराश भइला के कवनों दरकार नइखे, दुनिया जव-जव आगर ह। शुभ आ निरमानो के शक्ति आपन **रंग ना छोड़स** (गुन-सुभाव के अपरिवर्तनशीलता)। जब-जब नैतिकता के छय होला अइसन ताकत सक्रिय हो जालें आ कुटिल अनैतिक शक्ति के **रंग** (प्रभाव) **हटा** के भा कहीं कि उनुकर **रंग मार** के **रंग मचा** (रण भा कर्म में बीरता देखावल, धूम मचावल) देलें। ए से **रंग पिअर** ना पड़े (भयभीत ना होखे के), जरूरत बा सत्य आ न्याय के शक्ति के साथ देवे के।

सब्जबाग (व्यर्थ उम्मीदी) देखावल कुछ लोग के अलोत-नीति ह बाकी कहल जाला नु केहू एक बेरि धोखा दीहल त धिक्कार ह ओकरा प, बेरि-बेरि दीहल त लानत धोखा खाएवाला प। अब एह सोझ बात के बूझे बदे **लाल बुझक्कड़** (जेकरा पाले हर बात जवाब होखे) बने के कवनो बात नइखे, ना **लाल** अथवा **लाल-पिअर** (गुस्सा) होखला के कवनो बात बा। **लाल साफा/टोपी** (पुलिस) के जनबिमुखता होखे भा सरकारी तंत्र के **लाल फीताशाही** (सुस्ती) एकरा पाछू जन-जवाबदेही के भूमिका कम नइखे। भोजपुरी के अगड़धत्त कवि कुंजबिहारी कुंजन के कहनाम जे-

"जब जनते बड़ुवे आन्हर त स्वस्थ सरकार कहाँ से आई,

जब जरिए फरल करइला त ऊपर का फरी मिठाई?"

जनतंत्र में जनता सबसे सरेख ह, ज'ले उनका में जहालत, खंडित सवारथ, मूढ़ता-बिमूढ़ता, आपसी एका के अभाव, दिमागी तौर प **लाल बत्ती जरले** (दीवालियापन) रही, त'ले जनतांत्रिक सुधार के **हरियर बाग** (व्यर्थ आशा) रचल बेअरथ होखी। आजादी के बाद कुकुरमुत्ता अस पसर आइल चंट आ स्वार्थी राजनीतिक समूह जनता के हर कमजोरी से वाकिफ बाड़न। भेदनीति ओन्हनि के कारगर अस्त्र बा जवना से ऊ आपन मकसद में सहजे कामयाब नजर आवत बाड़न- **हरे ना फिटकिरी लागे, रंग चढ़े चोख (**बिना तूलतलाम के इच्छित परिनाम)। एहू माहौल में केहू के **हरियरी सूझत** होखे (खुशी, भविष्य सुंदर दीखल) त बिबेकीजन का करिहें? तरे-तरे भलहीं **लाल मरिचा** भा **सुर्ख** (कोहनाइल) हो जास, परतच्छ लाचारी उनुका सोझे बा। राजनीति के ई **सबुज कदम** (मनहूस, अपसगुनी) सबकुछ नँसले जाता। अइसना में **सब्ज होखे** (प्रसन्नता)

के सपना ना देखल जा सके। अब त **हरदी-चूना के रंग एक भ गइल**, नीमन-जबून के भेद ना रहल, ह**रियर भइल** (तरोताजा, खुशी, स्मृति) दुल्लम भ गइल, पता ना **हरा-भरा होखे** (समृद्धि) के जनकामना के का होई?

पदार्थवाद के अतिरेक, सवारथमुखी सुखेच्छा, हिकारती राजनीति आदि के कारन सामाजिक ताना-बाना में बिखराव आजु के जथारथ ह। **करिया नाग** (बिखधर) सगरे बाड़े जिनकर **करिया करतूत** (कुकरम) से आमजन **करिया तिल चबावे** (कष्ट, परवशता) के हालत में चहुँप गइल बाड़े। लंपटजन **मुँह काला क के** (अपकृत्य, कलंकित), **मुँह करिखी** (दोष, कलंक) नइखन लावत बलु **करिया हाँड़ी माथ प रखले** (कलंक लेले) उतान घुमत बाड़ें। **करिया टीका/कारिख लगावल- (**कलंकित भइल) अब पहिचान आ प्रसिद्धि पावे के हथकंडा बन गइल बा। **कारिख लागल** अब अपकीरति कटेगरी के चीझ ना रहल बुला। अब **'साँचा के बोलबाला, झूठा के मुँह काला'** वाली कहाउति बेअरथ भ गइल, आज-काल्हु साँचे के मुँह **करिया होखऽता**, ए से कि थोरिक हया हुँहईं बाँचल बा, उनुके चेहरा **जर्द होखता**, ए से कि लोकभय के जगह उहवें निरापद बा। नीति-सिद्धांतो **एक रंग-ढंग प ना रहले** (भरोसा न रहल), का प आस-बिसास जागे? **करिया पहाड़** (भयानक, मोटा काला आदमी) के पाछू सुकसुकाह दिल होखी, **तामई मुख** के अलोते **सफेद चेहरा** होखी, उफान मारत **खून के ललाई** के ओट में **उज्जर रकत** होखी, एकर पुरवासाख केकरा भिर हो सकेला? सबे एक-दोसरा के **करिया बार बरोबर समुझे** (तुच्छ समुझे) के उच्चग्रंथि से ग्रस्त बा। **बदन नीला** बा (आघात के चिन्हँ), **आँख काली-पीली** (गुस्सा) तबो ई लोक **करिया कउआ खइले** (दीर्घजीवी) बा त अचरजे के बात ह।

जादे उपदेस नीक ना। ई जानल तथ्य ह कि **"सूरदास के कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग।"**

✍**दिनेश पाण्डेय,**
पटना।

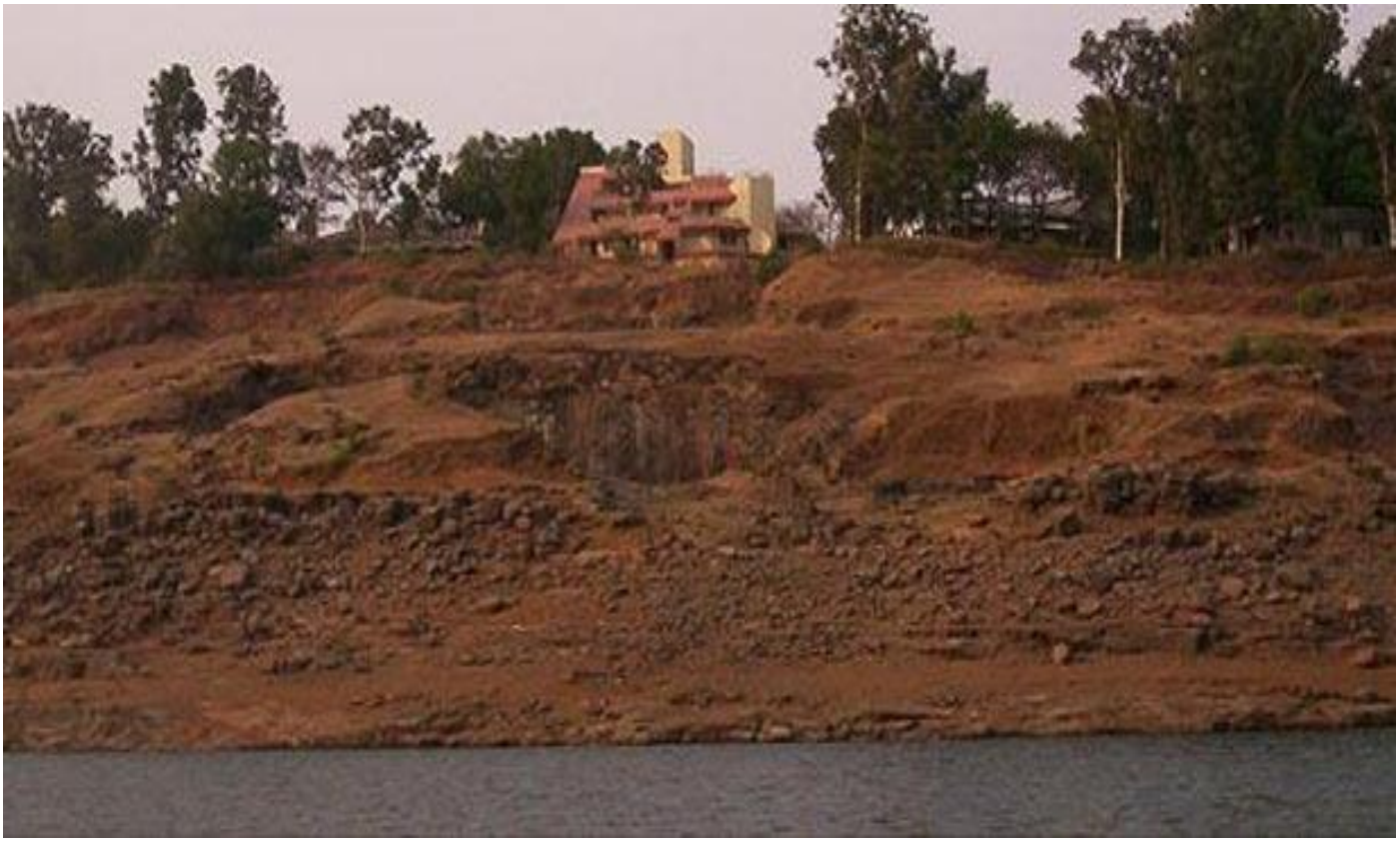

सुनाव$ हाल काका

आवऽ बइठऽ सुनावऽ हाल काका।
कइसे बीतत बा नवका साल काका ?

जेकरा मेहनत से बा गोदाम भरल,
ओकरा दूलम बा रोटी-दाल काका।

अब त खइनी भी ना खोंखी उपाटे,
नकली दुनिया के नकली माल काका।

सभत्तर झूठ, चोरी, बेईमानी,
एहिमें जीयल भइल मोहाल काका।

निरा सपना देखावल जात बाटे,
सियासत के तू समझऽ चाल काका।

सुनाता सेंसेक्स ऊपर चढ़ रहल बा,
आ खेतिहर हो गइल कंगाल काका।

कि 'संजय' देखि के मन कांप जाला,
ए दुनिया के तिलिस्मी जाल काका।

✍संजय मिश्र संजय
कार्यकारी सम्पादक
सिरिजन

कहिया ले ?

ले के जीहीं हम हिया में पीर कहिया ले ?
बस रहीं ढारत नयन से नीर कहिया ले ?

सुख भइल सपना के सम्पत दुख भइल साथी,
हमसे रूसल ई रही तकदीर कहिया ले ?

राँझा के पंजाब गइले हो गइल बरिसन,
बाट जोहिहें अब भला ई हीर कहिया ले ?

झूठ के बुनियाद पर ऊ राज भोगत बा,
हम रहीं साधू बनल गम्भीर कहिया ले ?

खेती कइलो पर दुलम सतुआ- नमक बाटे,
रउरा के ई पूआ-पूड़ी-खीर कहिया ले ?

हमरो गाँवे रेल के टीसन बना देतीं,
लोग उतरी खींच के जंजीर कहिया ले ?

आत्मनिर्भरता के दुश्मन हऽ रिजर्वेशन,
रउरा मूड़ी पर उठाएब भीर कहिया ले ?

हर गली में बा दुशासन हाय 'संजय' जी,
अब खिंचाई द्रोपदी के चीर कहिया ले ?

✍संजय मिश्र संजय
कार्यकारी सम्पादक
सिरिजन

माई त बस माई हीयऽ

ममता के अधिकाई हीय।
माई त बस माई हीयऽ।

लिलरा पर काजर के टीका,
मरिचा नीमक राई हीयऽ।

घुट्टी चुसनी तुलसी काढ़ा,
बिस्कुट बरफ मिठाई हीयऽ।

घुघुआ माना ओक्का बोक्का,
चकवा अउर चकाई हीयऽ।

ऊहे ह संझा महारानी,
ऊहे प्रात गुसाईं हीयऽ।

रोग अनेकन होखे हमरा,
सबकर एक दवाई हीयऽ।

लूहि बहे सगरी स्वारथ के,
ऊ शीतल पुरवाई हीयऽ।

नाता के चुनरी जब फाटे,
नेह ताग तुरपाई हीयऽ।

बिपत घेर घनघोर करे जब,
तब सुख के शहनाई हीयऽ।

सब मुश्किल आसान करे ला,
दधि गुर के शगुनाई हीयऽ।

शिव बिरंचि जगदीश देव के,
धरती पर परछाई हीयऽ।

चउथि जिउतिया हर गितिया में,
त्यागी के कुशलाई हीयऽ।।

संजीव कुमार त्यागी
लट्ठू डीह, गाजीपुर

हमे बिहान मिलल बा

घिरल अन्हरिया घोर रहे अब जाके हमे बिहान मिलल बा,
रहनी बिसरावल अपने घरे अब तनकी सा सम्मान मिलल बा,
सूखि गइल अँखिया से लोरवा तब हमके मुस्कान मिलल बा,
बीत गइल केतना सलिया तब जाके हमे मकान मिलल बा।

भगतन के संघर्ष देखि हम आँख से लोर छुपावत रहलीं,
चहतीं त देखा दिहती शक्ति पर दुनिया के अजमावत रहलीं,
बइठल टाटी छप्पर में हम आपन दिन बितावत रहलीं,
हमरो ना गोहार सुने केहू जाने कब से गोहरावत रहलीं।

केतना नीमन मोर भाग रहे जे हनुमत जइसन दास मिलल,
माई बाबू के मरजी रहे एही खातिर बनवास मिलल
हम धरम के संगे चलत रहीं मन मे बहुते विश्वास मिलल,
एह कलियुग में सबहि देखल हमके केतना उपहास मिलल।

एह न्याय भूमि पे न्याय मिलल बा बात न खुद के भुलावे देहिब,
सुख के संचार होइ सब मे दुख के पंजरा ना आवे देहिब
हम बचन देत बानी सबके अब बिरह गीत ना गावे देहिब
हम रघुकुल भूषण राम हईं त बचन पे आँच ना आवे देहिब।

पीयुष पराशर
पता- ग्राम+पोस्ट -कारहिया
जिला- गाज़ीपुर (उत्तर प्रदेश)

चल मिलजुलि के धरती बचाईं

कतनो कमइब ऊ कामे ना आई,
चल मिल-जुलि के ई धरती बचाईं।

मैनी के बेटी सुलोचनी ना आइल,
जहिए ले नाधा जोती खुँटी टंगाइल।
धनवा के सिरिका ना छपरे टंगाता,
बोली फुदगुदी के अब ना सुनाता।
हरिअर धरती के थार ना बनाईं।

पण्डुक परा गइले जाने कवना देश,
नीलकण्ठ के मिले ना कतही सनेश।
फेंड-रुख दुअरा से भइले नापाता,
बाजा कठफोरवा के अब ना सुनाता।
घर पिछुवरिया में गीत के सुनाई।

खोजलो प बदुरी के लउके ना लटकल,
चिल्ह गीध गँउवा के रहिया के भटकल।
कोइलर के गीत प बिपति बड़ी भारी,
कागा ना आवसु अब हमरो दुआरी।
दूध भात कटोरिया में कइसे खिआईं।

पइनी में गरइ के छउकल गुम बा,
पोठिया आ चेल्हवा के रुपे दुलुम बा।
माहुर से जरि गइले पनिया के साड़ी,
सपनो में लउकसु ना फरहा बरारी।
अपने करम से हम गइनी लजाई।

दादुर दोहना के घर भइल भूतही,
सुखले तवाँ गइली दुलहिन सितुही।
छुटि गइल चुँटी के गइल बरात,
भँवरन के खोंता अब नइखे सेवात।
देवेन्दर के दरद के कइसे कहाई।

✍देवेन्द्र कुमार राय
ग्राम+पो०-जमुआँव, थाना-पीरो,जिला-भोजपुर, बिहार

समाज बदल रहल बा

सुननी हाँ कि समाज बदल रहल बा।
हर तरफ़ बदलाव हो रहल बा।
रउवा सभे सुननी हाँ का?
स्त्रीविमर्श हो रहल बा इहो सुननी हाँ?
बाकी का पुरुष के आँख छुएला ना का?
औरत के ओह संवेदनशील जगह के?
कई बार देखले बानी
ओह लोग के घूरत आँख के
आ गन्दा मानसिकता के
जे कबो सूट-बूट में
त कबो साधारण परिधान में, उनका के।
अमीर चाहे ग़रीब बाकी मन में उहे कुविचार
उनकर दानवी पशुता
अतिना घिनावन आ नंगा बा
कि लउक जाला हर रूप में
आ बुझा जाला उनकर हर नजर
हर जगह लउक जाला
तोहार ई कुरहन, तोहार दानवी रूप
तू त अपना उमिरियो के लेहाज नइख करत
कि सामने वाली तहरा बेटी, बहिन
आ नातिन के उमर के बिया
तू त बुझीला ओकरो के...
मन त करता कि श्राप दे दी तहरा वजूद के बाकी ध्यान
आवता कइसे करीं हम त औरत हइ नु
दया आ त्याग के प्रतिमूर्ति... बाकिर... एकर मतलब का हो...?
कि तू ओकरा साथे कुछो करब..!
अब सुन ल तू कान खोल के अब अइसन
ना होई, आ ना बचब तू
काहे औरते हमेशा अलग-अलग रूप में प्रताडित होइहे...?
बंद कर द ई देखावा के नाटक...
अब अउर ना, विराम लगाव...

✍इंदु उपाध्याय

मनहरण घनाक्षरी छंद

१

लउके आसान बाक़ी बहुते हरान करे
गलि जाला लोग इहाँ सुख के पियास में ।
कतिना जतन करे, कति भयभीत रहे
मनई ई जीए बदे, थोरिका सँवास में ।
आँखि गड़वले रहे, सुधबुध खोई सब,
हरपल इहाँ कुछ पावहीं के आस में ।
कतिना लाचार मन, छोटी-छोटी बात पर
रहे घबराइल ऊ एक-एक साँस मे ।।

२.

मुहवाँ खामोश रहे, देहिया में जोश रहे
अपना के राखि लीहीं, बहुते सम्हार में
बाति प अडिग रहीं, साँची-साँची बात कहीं,
साँचवाली बतिया ई, उड़े ना बयार में
अनकर लखि-लखि, छोड़ दिहीं मथफोरी,
मीठी-मीठी बतिया के, बोली बस प्यार में
कुछुओ न भेंटी कबो, रहेम हरान झूठो
उरझ रहबि जदि खाली तकरार में।

✍दीपक सिंह
(कोलकाता)

आइल गइल तऽ लगले रही

विधा - मनहरण घनाक्षरी

हम जोगी रमता जी,
बहेनी पानी के जस,
जन कल्याण खातिर,
पथ प निकलनी ।

नाहीं मन लोभ रहे,
नाहीं कौनो क्षोभ रहे,
हीत मीत रहे सभ,
इहे सोच पलनीं ।

बात एक दिन के ह,
शोक के सनेसा रहे,
भूलनीं अबेर राति,
गाड़ी धइ चलनी।

राहि रोके काल खड़ा,
कुछ लाठी कुछ भाला,
खाकी के हिफाज़त में
माटी में बदलनी।

✍ माया चौबे
तिनसुकिया असम

भोजपुरी दोहे

नीमन-बाउर बात पऽ, अगते करीं बिचार।
नीक काम हरदम करीं, तब फइली उजियार।।

ज्ञान, बिनय, विद्या, सुधन, बँटले से बढ़िआय।
कंजूसी ए में करे, ऊ पीछे पछताय।।

जहाँ तलक काबू पहुँच, कर सेवा सतकार।
सेवा से मेवा मिली, भेंटी प्यार -दुलार।।

मन घमंड लब -लब भरल, खुद में रखल गरूर।
अपने आदत से कबो, हो जाई मजबूर ।।

जवन करत लागे सरम, जरे जगत में आग।
ओके बाउर जानि के, तुरते कइदऽ त्याग।।

सेवन को सतसंग भल , खेवन को भल काम।
देवन को सेवा भला , लेवन को हरिनाम।।

सब कुछ से खाली अगर, ए में केकर दोस ।
करनी जस भरनी मिले, अबहूँ से कर होस ।।

अपन बडाई जे करी, झारी सेखी सान ।
ऊ न कबो आगे बढी , बाउर कही जहान ।।

खुद में सतत सुधार कर, अरजे उन्नत ज्ञान।
होखे भला जहान के, बात सुचिंत बखान।।

फुलत-फरत रह बिस्व में, करम-करत निसकाम।
सभ में हरि के वास बा, सद्कवि बाबूराम।

✍बाबूराम सिंह कवि
ग्राम -खुटहाँ, पोस्ट -विजयीपुर (भरपुरवा)
जिला -गोपालगंज (बिहार)

बा एकरे नाम जिंदगी

कबहूँ लागे सजल-धजल, कबो लागे सादगी।
कबो गम त कबो खुशी बा, एकरे नाम जिंदगी।

कबो नयन में लोर भरल, कबहूँ खिन्न उदासी
कबो नियामत सारा हऽ, कबो नगीचा खासी।
कबो मुक्त त कबो लागे, हरमेसे के बन्दगी।
कबो गम त कबो खुशी बा एकरे नाम जिंदगी।

कउँध दामिनी कबो दिखे, कबो कारी यामिनी
टुटल हृदय बा एक घरी, दोसर छने रागिनी।
कबो-कबो नियंत्रित लागे, कबो लागे बेखुदी।
कबो गम त कबो खुशी बा एकरे नाम जिंदगी।

कबहूँ फुलल न सुमन कबो, खिलल-खिलल फिर लागे।
खोवल कहवाँ अनजाने में, कबो मिलल अस लागे।
खुल के जीयऽ खुशी-खुशी, बेसकीमती जिंदगी।
कबो गम त कबो खुशी बा एकरे नाम जिंदगी।

✍सुजीत सिंह (शिक्षक)
क0 म0 विधालय अपहर
अंचल-अमनौर,ग्राम-सलखुआँ
पोस्ट-अपहर,थाना-अमनौर,जिला-सारण

सोझबक

चलु रे मंगरू बुधई गइलें, आवत बाढ़ें लालू।
लाल फूल ई देखि-देखि के नाचे एगों भालू।।

जे ही आवे उहे करेला हमनी के बस दोहन।
माया में बा सभे भुलाइल राधा के बस मोहन।।

महा कुम्भ में सन्त बटुरलें नामी अउर गिरामी।
एक-एक से बढ़ि के बाड़ें, राजनीति के स्वामी।।

जानीं ना सोझबक हमनी के कौनों छक्का,पंजा।
केकर बार मुड़ाइल बांटे, के जनमें से गंजा।।

मुँह पर दूध रखल बा लेकिन, घइली में बा माहुर।
दू पाटन मध पीस काल के, सबहीं भइल बिथाहुर।।

राम नाम के माला लेलऽ, खोह में सूतऽ भा जपा।
अजपा जाप जपा चाहे तूं, बइठि के घर में सपा।।

कबो पड़ोसी रऽहि सकें ना, एक बाति पर कायम।
अड़ियल भइल जातबा देखऽ, तोहके देखि मुलायम।।
तू-तू, मैं-मैं में हमनी के, करीं परस्पर में-में।
सभे बोलावे केमे जाईं, सूझि परे ना खेमें।।

मालिक दीं वरदान कि भारत बनल रहे सिरमौर।
कटस-मरस खुद में अझुराइल, ईहे नवका दौर।।

✍**मदनमोहन पाण्डेय**
से.नि.प्रधानाचार्य,ने.इ.का.मंसाछापर,
कुशीनगर,उ.प्र.

बरवै छंद

श्री कवीस के बन्दउ, सीस झुकाय।
करीं प्रनाम कर जोरि, होउ सहाय।।

गननायक लंबोदर, हे प्रथमेश।
सुमुख सिद्धिप्रिय गणधिप, रुद्रज गनेश।।

देवगन मान प्रधान, गौरी पूत।
जन-जन करे गुनगान, पितु अवधूत।।

अच्छत फूल चढ़ाईं, अरु घृत मोद।
करीं कृपा हे देवा ! बरीं प्रमोद।।

कृपा करीं गननायक, हम असहाय।
रचीं केहि बिधि छंदन, सबद न आय।।

राजनीति के खेला, तनि न बुझाय।
कोइला प बा छापा, कनक छिटाय।।

काबिल भ्रष्टाचारी, पहिने सूट।
धन दउलत सरकारी, होता लूट।।

पढ़ल लोग के होला, ग़ज़ब बिचार।
बहरी भर मनुहरवा, भीतर खार।।

पाकिट में ना पाई, छछनत गात।
रोजगार ना धंधा, फिकिर क बात।।

लोकतंत्र के कइसन,रीति रिवाज।
काबिल करे मजूरी, जाहिल राज।।

मतिभ्रम में अमरेन्दर, कहाँ अनन्द?
काहे रचल अकारथ, बरवै छंद?

✍**अमरेन्द्र सिंह, आरा**

का होखत बा आह लगावऽ

का होखत बा आह लगावऽ ।
ओहमे आपन चाह लगावऽ ।।

तोहरा के केहू जनि जानो,
तूँ सबका के थाह लगावऽ ।

टेंशन का बा खेत ह अनकर,
बीचहीं-बीचे राह लगावऽ ।

तेरा वार न जाए खाली,
लग्गी अस गम्हिराह लगावऽ ।

फ्री के चन्दन हे रघुनन्दन,
कम काहें अउलाह लगावऽ।

✍**अशोक कुमार तिवारी**
ग्राम+पोस्ट-सूर्यभानपुर
जनपद-बलिया(उ०प्र०)

बनल रहे दे ते हमके नादान रे माई

सभे हो जाता पढ़ि के सेयान रे माई।
बनल रहे देते हमके नादान रे माई।

का होई डाक्टर कलक्टर बनि के,
घरवा में मुवबे ते बाहर हम छछनि के।
काटे अफसरी सनेहिया के कान रे माई!

धनवा के भूत माई एक बे जे ध ली,
रिसतो के खून क के बगली ऊँच क ली।
पेपर पुस्तक से ले लेते संज्ञान रे माई!

बोलिया हो जाई रे कौवो ले करकस,
अपना के गुर कही लोग के गोबर जस।
सरम छोड़ि के भागी तन के बथान रे माई!

अइसन पढ़ाई माई पढ़ि के का होई?
मोम हिया जवना से पथल के होई।
आपन बिगड़े ना देब पहचान रे माई!

पढ़ि लिख जाइम तऽ मेहरी पढ़ल आई।
कामऽ ना करी खाली फैशन झमकाई।
बाते बात में खाई तोर चान रे माई!

अनपढ़ रहबि त सीधा सादा भेटाई।
भजनो सुनाई हाथ गोड़वो दबाई।
अपना बेटवा पऽ करबे गुमान रे माई!

खाये पेन्हे जीए भ एहिजे कमा लेब।
आगे के जीवन खातिर अवरी बचा लेब।
हँसत खेलत होई साँझ बिहान रे माई!

चप्पल बनि के तोरा पँउवा में रहबि,
जतने धंगचबे त फुलाइब अउरी फरबि।
तेहीं दुनिया मोर तेहीं भगवान रे माई!

बारवा में अंगुरी फिरा के पुचुकरिहे,
साटि के करेजा से हँसि-हँसि दुलरिहे।
रहबि संघवे ते बने दे किसान रे माई!

जोति कोड़ि खेतवा के खाइब खिआइब।
घरे आवते गोदिया के तोरा सुख पाइब।
जुड़ाई हिया तोर, मिटी मोर थकान रे माई!

पुरा परिवार जब होई माई सबुरी,
जिनिगी के गड़िया खुशी तबे डुगुरी,
तोरा बेटवा के अतने अरमान रे माई!

✍**विमल कुमार**
जमुआँव भोजपुर बिहार

संगीत सुभाष जी के गीत

दुख देखि पूतवा के गोद में उठाइ लेली,
करूना के, ममता के, समता के धाम जी।

सुभ जोति छिटेली जगत चमकाइ देली,
करि देली रतियो में टहटह घाम जी।

बघवा की पीठिया लगल पदमासन बा,
देखत- सुनत जग पावे बिसराम जी।

सादर झुकाइ माँथ, जोरले दुनउ हाथ,
भरि आँखि लोर ले जपीले तोर नाम जी।

✍**संगीत सुभाष**

लाल रंग देवल बनल देबी दुरूगा के,
लाल धजा लहर- लहर लहरात बा।
लाल फूल, लाल सूल, चुनरी चटक लाल,
लाल रंग सेनुरा से मड़िया भरात बा।
लाल चूड़ी, लाल बिंदी, आँखि लाल देखते में
लंपट, लबार, लतखोर लो डेरात बा।
लाल के अरज सुनि गोदिया उठावे माई,
धनि- धनि भागि कहि लाल अगरात बा।

✍**संगीत सुभाष**

नाहीं कुछ चाह बा कि दोसरा के हक छीनि,
हमरे दुआर प बहा दीं उपरवछा।
हमरा के पगड़ी त दोसरो के दे दीं एगो,
लाल रंग रंगल लहरदार गमछा।
सबकर आन, बान, सान, मान रोज बढ़े,
सब बिधि काज नित हो इहाँ अच्छा-अच्छा।
रउएँ प आस- बिसवास बाटे दुनियाँ के,
रउएँ भरेनीं नित झोरी अउ खोंइछा।

✍**संगीत सुभाष,**
मुसेहरी बाजार,
गोपालगंज।

ई भारत देश महान हवे

युग युग से भारत के महिमा
गावत ई सकल जहान हवे

पूरा भारत घर आपन हऽ, घर में सबके आराम मिले
एही घरवा में मिले हवा, भोजन पानी अविराम मिले
बा जनम मिलल ये धरती पर, ई धरती सबकर जान हवे-

ना मनइन में बा भेद इहाँ, जइसे कुरान बा वेद इहाँ
जे जाति-धरम में बाटेला, दीहल जाला ऊ खेद इहाँ
मिल-जुल के सभे रहे हरदम, भाईचारा पहिचान हवे-

बा ताजमहल आ लालकिला,एलोरा आ जंतर- मंतर
बा किसिम-किसिम के भारत में,मंदिर मस्जिद आ गिरिजाघर
युग युग ले नूर रही एकर,जइसे सूरज आ चान हवे-

सागर शीतलता दे ताटे, आ माथे सजल हिमालय बा
नदिया, झरना बा हरियाली, दुनिया तऽ एकर कायल बा
ई कोयल के हऽ मधुर गीत, आ कलियन के मुस्कान हवे-

गांधी, गौतम, अब्दुल कलाम,बा कृष्ण राम के नाम इहाँ
नानक आ महावीर स्वामी, कइले बालो सदकाम इहाँ
ई धरती सूर कबीरा के, आ तानसेन के तान हवे-

जे जहवे बा ऊ तहवे से, लागल बा देश सजावे में
वैज्ञानिक खोजे में लागल, अभियंता देश बनावे में
सैनिक सीमा पर पहरा दे, खेती में डटल किसान हवे-

✍**आकाश महेशपुरी**
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

भोजपुरी काव्य में बिम्ब विधान

अभिव्यक्ति का प्रक्रिया में सत्य विलोपित हो जाला। ओकरा के कहल ना जा सके, सम्प्रेषित कइल जा सकेला। एकरे के पच्छिम के विद्वान लारिंस डरेल अपना भासा में कहलें कि ' टूथ डिसेपियर्स विथ द टेलिंग ऑफ इट। इट कैन वोनली बी कन्वेड नॉट स्टेटेड। ' सत्य के प्रकृति बड़ी बारीक होला। एही से कला में अमूर्तन व्यापार के चलन भइल। अमूर्तन का गहराई के अनुपात में सामाजिक सक्रिय सहभोग जरूरी ह। जहँवा अमूर्तन आ सहभोग का बीचे फांक रह जाई, उहँवा कविता के सत्य निष्क्रिय हो जाई। बेजान पड़ जाई। एही से अज्ञेय कहलें कि ' शब्द अधूरे हैं, क्योंकि उच्चारण माँगते हैं। ' उचारन मतलब प्रेषणीयता। ई प्रेषणीयता कविता के अनिवार्य शर्त्त ह। बिना एकरा कवनो कविता बेजान-परान के खाली शब्द भर बन के

कठुआइल रही। कविता का भाव-बोध के सवाद, साधारणीकरण खातिर शब्द के उचारन देवे के पड़ी। विविध संदर्भन के देवे के पड़ी। एह से कि कविता में शब्द आपन प्रमुख अर्थ परोसेला। अर्थ के सउँसे सम्भावना जहँवा ना खुली, उहँवा सउँसे अर्थ शक्ति अँखुअइबे ना करी। शब्द के उचारने ना मिली।

कविता के भासा गद्य के भासा से अलग होला। बोलचाल के भासा गद्य भासा से इतर होला। एने

आके भोजपुरी साहित्य में काव्य भासा के संजोजन हो रहल बा। बाकिर बहुत लोग आ खास करके मंचीय जोकरनुमा तुक्कड़ कवि के नाम पर बोलचाल के भासा में तुक भरके बेतुका काम करत भोजपुरी काव्य परम्परा के मोल-मरजाद माटी में मिला देलें ; जइसे -

' सुअरी बिआन बाटे गीलू गीलू
बाल बाचा होख ता पीलू पीलू
तबहूँ तूं बोलत बाड़ ईलू ईलू। '

बोलचाल का एह तूक्कड़ई भा तुकबंदी से काव्य भासा ना उभर सके। बोलचाल के भासा सामान्य भासा होला। गद्य के भासा में साहित्यिक तरास आ जाला। भासा के प्रमुख अर्थ चरम व्याकृत काव्य भासा में होला। एह बोलचाल का तुकबंदी से भोजपुरी काव्य में बिम्ब विधान के संघटना ना हो सके। गद्य आ काव्य के भासा में फरक होला। कविता के भासा में बिम्ब-विधान के भइल जरूरी होला। बिम्ब योजना काव्य भासा आ कविता के सिंगार ह। कविता के भासा पढ़निहार चाहे सुननिहार के मन में बिम्ब मतलब भाव-छवि/चित्र उरेहेला। उहे भाव चित्र जवन कवि अपना हिरदय में भावात्मक ढ़ाँचा के रूप में सजवले बा। जवना के पूरहर उचारन देके सजवले बा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ' कविता क्या है ' शीर्षक निबंध में बतवले बाड़न कि कविता में बोध के दूगो स्तर प्राप्त होला। मतलब कि कविता पढ़ला भा सुनला से पढ़निहार भा सुननिहार का अर्थ ग्रहण होला कि बिम्ब ग्रहण। अर्थ ग्रहण मतलब खाली सूचना। अभिधात्मक बरनन से खाली अर्थ ग्रहण मात्र बरनन ह, जवना से सहज संकेतिक अर्थ उजागर होला। बिम्ब ग्रहण से काव्य भासा के पूरा-पूरा दोहन होला। शब्द का भीतर के सम्भावित अर्थ शक्ति के निचोड़ के गाड़ दिहल जाला। बिम्ब ग्रहण में कवि एकरा से एगो अइसन भाव चित्र उरेहेला जवन सउँसे संश्लिष्ट होला। काव्य भासा के माध्यम से एगो भाव छवि के सोबरन आख्यान हो जाला। ई भाव छवि प्रत्यक्ष चित्र से अलग होखेला।

संवेदना के जमीन पर कवि के मन में उपजल भाव चित्र के उजागर करेके बेंवत एही बिम्ब में होई कांहेकि बिम्ब सोबरन-सउँस होला, संश्लिष्ट होला, अपना सउँसे परिवेश का संगे हाजिर होला। एही बिम्ब भा भावचित्र के सम्प्रेषण आ साधारणीकरण कवि के मूल काम ह। एजरा पाउंड ठीके कहले बाड़न कि ' सउँसे जिनगी में एगो भावचित्र के निरमान कर सकल, कहीं नीमन बा मोट- मोट ग्रंथ लिखे का तुलना में। '

अंगरेजी में बिम्ब भा भावछवि के समानार्थी शब्द ' इमेज ' के बेवहार होला। इमेज माने बिम्ब आ इमेजरी माने बिम्बमाला। भावचित्र में कवि प्रतीक का रूढ़ परिवेश के खंडित करके जरूरी आ इच्छित परिवेश के रचना करेला। सामान्य शब्द से प्रतीक रचना होई आ प्रतीक के रूढ़ि खंडित क के भावचित्र के संरचना होला। प्रतीक के माध्यम से आंशिक भाव तत्त्व उरेहल जा सकेला। भावचित्र भा बिम्ब में कवि प्रतीक के ध्वस्त क के भावचित्र के रूप में अपना परिवेश के रचना करेला। प्रतीक आ भावचित्र के फरक उपमा आ रूपक के माध्यम से समुझल जा सकेला। उपमा में समग्र स्थिति के कवनो एगो खास अंश के तुलना प्रस्तुत कइल जाला जबकि रूपक में सउँस समग्र स्थिति के अंकन अपेक्षित परिवेश का संगे होला। रूपक के जइसन बिम्ब में आरोपन ना होखे। बिम्ब रूपक के तरह सउँसे स्थिति के आलेखन करेला। बिम्ब के उदय कवि के गहन अनुभूति के छन में होला। एही से कहल जाला कि बिम्ब विधान कविता के अनिवार्य तत्त्व ह।

प्रतीको से भाव समृद्ध होला। प्रतीक का भीतर के संभावना उजागर कइला पर ऊ बिम्ब मतलब भावचित्र में बदल जाला। इहे कवि के सफलता ह। बाकिर जहँवा कवि में असमर्थता बा ओहिजा प्रतीक भा मोटिभ भर बनके रह जाला। प्रतीक आ भावचित्र के संरचना के दिशा एक तरह से होई शब्द संदर्भ- प्रतीक, भावचित्र चाहे कथानक रूढ़ि काव्य भासा, मतलब कि भावचित्र चाहे बिम्ब में एक शब्द से सउँसे स्थिति आ परिवेश सामने आ जाला। संवेदना के धरातल पर बिम्ब संरचना संभव बा। बिम्बे कविता के केन्द्रीय तत्त्व ह। भावचित्र का संगठन के आधार पर कवि के सफलता-असफलता के आंकल जा सकेला।

भोजपुरी भासा में काव्य भासा रचा रहल बा। लोक साहित्य आ शिष्ट साहित्य में बहुत अन्तर होला। दूनों के अन्तर भासा प्रयोग के विभिन्नता में झलकेला। लोक साहित्य में सृजनात्मक (क्रियेटिव) ना होखे। लोक कवि भा गायक भावचित्र के संघटन ना कर सके। लोक साहित्य में दैनिक बोलचाल के भासा बेवहार में आवेला। इहँवा शब्दन के अर्थ निचोड़े के

प्रक्रिया गौण रूप में बा। एही से राम स्वरूप चतुर्वेदी कहत बाड़ें कि ' लोकगीतों की सरसता गायक के कंठ में होती है, मुद्रित रूप में वे अपना प्रायः समूचा प्रभाव खो बैठते हैं। ' (भाषा और संवेदना, पन्ना -42)

भोजपुरी साहित्य में काव्य रचना बहुत ढ़ंग से हो रहल बा। एकरा बिम्ब विधानन के देखि के अचरज होला। आईं, भोजपुरी काव्य में बिम्ब विधान के विश्लेषण खातिर कुछ कविलोग के कविता में झांकल जाव।

उनइसवां सदी के पूर्वार्ध में कासी के मुसलमान कवि तेग अली तेग ' बदमास दरपन ' लिखलें। लाला भगवान दीन के अनुसार, ' काव्य का बहुत प्रौढ़ रूप ' बदमास दरपन ' में व्यक्त किया गया है।(भोजपुरी के कवि और काव्य - दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह; पन्ना- 136) । बदमास दरपन में बिम्ब के कहीं कहीं आलेख उभरल बा। आँखि में सुरमा लगावल सिंगार के आयोजन ह। सोरहा सिंगार में एगो सिंगार आँखि में काजर भा सुरमा लगावल ह-

कहली के काहे आँखी में सुरमा लगावल,
हँस के कहलें छुरी के पत्थर चटाइला।।

एह शेर में अलंकार के योजना त बड़ले बा, आँखि में सुरमा के सिंगार ओही तरह के बा जइसे पत्थर पर छुरी के धार तेज कइल जाए। मतलब कि नजरिया पर सान चढ़ावे खातिर आँखि में सुरमा लगालव गइल। एह भाव के उजागर करे खातिर छुरी आ पत्थर के बिम्ब रचल गइल बा। छुरी पत्थर चटवला के बाद तेज-तरक हो जाला। एगो दोसर शेर देखीं -

' पुतरी मतिन रक्खब तुहे पलकन के आड़ में।
तोहरे बदे हम आँखी में बइठक बनाइला।। '

एहिजा आँखी में बइठक बनावे का शब्द- योजना से भावचित्र रचाइल बा। बइठक ऊ होला जहँवा पुरुष वर्ग के बइठकी होए। अपना प्रिय के पुतरी के तरह पलकन के आड़ में छूपा लेवे के काव्य संवेदना आँखी में बइठक बनाइला शब्द से बिम्बित हो जाता। एकरा माध्यम से कवि प्रिय के प्रति आपन अनन्य प्रेम भाव प्रकट कर ता। प्रिय के सुरक्षित राखे के अपूर्व भावना एह बिम्ब में झलक ता।

बाबू रामकृष्ण वर्मा ' बलवीर ' के नायिका रूप का भार से लदाइल बिआ। अपरूप रूप के बड़ा मनोहर बरनन बलवीर जी कइले बाड़न। जोबन के बोझ से दबल नायिका के देह यौवन ओइसहीं झलमल कर तिआ; जइसे चकवा के देहयष्ठि। एकरा के एगो बिम्ब से ऊ कइसे प्रकट करत बाड़ें-

' चकवा सरिस तोरा जोबना लसत देह,
दीपे मानो सोना के मसाल। '

नायिका के सुन्दर कंचन काया के अभिव्यक्ति सोना के मसाल से कइले बाड़ें। एह बिम्ब में सब ओर सौन्दर्य झलक ता। सोना के मसाल, ओकरा में के जोति सब नायिका का उपटल जवानी के अभिव्यक्त करे में सक्षम बा।

भोजपुरी के सुख्यात कवि भिखारी ठाकुर का कविता में कहीं कहीं बिम्ब उतर आइल बा -

' अमवाँ मोजरि गइलें लगलें टिकोरवा से
दिन-पर-दिन पियराय रे विदेसिया।
एक दिन बहि जइहें जुलुमी बेयरिया से
डाढ़-पात जइहें झहराय रे विदेसिया।। '

भिखारी ठाकुर का नायिका के यौवन मोजरा गइल बा। ओकरा में टिकोढ़ो लाग गइल बा। नायिका के जवानी के आवाई पति का अभाव में अपूर्व सांसत में पड़ल बा। आम, मोजर, टिकोढ़ा, आम के पिअराइल, जुलुमी बेयार के बहल आ ओकरा जोर से डाढ़-पात के झहराय के बिम्ब रचल गइल बा। नायिका प्यारी सुन्दरी किशोरावस्था के देहरी लांघ के यौवन के ओर अग्रसर भइल। ओकर यौवन ओही तरह से दिन-पर-दिन पिअराय लागल, जइसे टिकोढ़ा आम के गाछ पर अपना चरम विकासावस्था में पहुँच के पियराय लागेला। एह पिअराय में नायिका का सोबरन सोनहुला काया के बिम्ब भी झलकता। जदि एह कंचन काया पर उतरल यौवन के भोग पति विदेसी के द्वारा ना होई, पति के द्वारा यौवन सुरक्षित ना रह पाई त जुलुमी बेयार यौवन का आम के गाछ पर लटकल रसाह गोपी आम टूट -झहराके गिर जाई। यौवन के सोगहग स्वरुप छितरा जाई।

एह बिम्ब का माध्यम से भिखारी नायिका का मन के बेदना उजागर करत बाड़न। जवन यौवन आ उत्फुल्ल कंचन काया विकसित भइल बा ऊ प्रियतम के समर्पित बा, निवेदित बा। जदि समय से प्रियतम ना आ सकलें त बाहरी असामाजिक तत्व एह यौवन के उपभोग कर लीहें चाहे ई व्यर्थ चल जाई, अकारथ हो जाई। यौवन का विकास के बहुते मजबूत बिम्ब

भिखारी ठाकुर का एह रचना में उतरल-उभरल बा। भिखारी द्वारा प्रस्तुत एगो रसाह बिम्ब के साक्षात्कार करीं-

' तोर नयना गोरी बुनिया मिठाई,
तनी हेनियो चलइहे हमार किरिये। '

नायिका के कटाक्ष कटारी के रसमय मार बुनिया मिठाई के रस में डूबल बा। एह रसमय बिम्ब से हर हिरदय के संवेदना जुड़ा जाई, अघा जाई।

भोजपुरी रतन डॉ. राम विचार पाण्डेय के 'अँजोरिया ' कविता अपने आप में सुप्रसिद्ध बा। पाण्डेय जी एकरा में अद्भुत बिम्ब रचले बाड़न। कृस्न आ राधिका का मिलन के उद्भावना अद्भुत बिम्ब से भइल बा। अधे राति खाँ राधिका के मन में सिरी किसुना के देखेके टिसुना जाग गइल। मनोहर अंगयेष्ठि आ ओहि पर आभूषण के आरोप से राधिका जी अँजोरिया के भावचित्र में उतर के कृस्न से मिलत बाड़ी। कृस्न अपना कृस्नता के कारन अमवसा में प्रतीक बाड़ें। एहिजा अमावस्या आ पूर्णिया के अँजोरिया जइसन प्रतीक से कवि अद्भुत सौन्दर्य बिम्ब के रचना कइले बाड़न -

' टिसुना जागलि सिरी किसुना के देखे के त
आधी रतिये खाँ राधा चलि भइली गुजरिया।
चान नियर मुँह चमकेला राधिकाजी के
चम चम चमकेला जड़ी के चुनरिया।।
चकमक चकमक लहरि उठावे ओमें
मधुरे मधुरे डोले कान के मुनरिया।
गोखुला के लोग एहि देखि के चिहइले कि
राति में अमासवा के उगली अँजोरिया।। '

अइसने एगो अजगूत बिम्ब तब उभरता जब कृस्न अइलीं राधे अइलीं राधे बोल उठलें -

' एनें फूलल कमल ओने चढ़ल अँजोरिया। '

एह बिम्ब में असंगति दोष बा। कांहेकि अँजोरिया में कमल खिलल दुर्लभ बा। लोक विरूद्ध बा। एह से एह अद्भुत बिम्ब से पाण्डेय जी भले राधा कृस्न का रात्रि मिलन के अजगूत रूप-स्वरूप अंकित कर देस, असंगति दोष त एहि में बनले रही।

डॉ. जितराम पाठक के प्रसिद्ध कविता ' रूप ' के आस्वादन रउरा बिम्ब विधान के लक्ष्य से करेके चाहीं। डॉ. पाठक के कविता में बिम्ब के बड़ा सघन समायोजन भइल बा-

' रूप / गांजा ह / आँखि के चीलम लहकाईं / आ पीहीं सभे / जिनिगी भर / जीहीं सभे। '

एह कविता में रूप नीयन सूक्ष्म बस्तु के अभिव्यंजना स्थूल बिम्ब विधान से कइल गइल बा। रूप के व्यंजना बड़ा कठिन बा। ओकर व्यंजना स्थूले के माध्यम से संभव बा। रूप के आख्यान करे खातिर डॉ. पाठक गांजा, चीलम, गंजेरी आदि के परिवेश जीवन के पृष्ठभूमि पर उतरले बाड़न। गंजेरी लोग चीलम पर गांजा चढ़ावेला। सलाई के एगो काठी मारके दम लगावेला आ चीलम से लाफ उठा देला। ओइसहीं जइसे कवनो कंचन काया के लपक पसर जाए। गँवाई जीवन के असरदार बिम्ब एह कविता में साफ-साफ फरीछ आ गइल बा। गंजेरी के जेतना आकर्षण, प्रेम गांजा, चीलम वगैरह से होला, ऊ सब एह भावचित्र में समाहित हो जाता। घुरमुड़िआ के गांजा के लालच में बइठल आ तब तक बइठल रहल जब तक गांजा के कली में हिरदय के लली ना उतर आवस। रूप के चस्का आ गांजा के मस्का बहुते बड़िआर होला। बाकिर दम लाग गइल तब? ' गंजेरी इयार किसके, दम लगाये खिसके।' रूपलोभी कार्यसिद्धि के बाद घसक जालें। एही तरह से - ' रूप रंगनी के कांट ह, रूप साहु के लहना ह, गोरिया के गहना ह ' आदि में बेजोड़ बिम्ब उरेहल गइल बाड़ें स। ' रूप रोपेया के भाई ह ' में रूपाकर्षण ओही तरह से बिम्बित कइल गइल बा जइसे रामचरित मानस में - ' कामी ही नारी पियारी जीमी, लोभी ही प्रिय जीमी दाम। ' में संयोजन बा। दूनों में एके भाव जागृत बा। जवन बाह्य के अपेक्षा आंतरिक अधिक बा। अंत में पाठक जी कहत बाड़ें - ' रूप रोपेया के भाई ह, रूप बबुआ के माई ह।' बबुआ के माई अपना पुत्र के माता के रूप में अपूर्व संघटन बिम्ब विधान से एजवा कइल गइल बा।

पाठक जी का आउर कवितन में एही तरह के बिम्ब विधान लउकी। जइसे -

' सावन साध सहेजि के, चढ़ल टिकुलिया चान।
माखन मन सपना सटल, गोरिया भगल जवान।।'

सावन के माध्यम से एह कविता में साध के अपारता चान के माध्यम से नायिका के सिंगार के प्रति रूचि आ सिंगार से ओकरा सुन्दरता के बढोतरी मक्खन जइसन कोमल मन में जीवन के अनेक रंगीन सपना

के संयोग देखा के नायिका के यौवन सम्भार प्रदर्शित कइल गइल बा।

रामेश्वर सिंह काश्यप के ' भोर ' कविता सांग रूपक आ बिम्ब विधान के अपूर्व संयोग प्रस्तुत कर ता। भोर में अँजोर उतर आवेला। एह स्थिति के बरनन काश्यप जी गोरकी बिटियवा के माध्यम से कइले बाड़न। एह बिम्ब में टिकुली लगावल, तालाब नहाइल, नजर के जादू चलावल, चुनरी के आँचर उड़ावल, नुपुर बजावल आदि द्वारा एगो नायिका के सोबरन पूरहर स्वरूप अंकित कइल गइल बा। एह कविता में अपूर्व आनंदमय मधुर मनोहर बिम्ब प्रस्तुत बा -

' गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पूरूब किनारे तलैया नहा के
चितवन से अपना जादू चला के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ा के
तनिका लजा, तब बिहँस खिलखिला के
नुपुर बजावत किरिनिया के निकलल
अपना अटारी के खोललस खिरिकिया
फइलल फजीर के अँजोर। '

राति के अंहरिया भोर का अँजोर में धूल गइल। अंहरिया खातिर काश्यप जी करियकी बुढ़िया के बिम्ब सजवले बाड़ें। भोर के गोर बिटिउआ अंहार के करिअकी बुढ़िया के डंटलस, धिड़वलस। बुढ़िया तरेगन के गहना समेट के खंडहर में भाग गइल। चंचल बिटिउआ , उत्पाती धिया चिरइन के जगा दिहलस, मुर्गा के डेरवा दिहलस, बदरी के बछरू पगहा तुड़ा के भाग गइल। भोर का पर्वत के सोना बना देता आ अंत में भोर के अँजोर छप्पर पर आइल, ओसारा में चमकल, आँगन में उतरल, कोहबर में सूतल बहुरिया के चिहुकवलस आउर साजन का संगे सटल बहुरिया लाज का लहंगा में लिपट गइल। प्रियतम का बांहि से छोड़ा के काम-धाम के ओर बढ़ल। पनघट के ओर घइला लेके चलल। फजीरे-फजीरे अँजोर केलिगृह में केंकुरल बहुरिया के संवेदनशील बना देता। सास-ननद के लोक-लाज के चादर ओढ़ा देता -

' छप्पर पर आइल, ओसारा में चमकल
चुपके से गोरी तब अँगना में उतरल
लागल खिरिकियन से हँस हँस के झाँके
जहँवा ना ताके के, ओहिजो ई ताके
कोहबर में सूतल बहुरिया चिहुक के
लाजे इंगोरा भइल , फेर चिपके
अपना सजनवा से बंहिया छोड़ा के
ससुआ ननदिया के अँखिया बचा के
घइला कमरिया पर धर के ऊ भागल
जल्दी से पनघट के ओर।'

काश्यप जी का एह कविता में बिम्ब के बड़ा सजोर संजोग जुटावल बा। एह बिम्ब में आनंद के अनुपम महाभोज प्रस्तुत बा। अनेक मधुर प्रसंग के माध्यम से जवन बिम्ब उभारल गइल बा, ओकरा में इन्द्रियजन्य सुख के अलावा आनंद के अपार श्रोत उत्पन्न भइल बा। सांग रूपक के जमीन पर रचल बिम्ब विधान भोजपुरी काव्य भासा के अनुपम उदाहरन बा।

भोजपुरी काव्य में बिम्ब विधान के जोगाड़ बहुत कम लउकता। कारन कि भोजपुरी आलम्बन अपारदर्शी बाड़ें। उनकर स्थिति विशेष बनल रह ता। ऊ विशेष नायक, नायिका भा आलम्बन बन के रह जात बाड़ें। उनकर सामान्यीकरण नइखे हो पावत। सामान्यीकरण ना भइला के चलते आंतरिक भाव बोध के चित्र भा बिम्ब कम उभरत बा।

✍डॉ. जयकान्त सिंह ' जय '
'प्रताप भवन' महाराणा प्रताप नगर,
मार्ग सं.- 1(सी), भिखनपुरा,
मुजफ्फरपुर - 842001, (बिहार)।

उमा

" हे भगवान अब इनको अबहिये ख़तम होखे के रहे...।" जइसही चूल्हा पर कड़ाही रखली, गैस ना जलल त उमा झुंझला के कहली।

सब खाना बनि गइल रहे खाली सब्जी बाकी रहे...दूसर सिलिंडरो नइखे, नम्बर नइखे लागल...अब? आँगन में चूल्हा रहे ओकरा में लकड़ी आ गोइँठा डालके सुलगवली अउर कड़ाही में लेवन देके चूल्हा पर रखली। सब्जी भूँज- भाँज के ढक दिहली , सोचली- "अभी पाके में देरी बा तब-तक तनी किताब उलटी लीहीं, काल्हुये त पहिलका पेपर बा..।"

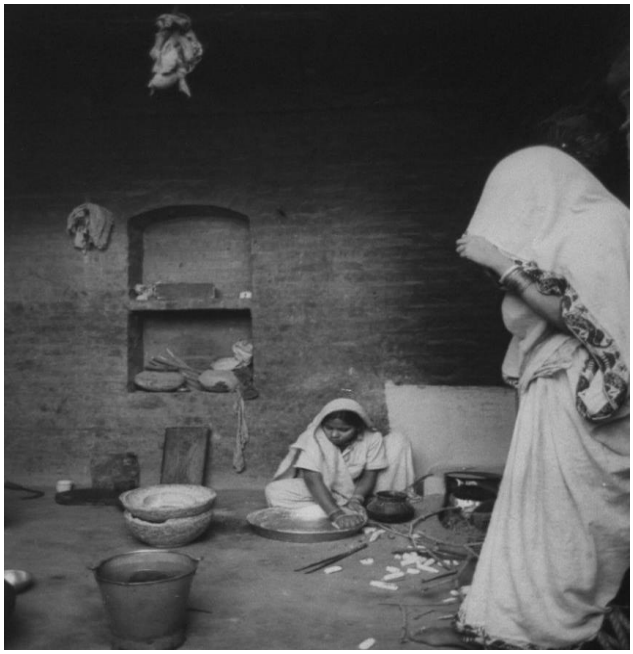

उमा हिंदी से एम.ए करत रहली दूरस्थ विश्वविद्यालय से घर के लोग से छुप के नामांकन करा ले ले रही...दुइ साल पहिले उनकर पति के स्वर्गवास हो गइल रहे नितांत अकेले हो गइल रही। सोचली केहू पर बोझ बनला से निमन बा कि हाथ खर्च ख़ातिर कुछ काम पकड़ लीं ई सोच के कि कवनो स्कूल में प्रयास करिहें।

जइसहीं अपना कमरा में आइके केवाड़ी सटाके किताब खोलली , ओसही बाहर से कुछ आवाज़ आइल- "महारानी गइली रुम में, कलक्टर बनिहें नू... इनका नियन त केहुके राजे नइखे।"

केहू बोलत रहे त कुछ लोग ह- में -ह मिलवात रहे, जतना औरत लोग रहे सास ननद, जेठानी, देवरानी देवर सभे।

अचानक उमा के कमरा के दरवाजा धड़ाक से खुलल। उमा डेरा गइली, सिर झुकल रहल उनकर। उनका आभास भइल कि केहू खिसिया के खड़ा बा...ऊ भसुर रहलन। उनकर भसुर कमरा में आके खिसियाइल आवाज में बोले लगलन ...सुन अब तहार उमर नइखे पढ़े के (का उमरे रहे अठाइस साल?), घर के काम काज देख आ घर मे रह...एने - ओने, मकवड़ा मारे के जरूरत नइखे। अउर न जाने का का? उमा के त लागत रहे कुछो सुनाते नइखे...जेठ के जाते किताब बन्द कइली आ जाके सब्जी उतार के बर्तन धोवे लगली...आज लागत रहे उमा सारा बर्तन आपन लोरे से धो लीहें...।

कइसहूँ बिहान कइली घर के काम काज़ निबटा के जब सबलोग (घर के मर्दाना लोग) अपना काम पर निकल गइल तब उमा बैग उठवली आ चल दिहली, दुइ घण्टा पहिले परीक्षा भवन की ओर ताकि ओहिजवा कुछ समय पढ़ि लीहें... मन मे सोंचली.. उनका चेहरा पर तनिको सिकन ना रहे.. ह एगो आत्म विश्वास जरूर रहे....स्वावलंबी बनेके...

✍इन्दु उपाध्याय

फूलवा

छुट्टी के दिन ऐतवार के ड्राइंग रूम में बइठल ललन पेपर देखत रहन कि काॅलबेल के आवाज कान में पड़ल।उठ के दरवाजा खोललन त गांव के रामदास कहार पर नजर पड़ल।बड़ा सबेरे सबेरे ।आव आव भीतरिये चल आव।बोरवो भीतरही ढुका ल। अतना सबरे कइसे।

रामदास जमीन पर बइठत कहले बड़की मलकिनी एक हप्ता से उदबेगले रही कि पटना जा के ललन के चाउर गेहूं पहुंचा आव।खेती के दिन फुरसत कहाँ बा।साँसो लेवे के समय नइखे मिलत।घामी पड़ल बा देखते बानी।नहरो में भरपूर पानी नइखे आवत।दोन से पटाके जजात बचावत बा आदमी।कसहूं आज समय मिलल हा त पंच बजिया इंटरसिटिया धके भागल आवतानी।सांझ के तीन बजिया शटलवा से लवट जाइब।

ई का करतानी।उठ के उपर चउकिया पर बइठीं। गांव घर के हाल चाल बताईं।

सब ठीकठाक बा।

कवनो नया समाचार ?

नया का कहीं एगो गड़बड़ समाचार बड़ूवे। हमरे टोला के धनेसर भाई के बेटी सुनीतावा पटना एम ए में पढ़त रहे एगो आन जात के साथे पढ़ेवाला लड़िका से बियाह कर लेलस हिया।संउसे गांव थू थू करता।

कवना दुनिया में रहत बाड़ लोग।अब जात पात से उठे के जरूरत बा।पढ़ल लिखल लड़की अपना पसंद से बियाह कइलस ई कवनो जुलूम के बात नइखे।ई कवनो गुनाह ना ह।

रउवा ठीक कहतानी बाकिर गांव में केकर केकर मुँह रोकब।दस मुँह दस बात। धनेसर के गांव में निकलल आफत भइल बा।

पहिले पानी पी ल अभी तक भूखे होखब ना त खरास मार दी।

रामदास नास्ता क के कहलन।खा के दू बजे ले निकल जाइब।

ना । आज रूक जा।काल टेशन छोड़ देब पांच बजे।दस बजे ले गांवे पहुंच जइब। आपन नन्हकी के हाल कह।उहो त कवलेज में चल गइल होई। पढ़े में बड़ी तेज रहे। हमरा से पढ़त रहे जब गांवे रहत रहीं।हम जानत बानी।

फूलवा रउवा के आजो इयाद करे लें।बिक्रमगंज से ग्रेजुएशन ऐही साल कइलस हिया। टीचर ट्रेनिंग कइल चाहतिया बाकिर धनेसर घर के घटना देख के ओकर माई बाहर भेज पढ़ावल नइखे चाहत।हमरो से कहत रहे काफी पढ़ाई भइल अब फूलवा

के बियाह खातिर दउड़ धुप शुरू करीं अगला बैशाख में बियाह कर दियाय।छोटको मालिक से विचार कइनी उहों के कहनी लइकिन के ढ़ेर मन बढ़ावे के ना ह बियाह कर के अपना घरे बिदा कर द जमाना देखते बाड़।

तू का सोचल। तोहार का विचार बा।

पहिले के समय ना रहल।फूलवा से पुछनी त उ अभी शादी खातिर तैयार नइखे। हमहूं चाहतानी टीचर ट्रेनिंग कर लिहित त आगे खातिर ठीक रहित बाकिर पिछले साल बड़की के बियाह कइले रहीं अभी ले माथ पर करजा बा ऐह से फूलवा के आगे पढ़ावे के हिम्मत नइखे होत। रउवा त जानते बानी फूलवा गांवे में सिआई फड़ाई क के आपन खरचा निकाल लेले।कहत रहे चार पांच हजार हाथ में बड़हिस बाकिर बीस हजार अउर एडमिशन में लागी। पहिले से माथ पर करजा बा रवे बताई बेटी पढ़ावे खातिर करजा उचित होई, बेटा रहित त सोचबो करती।राउर का सलाह बा।

रामदास जमाना बदल गइल। बेटा बेटी में अंतर ना रहल।आज बेटी सब उ काम करतारी स जे बेटा करेला।खेत बधार, राजनीति, प्रशासन,युद्ध के मैदान कहाँ बेटी नइखी स।देखला हा नू बबन पांडे के बेटी आगे ना देली हा स कंधों देली हा स।रहल बात फूलवा के पढ़ावे खातिर करजा लेवे के त करजो लेवे के पड़े त हरजा नइखे।देख हम आपन बेटी कंचन के अमेरिका पढ़े खातिर भेजनी हा ओकरा खातिर दस लाख लोन लेनी हा। जानते बाड़ सचिवालय में बाबू बानी कसहूं बढ़िया से घर चल जाला। बेटा-बेटी के पढ़ाई खातिर लोन सरकारों देत बिया ना त हमरो औकात ना रहे।फूलवा खातिर चिंता मत कर पढ़ें वाली लइकी बिया ओकरा पर विसवास कर।दू पुसुत से साथे बाड़,दुख सुख,कारज परोजन में चौबीस घंटा खाड़ रहेल हमरो कुछ फर्ज बनेला।ल हई बीस हजार रूपेया पटने टीचर ट्रेनिंग में नाम लिखा द ओकर। पटना में हम बानी घटल बढ़ल देखब।ई करजा ना ह ,तोहार ढ़ेर करजा बा हमरा परिवार पर जेकरा के चुकावल संभव नइखे।फूलवा हमरो बेटी ह,कुछ फर्ज हमरो त बनेला।

रामदास भोरे गांवे लवट अइलन।फूलवा के चुनाव टीचर ट्रेनिंग खातिर हो गइल रहे । पटना जाके नाम लिखवा देलन।समय जात देर ना लागे।फूलवा ट्रेनिंग में टोप कइलस अउर गांव के हाई स्कूल में आज टीचर बिया। बढ़िया नौकरी के कारण रामदास के ओकरा बियाहो खातिर ना दउड़े के पढ़ल।एक से एक रिश्ता आवत रहे ओकर बियाह खातिर। रामदास बिना तिलक दहेज के फूलवा के बियाह बगल के गांव कचनथ के सुदामा सिंह के लड़िका ,जे डिप्टी कलेक्टर रहे, से बड़ा धूमधाम से कइलन।फूलवा में पढ़े के बढ़े के लगन अभी बाचल रहे।पति ओकरा के समझलन अउर जे सुविधा चाहीं उपलब्ध करवले।फूलवा डिप्टी कलेक्टर के परीक्षा उत्तीर्ण कर गइल।आज सचिवालय में उप सचिव सिंचाई विभाग में बिया जहाँ ललन सेक्सन अफसर बाड़े।बाकिर फूलवा जान तिया आज उ जे बिया ओकरा पिछे ललन बाड़न। ललन के प्रति पिता से बढ़के श्रद्धा आजो ओकरा मन में बा।रामेदास के ना आज संउसे गांव के फूलवा पर गर्व बा।

फूलवा अउर ललन साथे गांव आइल रहे लोग । गांव में ललन के माई के नाम से गर्ल हाई स्कूल खुलत रहे ओकरे उद्घाटन समारोह के अवसर रहे। ललन अध्यक्ष अउर फूलवा मुख्य अतिथि रहे ऐह अवसर पर। ललन गांव के बतवलन कि ऐह स्कूल के खोले में फूलवा के अहम योगदान बा।उ ना रहती त अतना जल्दी मान्यता ना मिलित।फूलवा ऐह अवसर पर पांच लाख के चेक देत ललन से कहली कि स्कूल में हमरो बाबूजी रामदास के नाम से एगो पुस्तकालय खोल दियाय जेकरा से ओह लड़की के भी किताब उपलब्ध हो सके जे खरीद के ना पढ़ सके।उ कहली ललन बाबू के माई हमनी घर के बड़की माई रहली। बाबू के जिनगी उनके छत्रछाया में गुजरल रहे।ऐह स्कूल में बाबूजी के नाम जुड़े से बड़की माई के आशीष हमरो मिलत रही।अंत में गांव के लड़की लोग के स्टेज पर बुला के कहली कि आज लड़की खातिर शिक्षा सब धन से बढ़के बा।युग बदलल तू हूं लोग बदल।

✍कनक किशोर
रांची, झारखण्ड

लोक लाज

सुशीला के विदा करते रामनरेश घरे आ के चिताने धम से पड़ गइलन।माथा के लकीर साफ कहत रहे कि बेटी के हाथ पियर करे अउर ओकरा के बड़का घर में भेजे के खुशी से अधिक गम दू बिगहा खेत बेचला के बादो डेढ़ लाख के माथ पर करजा के रहे। ई कहावत आज ले सुनत रहन रामनरेश कि बेटी के बियाह अउर माई बाप के श्राद्ध बाभन के बिना खेत बेचइले भा करजा के ना होखे। आज ऊ माथे बीतत देख बिसवास हो गइल।

सुशीला के माई अलगे बेटी विदा कर बदहोस रही। साँझ ले मन कड़ा कइली कि घर में हीत नात भरल पड़ल बाड़न, हम अपना के ना संभालब त के सबके देखी? रामनरेश के समझावत कहली- 'उठीं, ई कवनो नया चीज नइखे भइल। समाज के रीत,आपन इज्जत बचावे के कवनो उपाय ना रहे।रहल करजा के बात त दइब देले बाड़े त कवनो उपाय उहे करिहें। लोकलाज बचावे खातिर बहुत कुछ करे के पड़ेला।'

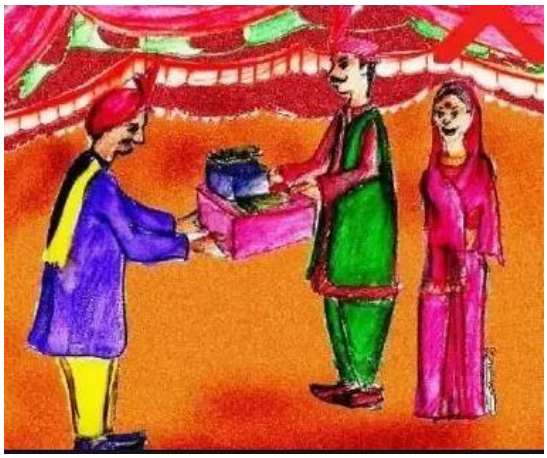

हीत नात के विदा भइला अभी चारो दिन ना बीतल रहे कि रामनरेश के माई हार्ट अटैक से गुजर गइली। रामनरेश के काटS त खून ना। रामनरेश माई के क्रिया करम के व्यवस्था में लाग गइलन।अपना खानदान के इज्जत के मुताबिक बारह गाँव के गोतिया के भोज भात के तैयारी में लाग गइलन। तीन बिगहा बेच के जग पार कइल चहलन।समस्या रहे ना अतना जल्दी केहू खेत के खरीदार मिले ना पाँच लाख के करज देवइया।

खानदान के इज्जत कइसे बाँची? बेटी के बियाह में सुशीला के माई के गहना तक बंधक धरा गइल रहे। कवनो उपाय ना देख एक दुपहरिया रामनरेश लाला जी के दुआर पर पहुँच गइलन। लाला जी के अनुभवी आँख सब समझत पूछ देलस केने चलनी हा?

रउवे भीरी असरा लेके आइल बानी। रउवा से का छुपल बा? ना केहू खेत खरीदार ना करज देवइया।

हमार लोक लाज रउवा हाथ में बा। पगड़ी पैर पर रखत पाँच लाख के जुगाड़ कसहूँ कर देवे के विनती करतानी।

ई का? रउवा जानतानी हमरो हाथ सकेत बा बाकिर रउवा खानदान खातिर त कुछ ना कुछ करे के पड़ी। घर के इज्जत के बात बा। काल फजिरे आइब, दस बिगहा रेहन के कागजात तैयार राखब।खानापूरति क के पइसा ले जाइब। चाची के काम बड़ा धूमधाम से करीं कि बारहो गाँव इयाद रखे।

रामनरेश दस बिगहा रेहन धरके माई के काम बड़ा धूमधाम से कइलन। गया बनारस के पंडित, गोरखपुर के निर्गुण गायक, तीन बिगहा में लागल पटना के टेंट तंबू, बंगाल से मिठाई बनावेवाला,आरा के खानसामा के व्यवस्था के साथे आगंतुक के यथायोग्य विदाई के व्यवस्था भी रहे। खानदान के इज्जत के साथे साथ लोक लाज रामनरेश के बाच गइल रहे। चहुओर रामनरेश बाबू के माई के श्राद्ध के चरचा होत रहे।सभे कहत रहे रामनरेशवा मरद हS मरद।

✍कनक किशोर
राँची (झारखंड)

मर्दानगी

ललनवा हकसले पियसले आ के माई के करेजा में मुँह लुकवा के रोवे लागल।
"काहे बबुआ! का भइल, काहे रोवताड़...?"
" ना माई अब हम खेले ना जाइब... सुमेसर चाचा हमरा के थप्पर मरलन आ कहलन कि तें टुअर हवे अउरी काल्ह से हमरा दुआर प अइबे त तोर गोड़ तूर देब। "
" निस्तनिया अइसे कहलस..? तें रूक, हम तनी आवतानी ओकरा के बुझवा के। "
" का रे सुमेसरा! तोर अतना हिम्मत हो गइल...? ओह दिना खेत में हमार रस्ता रोक लिहले आ आज हमरा बबुआ के टुअर कह के थप्पर मरले... ?तोर नीयत त हम पहिलहीं से जानतानीं। हमरा इहो बुझाता कि ललनवा के बाबू के मरवावे में तोरो हाथ रहे... ।"

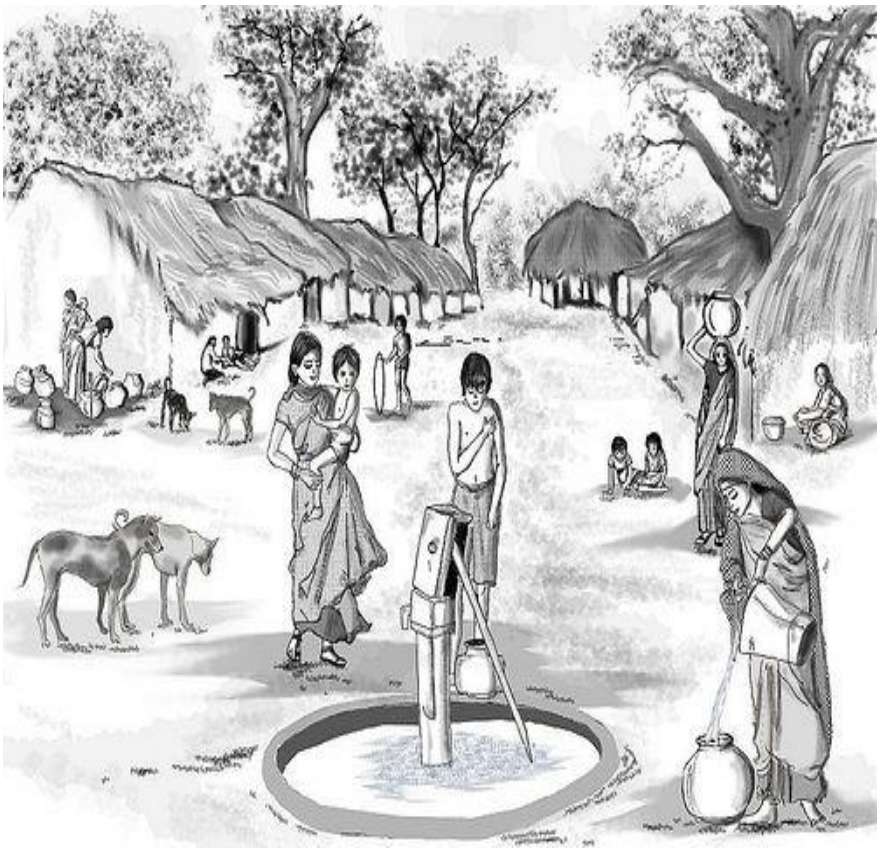

" आरे रामपियारी! काहे खिसियाताड़ू... अभियो कवनो बिगड़ल नइखे। हमार बतिया मान ल... हम तहरा के आ ललनवा के बहुते नीमन से रखब। "
" आरे मुँहझौंसा! तें हमरा के का समझले बाड़े...? तें त का हम केहुओ से दोसर बियाह ना करब। हम साँच प्रेम कइले रही ललनवा के बाबू से... ओकर निसानी ललनवा के साथे आपन जिनगी काट लेब। "
" तहरा के हम गाँव से निकलवा देब। " सुमेसर के अतना कहते रामपियारी के देह में आग लाग गइल। आपन बार खउरा लेली आ लगली चिचिआए," बचाव जा होऽऽ सुमेसरा हमार हाथ पकड़ लेलस... "
गाँव में ओह दिन कवनो खेत के लड़ाई में पुलिस आइल रहे।एगो पुलिस ओला सुन के आ गइल।
" का भइल? "
" देखी ना सिपाही जी, ई सुमेसरा गाँव के लखैरा हमरा के छेड़ता आ सभ लइकिन के नाक में दम कइले बा।"
बहुते अदिमी जूट गइल आ ढेर लइकिन सब भी रमपियरिया के बात प मूड़ी हिलवलीसन। सिपहियो जानत रहे कि ऊ बदमास ह आ मोका देखत रहे। तुरत ओकरा के गिरफ्तार क लेलस। गाँव के सभ लइकी सतसंत हो गइलीसन आउर रामपियारी के मरदानगी प पीठ ठोके लगलीसन कि राक्षस से पीछा छुटल।

✍गीता चौबे "गूँज"
राँची,झारखंड

देवी गीत

तोहरी अँचरिया के सुखवा ए माई
कहनिया अलग अलग बा
छँहिरा के धाक नाहीं धूपवा ए माई
कहनिया अलग अलग बा...।

ले आइल हवा धकिया के चउआई
हमरा बुझाइल कि अब दिन जहुआई
महिमा महान तोहार रूपवा ए माई
कहनिया अलग अलग बा, छँहिरा... ।

आवे नाहीं आँच देलू लागे नाहीं धूर हो
कबो ना नजरिया से कइलू तूँ दूर हो
शीतल स्वभाव तोहार रूपवा ए माई
कहनिया अलग अलग बा, छँहिरा...।

माई छिन्नमस्तिका के केहू का भुलाई
तोहरा बिन अँखिया के लोर ना सुखाई
रखिहऽ बना के आपन पुतवा ए माई
कहनिया अलग अलग बा, छँहिरा...।

✍**विद्या शंकर विद्यार्थी**

हमरा लिखला के जोर का होई

हमरा लिखला के जोर का होई
हमरा जिनिगी के भोर का होई

अनबन होखल ना कोर केहू से
हमरा बखरा के लोर का होई

कदई में अबहूँ गोड़ अटकल बा
हमरा एह हिक के जोर का होई

बरियारा के दाबल लंगी मारल
हमरा असरा के ठोर का होई

नभ के पुरबारा कोर तम में बा
हमरा लसरा के भोर का होई

विद्या शंकर विद्यार्थी

नीड़ इनकर ना रहल

पेड़ सब कट चलल बा
जंगल उजड़ रहल बा
उदास बाड़ी चिरई सभ
नीड़ इनकर ना रहल।

लुक-लुकौवल किरिन के
बिनु बिरिछ त बिपिन में
छाँह कइसे अब मिली
कहूँ पात हिलत ना रहल।

तिनका-तिनका जोर के
खून-पसेना में बोर के
बनल उनकर घर रहे
अब ठाँव ओहिजा ना रहल।

अदिमी के लालच बढ़ गइल
मानुस के दहशत छा गइल
आफत ई कइसन आ गइल
ईमान-धरम कुछ ना रहल।

सोच रहल बाड़ी चिरई
खोंतवा टूटल अब का करीं
गोहार केकरा से करीं
ई होस केकरो ना रहल।

कोइल के कुहकल सून बा
पपीहरा के ना कहीं गूँज बा
बदरा बिना नाहिं मोर नाचे
भोर चहकत ना रहल।

✍गीता चौबे गूँज
राँची झारखंड

सजनिया कईलू रोपनिया ना

जागेला हुलास देखी धान के कियरिया,
दइब जे भइले सहाय।
बस एक पनिया के क दीं मेहरबनियाँ,
धनिया मनावे छठी माय।।

झुमका अबकी के गढ़वा देब,
सजनिया कइलू रोपनिया ना।

मन अगराता दइबे जानसु
अब आगे का होई
गेहुआँ कटनी रोई रोई,
जीव जतन से बोई
पलानी छोड़ छत चढ़वा देब,
सजनिया कइलू रोपनिया ना।

पुअरा बेचब पाड़ी कीनब,
सौख से पोसल जाई
बुचिया होत सेयान जोगवल
जाई पाई पाई
ओकरा के मैट्रिक पढ़वा देब,
सजनिया कइलू रोपनिया ना।

बाबा 'मधुर' किसान के भाषा
भगवन बुझसु भले
बाकी एहिजा नेता नेतुकुड़ी
सोझ ना रहिहें जले
माथे करज काढ़ि मढ़वा देब,
सजनिया कइलू रोपनिया ना।

✍राजकुमार तिवारी 'मधुर'

कुण्डलिया-आ जा हमरे गाँव में

आ जा हमरा गाँव में,शहरे से कुछ दूर।
ठण्डी हवा की वास्ते,हवे जवन मशहूर।।
हवे जवन मशहूर,ताल-बगिया का नाते।
कन्द-मूल-फल-फूल,मिले घर का आहाते।।
ऊँख मिलेला खेत,गरम ताजा गुड़ खा जा ।
अमराई के छाँव,तुहूँ सुहताए आजा ।।१।।

आ जा हमरा गाँव में,जहाँ नदी के तीर।
मउज गाँव में देखि के,मन से हरि जा पीर।।
मन से हरि जा पीर,तबे त धीर बन्हाला।
ताजा बहे समीर,फूर्ति तन में आ जाला।।
मेला लागे गाँव,ठाँव जनि तू बिसरा जा ।
कुश्ती-दंगल देखि ,संहतिया घरवा आजा।।२।।

आ जा हमरी गाँव में , जहवाँ घन बँसवारि।
नइहर सासुर जात के,बहिना दे अँकवारि।।
णढबहिना दे अँकवारि,भेंटि के पँउवें छाने।
नइहर के का लोग,कुकुरवो दूलम माने।
थोरहीं बाँचल रीति,प्रीति के जनि बिसरा जा।
काकी निरखें बाट,मिले उनसे चलि आ जा।।३।।

आ जा हमरी गाँव में,अहुना पाकी कोन।
होरहा खइह खेत में,लागी बहुते सोन।।
लागी बहुते सोन,उहाँ गोन्सारी भूजा।
जेव्नारे परसाद,मिली जब होई पूजा।।
काली के अस्थान,चढावल हलुआ खाजा।
तिहुआरन के धूम ,जानि के गाँवे आ जा।।४।।

आ जा हमरी गाँव में,घूमे खेत-बगान।
माटी के खुशबू मिली,बइठल बीच दलान।।
बइठल बीच दलान, बाति पुरुखन के होई।
गुलगुल्ला-पकवान,भुजाइल मकई-धोई।।
कह मायासमुझाइ,गाँव के भूलल ना जा।
आवे जबे इयादि,फेरु लवटत तू आ जा।।५।।

✍माया शर्मा,
पंचदेवरी,गोपालगंज(बिहार)

बात सगरो जहान तक पहुँचल

बात सगरो जहान तक पहुँचल
दुश्मनी घर-दलान तक पहुँचल

मिट गइल खानदान कतना ले
रार जब आन, शान तक पहुँचल

ऊंट आइल पहाड़ तर देखीं
साँच जब आँखि कान तक पहुँचल

मोल जिनगी कऽ तब समझ आइल
बात जब खुद परान तक पहुँचल

रंग बदलल समाज फैशन जे
बूढ़ लइका सयान तक पहुँचल

कष्ट जिनगी के मिट गइल जइसे
रात चलके बिहान तक पहुँचल

'राज' तोहर ग़ज़ल के खुशबू ई
आज दुनिया जहान तक पहुँचल

✍राज जौनपुरी (राजेश जैसवारा)
सम्प्रति : सहा. अध्यापक (अंग्रेजी)
2/162 एल आई जी, आवास विकास कॉलोनी
योजना-3, झूँसी, प्रयागराज (उ. प्र.)
पिनकोड - 211019

शोभा सिंधु महान की जय

शोभा सिंधु महान की जय, दशरथसुत गुनखान की जय
भरत लखन रिपुदमन समेत, सिय बल्लभ भगवान की जय।

छोट बयस में असुर मारि के, मुनि के यज्ञ करा दिहनीं
खर दूसन हतनीं मरीच के,सागर पार भगा दिहनीं

जनकराज जस वीतराग के,प्रेम पयोधि पिया दिहनीं
अनुपम छवि अतुलित बल धीरज,सिय हिय नेह जगा दिहनीं

कौसल्या के प्रान की जय, सामवेद के गान की जय
भुक्ति मुक्ति के युक्ति बतवनीं, जनजीवन जलयान की जय।

राजपाट तजि मात पिता के,बचन कठोर निबहनीं जी
बन-बन भटकत बन्धु तिया सङ,ओरहन कबो न दिहनीं जी

केवट कोल किरात भील के,पँजरा साटि सरहनीं जी
वानर भालू गिद्ध सिद्ध के, अँकवारी में भरनीं जी

त्रेता के तान वितान की जय, कलियुग कृपानिधान की जय
जूठ बेर के खात सराहत, करुणासिंधु सुजान की जय।

सागर बान्हेनीं रउरा पर, प्रीति-डोर अझुरा जानीं
सीय विरह में रोवत खोजत,खग मृग जीव रुला जानीं

आपन गैर के भेद मिटा के, नाम लेत में आ जानीं
अनुपम छवि दिखला सब जग के,दया धरम सिखला जानीं

निशिचर निकर निदान की जय, सुर नर मुनि के ध्यान की जय
छोटकन पर नित वरदहस्त के, छाया नवल विहान की जय।

युगद्रष्टा अइसन कि देश के, सूतल शक्ति जगा देनीं
वीरव्रती अइसन कि निशाचर, दल बल मारि भगा देनीं

मधुरी बानी विनयशील गुन, सदा रहे दिखला देनीं
लोभ तनिक ना सोनलंक के, जनता के लवटा देनीं

धर्मधुरी ध्रुवमान की जय, संयमसिंधु सयान की जय
रामराज्य में सभे बरोबर, राजाराम प्रधान की जय।

सभके सभका खातिर रहनीं,खोजल केहू आई जी
आपन आपन लोग कहे पर, सभके अपन बनाई जी

कबहूँ गंगा, कबहूँ जमुना

राष्ट्र धरम का गरज परे तऽ, आपन नियम निभाई जी
नीति धरम तप त्याग विराग के, उत्तम पाठ पढ़ाई जी
भारत के कल्यान की जय, राम लखन के बान की जय
जनकसुता जगमातु जानकी, वामांगी वरदान की जय।

✍संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक,सिरिजन।

गीत

कबहूँ गंगा, कबहूँ जमुना,कबहूँ सागर उमड़त सजोर।
अँखियन के इहे कहानी हऽ,बस लोर-लोर, बस लोर-लोर।

खउलत अदहन मन का बासन,बनि भाप परात फफात रहे।
कुछ लोग कहल आँसू ढरकल,कुछ लोग कहल बरसात रहे।
भींजल सनेह बान्हल अँचरा,डूबल धरती के कोर-कोर।

ले लाल आँखि सूतलि सँझिया,गोदी में लुकववलसि रतिया।
बिहनइयो अँखिया लाल रहे,भूललि ना ऊ पाछिल बतिया।
जब घूघ उठवलें देव सुरुज,तब नाम दिआइल भोर-भोर।

केकर सवाँस बा परिखे के,सभकर बा सीमित आसमान।
हुलस बिरह में, सुख में, दुख में,केहि बिधि गगन घटा घहरान!
ताल-तलाई कुँइयाँ भरलसि,भरि गइल जगत के हिय-कसोर।

नेहिए ममता के साथी हऽ,ढरि जाले चरन पखारन के।
तबहूँ पग धूरि सटाइल बा, कुछ हृदयहीन बटमारन के।
'संगीत' सँजो रखले तबहूँ, कुछ नमी दृगन के कोर-छोर।

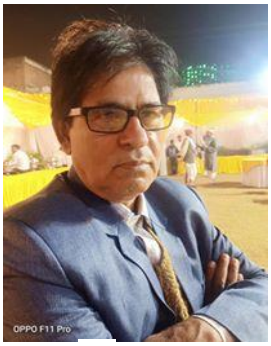

✍संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक,
सिरिजन।

सुख दुःख

सुख बाटे चरदिनहा पहुना आइल बा पहुनाई में
दुखवा लागे घर के लइका बइठल बा अंगनाई में।

अजब सवारथ में दुनिया लसराइल बा
रिस्ता नाता पोरे पोर घवाइल बा
कहवाँ जा के पीर सुनाईं मनवा के
सभ केहू त अपने में अझुराइल बा
जे लउकेला बुड़बक खनिया उहे बा चतुराई में
हरिहर गाछ झुराइल जाता काहे दो पुरवाई में
सुख बाटे .....

दिनवा रतिया रोटी दाल नचावेला
होत फजीरे बरबस उहे उठावेला
अदमी के गोड़े में चकरी बान्हल बा
खाली पेटवा काथी ना करवावेला
कइसन कइसन रंग भरल बा दोकरा आना पाई में
बिन बातन के जंग छिड़ल बा इहवाँ भाई भाई में
सुख बाटे....

कबहूँ त दुइए गो बून गिरावेला
खेतवन के फाटल हियवा तरसावेला
कबहूँ सउँसे गाँव बहेला पानी में
बदरा जब तिनतसिया चाल देखावेला
तब मंत्री के उड़नखटोला नाचे हवा हवाई में
रासन के सामान बटाला भासन के लबराई में
सुख बाटे ....

✍**सुरेश गुप्त,**
पता : गैस लाल चौक, पुरानी गुदरी,
बेतिया (प. चम्पारण)

रिस्ता में बयपार घुसावल बन्द करीं

रिस्ता में बयपार घुसावल बन्द करीं
जिनगी के बाज़ार बनावल बन्द करीं।

झगरा झुगरी बीत गइल, उपटाईं मत
मुरचाइल तलवार पिजावल बन्द करीं।

बिटिहा वाला एतना सब देइए दिहलस
माड़ो के अब बाँस हिलावल बन्द करीं।

नारद बन के भाई के लड़वाईं मत
घरही में घरमार करावल बन्द करीं।

अपने जवना बतिया के समझत नइखीं
अनका के रउआ समझावल बन्द करीं।

मत कवनो झांसा दीं पार उतारे के
लबराई पतवार चलावल बन्द करीं ।

धन दउलत अँखियन के अँखिए में राखीं
जहवाँ तहवाँ लोर चुआवल बन्द करीं।

✍**सुरेश गुप्त,**
गैस लाल चौक, पुरानी गुदरी,
बेतिया (प. चम्पारण)

पात्र परिचय

1.	किसुन	नायक
2.	संजय	किसुन के बेटा
3.	संगीता	संजय के माई
4.	राजेस	खलनायक
5.	सरपंच	गाँव के सरपंच
6.	रमेसर	किसुन के संघतिया
7.	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8.	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9.	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10.	अंजली	टेसलाल के बेटी
11.	परपंच	गावँ के कुटिल
12.	कमीना	,, ,,
13.	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14.	दरोगा	दरोगा
15.	जमुना	राजेस के बाबूजी
16.	बिमला	राजेस के मेहरारू
17.	पारबती	राजेस के माई

18. अन्य अन्य।

दृश्य पाँच

स्थान - राजेस के घर समय - दिन

निरदेस - (आर्गन से तेज हवा चले आ कुकुर के भोंके के आवाज दिआई, जवना से ई लागे एह दिरिस में घटित घटना से समय भी पछ में नइखे, अउरी आदमी कहाँ से होई। राजेस के मेहरारू उनुका माई के आगे आके जइसन - तइसन बरतन में दूगो रोटी झमक के धर देत बाड़ी।)

बिमला - धरऽ ल लिलऽ, तीअन कमें रहे, पहिले बता देत हईं, तोहरा से।

पारबती - का ए बहू रोज हमरे खाए के बेजी सब कम हो जाला। (लोर पोंछत) जहिया से उतरल बाड़ु, तहिया से हमार कवर निहारताड़ु। अनदिनवा के बात त दूर रहल, परबो तेवहार के दूगो कुछउ खाए के देलू, त चार गो बात बोलिए के देलु। तोहार का बिगड़े बानी हम कि तू हमार पेट दागत बाड़ु। एह तरी कतना दिन जीअब हम।

बिमला - आह रे दादा, एहबेर तनिका तिअन कम हो गइल त हम इन्हिकर पेट दागऽतानी। आ जहिया से हम एह घर में उतरल बानी तहिये से इन्हिकर कवर निहारऽतानी। हमार मरद जदि ओह लायक ना रहीत त ई कहिये हमरा के एह घर से उदबास करा देती। बगल के पाँच गो मेहरारू बोलाइब त इन्हिके के बोलिहन सँ आ थूक के जइहन सँ कि का खांेजताड़ु रसमलाई । भला ई उमिर हवऽ रसमलाई ढकेले के तोहार।

पारबती - बोलावऽ, हमहूँ चहते बानी कि पाँच गो मेहरारू आवस। आ आवस त तोहार हमार बोली सुनस आ जे दोसी होखे ओकर दोस निकाल के जास। जे गलती करत होई से सुधर जाई।

बिमला - आड़ा में बइठावल बेहंुडी के दूध कहियो कमे रहता त कहिओ मोट छल्हिये काढ़ल रहता, तोहरे से पुछऽतानी, बोलऽ, ई कुल्ही के करता, हम।

पारबती - पाँच गो मेहरारू अइहें त उहे बतइहें कि केकर देह चिकन बा आ केकर रूखर। केहू के खइलो कहीं छिपेला।

बिमला - बूढ़ बाड़ु त तोहार देह रूखर रही, हमार काहे रूखर रही। तोहार कहे के मतलब इहे नू बउए कि हमार देह चिकन बा, त हम दुधओ पिअतानी आ छल्हिओ खातानी? सुनऽ, खइबु त खा ना त ढेर अपत बतिअइबु नू त आगे के दिहल इहो रोटिया उठाइब आ ले जाके मवेसिन के नाद में डाल देब, खा जइहन सँ। फिर बटोरिहऽ पंचइती। देखब के आई आ आके फरिआई।

पारबती - हई बसिआईन रोटी मवेसिओ ना खइहन सँ, ए बहू। उठा ले जा आ लेजाके देके देख ल, तब तोहरा बुझा जाई कि अदिमी के खाना अदिमी के अइसन ना देबे के चाहीं।

बिमला - गरम रोटी बनि त खइहऽ। घीवो घँस के दिहब, मोलाएम लागी, कंठ ना छिलाई। जात हईं। भनभना आ भनभनाये द माँछी, रोटी पर , बासी लागता तोहरा, करऽ अनाज से नफरत।

पारबती - नफरत हम अनाज से करऽतानी ना तोहरा से। हम त एगो बहू के बेवहार से काएल हईं आ दुःखी बानी।

संगीता - (प्रवेस) बाड़ु हो पारबती बहिन।

बिमला - हँ बाड़ी, बाड़ी ना त कहाँ जइहें । हम इन्हिका पेट के जार देतानी । पंचइती बटोरिहें। तुहूँ आइल बाड़ु त सुनऽ, का हईन पेट के समसेआ। इन्हिका नियन सास के हमरा नियन पतोह गोबर कढ़वावताड़ीन सँ आ गोबर ठोकवावताड़ीन सँ। सेहू त हम नइखीं करवावत। जवन करेली तवन अपने करेली, गोबर काढ़ेली चाहे ठोकेली। खुदे कहेली कि काम ना करीं त रहले ना जाला। जदि हमार मरद इन्हिकर सुनीत त कहिये हमरा के घर से निकाल दिहीत। बाकि ऊ इन्हिकर सुनबे ना करे। आ जनबे ना करे कि ई हमार माई हई। जानेला कि आग लगावन माई हई। मोका से आग के हवा देली, आग सुनुग जाव आ घर लहरे लागे। हूँह .... (झमक के मुँह चमकावत प्रस्थान। पारबती घर के सिकाइत मत होखे थरिया के रोटी अँचरा से छिपावे लागत बाड़ी)

संगीता - का बहिन, बहू का कह के गइली ह। पेट के चीझ अँचरा तरे काहे अन्ह करऽत बाड़ु?

पारबती - (लोर पोछत) का करीं, समइया अन्ह करे के बेबस कइले बा। नइखीं अन्ह करत तबो सिकाइत होई आ देखावतानी तबो सिकाइत। चाहत हईं बहिन कि पेट के चीझ पेट में डाल लिहीं, बाकि (फफक परऽताड़ी) बाकि ओकायी आवे लागऽता ए बहिन । सर के बसाता, ना जाने कहिया के रोटी ह आ हमरा खातिर धइले रही। ई कुकुरो के दिआई त ना सुघिहन सँ। घर के बात कहत नइखीं, करेजा में छिपा लेत हईं हम कि कहीं बेटा सुनी त बहू पर हाथ उठा दिही। सोचऽतानी अइसन मत होखे। जब बहू के बुझा जाई कि सास से अइसन बरताव ना कइल जाला त अपने राहता पर आ जइहें।

संगीता - तू एगो सास बाड़ु कि सरनाइन बसिओ रोटी खाके बात तर डालल चाहऽताड़ु आ ऊ एगो बहू बाड़ी कि कुछ सोचते नइखी। सोच के आइल रहीं कि तोहरा लागे बइठब आ कुछ बतिआइब। बाकि बहिन हम त तोहरा दःुख में गोता गइलीं। भगवान करस कि केहू के अइसन पतोह के लगन मत होखे आ ना अइसन पतोह मिलस। आ मिलस त सीता सबितरी नियन ऊँच खेआल के मिलस। पढ़ल मिलस चाहे अनपढ़ मिलस, मिलस बाकि बड़ बिचार के मिलस। सास के मुँह निहारस त ससुर के पएर तिकस। भोरे नेहास त तुलसी में एक लोटा जल देस आ सांझ के गोड़ हाथ धोअस त दीया बाती करस। अइसन एह से कि हमनी के रीत संस्कार के महक कुछ अउरी होला।

जमुना - (प्रवेस) आइल बाड़ु का ए बड़की भउजी?

संगीता - हँ आइल बानी आ अब जातो हईं।

जमुना - (कुरसी पर बगल में बइठत) अपना गोतीन से दुःख - सुख बतिआ लिहलु आ हमरा से ना बतिअइबु?

संगीता - काहे ना बतिआइब, बाकि जवन दुखवा - सुखवा इन्हिकर बा तवने त तोहरो होई।

जमुना - तोहार अंदाज सहिये बा ए भउजी। हम करीं त का बात करीं दहिना हाथ काटत हईं तबो तकलीफ आ बाँया काटत हईं तबो दुःख। लाचार बानी हम अपना बेटा आ पतोह से। जान ल भउजी कि एक से एक मोसिबत आइल सब सह लिहलीं, बाकी एको धूर खेत ना बेचली,ं ना रेहन धइलीं कि बेटा आ पतोह के दुःख होई। बाकी अब हमनिये दुनों बेकत के दुःख होखे लागल। अउरी केहू से ना बतायीं भउजी बाकि तोहरा से हम का छिपायीं अपना बेटा आ पतोह के बेवहार। घर के बात बहरी जन जाए, करेजा में दबा के जीअत हईं। लोग कहेला कि देहात के लोग कठजीव होला, त तुहीं बतावऽ भउजी केहू साधे कठजीव होला। खाए के मिलता आ कठजीवे बन के जीअत हईं सँ हमनी के। बाकि .... बाकि अब बरदास नइखे होखत भउजी।

पारबती - देहात के निस्छल बाप - महतारी कोठिला के भूसा में रकम पताई सच के धरेला कि आगे दिना कामे आई बाकि .... बाकि अब अरमान के धइल रकम पताई में घून लाग गइल। (फफके लागत बाड़ी) पतोह के जवन ना ताना देबे के चाहीं तवन देत बिया। ना होखे त घर छोड़के कहीं चल चलऽ।

जमुना - ना घर छोड़ के कहीं ना जाइब।

पारबती - ई काहे? अपने साथे हमरो के खइला बिना तुरबऽ आ तूरके मुअइबऽ?

जमुना- ना, ना तुरब, ना तुरके मुआइब। एह से कि मौनता के औजार से दुराचार जोरे हमार जंग जारी बा। तू एह जंग में हमार साथ द। हम बदलाव चाहत हईं, सामाजिक बदलाव आ लोग के मानसिक बदलाव।

पारबती - बदलाव चाहे ओला के हम स्वागत कर हईं।
धीरे धीरे परदा गिरता

दृश्य छव

स्थान - किसुन के घर समय - दिन

निरदेस - किसुन अपना काम में बेअस्त बाड़न।

राजेस - (पुकारत) किसुन चाचा बाड़ऽ हो?

किसुन - हँ बानी, आवऽ कहऽ का कहऽताड़ऽ।

राजेस - दोसर का कहब, हम तोहरा केे ढेर दिना से इसारा करत रहीं कि चाचा चेतऽ, बाकि हमार कहल सुनलऽ ना। हम एहबेर ई कहऽतानी चाचा कि समय अब बहुत नगिचा गइल बउए तँू अपना गवत के बनबस कर ल। काहे कि कपार पर पानी चुवे लागेला त अदिमी के अवहे लागेला आ जिनिगी कुफुत में पर जाला, जान ल चाचा, सब तरे से घेरा जाला, अदिमी।

किसुन - (खिस में) राजेस ..... (प्रति ध्वनि दिहल जाई)

राजेस - आगाह करावे ओला पर लहकल ना जाला, चाचा। संजय के दोसर राह अपनावे से पहिले तूँ कवनो उपाय ना करबऽ, त आपदा में आन केहू के ओरिओ तर त तोहरा जगह ना भेंटायी, कि ठाड़ रहबऽ। चाचा, जवन बेटा के उमेद करऽताड़ कि कामे आई, साथ दिही, मोसिबत में आँटी त ऊ उमेद मन से निकाल द आ अँजलिओ के साथ के आस तूर द। कारन कि उहो तोहार ना होइहें।

किसुन - अँजली हमार होइहें। हम उन्हुका में गुन देखले बानी ना अवगुन बस देखले बानी त एगो इन्सान के बेटी आ समय के चाह।

राजेस - आ एह से कि तू उनुका अंग में अपंग के खेआल ना लेअइलऽ आ बहू बना लिहलऽ?

किसुन - राजेस, एगो नारी के उपहास कइल, हम बरदास ना करब, ई जान ल।

राजेस - (हँस के) ई कवनो जरूरी नइखे चाचा कि जेकर तू उपकार कइले बाड़ऽ उहो तोहार भार ढोई। ऊ बेचारी त अपनहीं बिकलांग बिया, ओकरा पर तूँ आपन बोझ काहे डाले के तइयारी में बाड़ऽ?

किसुन - जा जा, संजय हमार कहल ना करिहें आ अँजलिओ बोझ ना ढोइहें, ना करिहे आ ना ढोइहें, उहो हम देखब। हमार फिकिर लेके तू काहे जँताइल बाड़ऽ?

राजेस - केहू मानी चाहे ना, चाचा के चिंता त भतीजा के कइल सुभाविक बा। उहो एगो गाँव में रहके। चाचा, संजय जब तक तोहरा दरबा में रहत रहन तब तक तोहार पोस मनले रहन अब ऊ तोहरा दरबा से बहरी बाड़न। एहू बात के त अपना भीतर खेआल लेआवऽ .....।

किसुन - अउरी बोलत जा सब सुने के तइयार बानी, हम।

राजेस - सनसार के अउरी बेटा नियन ओकरो हवा लाग गइल बा। ऊ आपन खाता अपना दुनिया में रमता। तोहरा दुनिया से ओकरा कवनो वास्ता नइखे। सिरिफ तोहरा दुनिया के तोहरा जरूरत बउए। तोहरा भलाई खातिर तोहरा के इहे हम समुझावत बानी।

किसुन - (बेअंग) समुझावताड़ऽ कि तूँ हमरा के चरावताड़ऽ?

राजेस - (मुसका के) समुझावतानी चाचा। चाचा, तोहार संजय तोहरा से बिना अनुमति लिहले एहबेर मसुरी गइल बाड़न, उहो आपन दाम्पत्य जीवन के खुसी मनावे, तोहरा पता बा। पता बा तोहरा कि ऊ अब आजाद पंछी हो गइल बाड़न आ तोहरा अइसन बाप के अनुमति के कवनो जरूरत नइखे उनुका। पता बा तोहरा कि बाप महतारी के जरूरत नारा बान्हे तक रहेला बाद में बेटा अपने बान्हे लागेला। पता बा तोहरा होटल के चाय से घर के चाय बेकार लागेला। (हँस के) ह ... ह .... ह .... सब कुछ कइलऽ चाचा बाकी पुआर के गाँज पर गिरहस्त होके मोजर धइल भूल गइलऽ।

किसुन - (गरमा के) राजेस ....।

राजेस - तोहरा त पता होखे के चाहत रहे चाचा कि धान के गाँव पुआर से चिन्हाला। पुआर के मतलब ओह गाँव के परतिस्ठो से लगावल जाला आ इहो जानल जाला कि ऊ गाँव सब तरे भरल पुरल बाटे। (कटु ब्यंग) चाचा, तब तोहरा पता ना रहे कि पछिम के हवा कइसन होला?

किसुन - रजेसवा तें हमरा से हमरा बेटा के मति फोर दिहले, खेत के फसल लहलहाये से पहिले मोहानी काट के हमार खुसी के खेती डूबा दिहले, ना सोहाइल तोरा हमार सुख रे।

राजेस - ना चाचा ना, तोहार बेटा के फोरले नइखीं बलुक मति फेर दिहले हईं, हम। तोहरो जाने के चाहीं चाचा कि घर से निकसल रहता सहर जाला, घर से अदिमी सहर जालन आ जब अदिमी सहर जालन त सहरे उन्हुकर दुनिया हो जाला। डिबिया अइसन गाँव के दुनिया तेआग देला लोग।

किसुन - सहर से लोग गाँव आवेला। गाँव के माटी लोग के बोलावेला। बाप के अरमान त महतारी के ममता गोेहरावेला। नइखस जानत त जान ले। तें आपन सोच बदल सोच।

राजेस - तोहरे अइसन बाप के नाम गँवार दिआला। बिस्वास के मुधी में हाथ फँसइले बाड़ऽ त फँसइले के फँसइले बाड़ऽ। आज के जमाना में भला हेह तरह के अदिमी होला।

किसुन - (खिस में) रजेसवा, हमरा तोरा पर बिस्वास ना रहे कि तँू हमरे बड़ेरा पर चहड़के हमरे अहित करबे।

धीरे धीरे परदा गिरता।

बिद्याशंकर बिद्यार्थी

(शेष अगिला अंक में)

भय बिनु होत न प्रीत

तुलसी बाबा अगमजानी रहनी। उहाँ के हमनीं के देश के आदमी के सुभाव से नशे-नश वाकिफ रहनी, तबे त हजारो बरिस पहिलहीं लिख गइनी- "भय बिनु होत न प्रीत। " दुनियाँ भर में कोरोना महामारी के संक्रमण के रफ्तार जंगल के आगि नियन लपकत सरपट भाग रहल बा। अर्थ ब्यवस्था के दम उखड़ गइल बा ऊ हाँफ रहल बिया। कल कारखाना भी आपन सबसे खराब दौर देखे के मजबूर बाड़ें। केतने लोग के रोजी-रोजगार खत्म हो गइल बा भा ओकर रफ्तार बहुते धीरे बा, लोगन के बेरोजगारी के दंश झेले के मजबूर होखे के पड़ता। कुछ लोग के नौकरी पर संकट के बादर घहराइले बोलता। धंधा मंदी के मारे रेंग भर रहल बाड़ें। केतने जगह पर लागल ताला अब ले खुलल नइखे। उम्मीद नइखे कब ले खुली ।

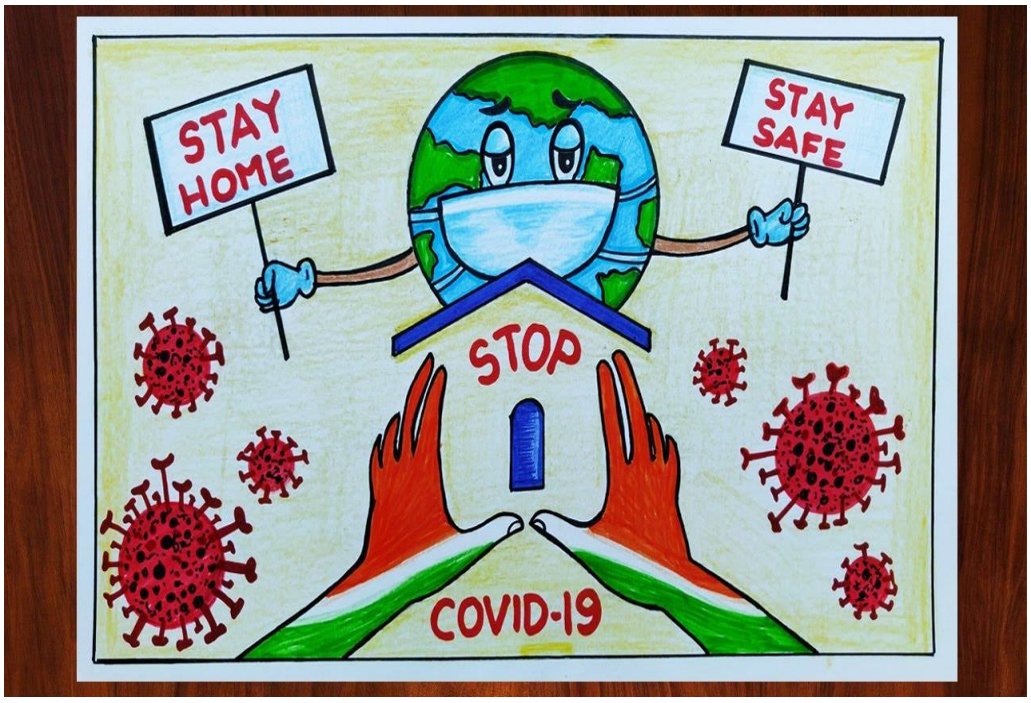

शहर में घटत रोजगार के चलते दिहाड़ी मजदूर रेहड़ी पटरी स्वरोजगार करे वाला कामगार के पलायन गाँव की ओर भइल बा। लेकिन गाँव कहाँ सक्षम बा सभके रोजगार देवे खातिर ? रहित त लोग गाय गुरु नियन शहर में जिनिगी ना काटित। जे गइल बा उहो खेतिए पर निर्भर बा। सरकारी सहायता ऊँट के मूँह में जीरा साबित हो रहल बा। असली जरूरतमंद के लगे सहायता पहुचते नइखे शासन के नुमाइंदन के बीचे में बंदर बाँट हो जाता। जमीनी स्तर पर खाली खानापूर्ति भर हो रहल बा। सहायता के बढहन हिस्सा भ्रष्टाचार के भेंट चढ़ जाता।

स्वास्थ्य सेवा खातिर नामी-गिरामी देश एह महामारी में आपन नागरिक के सुरक्षा करे में हाँफ रहल बा, हमनीके देश में त पहिलही स्वास्थ्य सेवा राम भरोसे रहे। सबके उपलब्ध त नहिये रहे। अब त स्थिति दिन-ब- दिन बद से बदत्तर होत चलल जा रहल बा।

जिनिगी चलावे खातिर पइसा चाहि आ ऊ आई रोजी-रोजगार नौकरी काम धंधा से। सरकार क दिन लॉक डाउन राखित मजबूरी में ओके कुल्हिये धीरे-धीरे खोले के परता। एह बीमारी से सुरक्षा के जरूरी उपाय के बारे में बता के जिनगी के पटरी पर ले आवे के कोशिश में लागल बिया सरकार। लॉक डाउन के सफलता से सरकार के लागल कि जन साधारण स्थिति के भयावहता के समझ गइल होखीहन ।

लेकिन जमीनी सचाई कुछ अउर बा। कोरोना से बचाव के प्रति हमनीके केतना सजग बानी जा ओकर अंदाजा एही बात से लगावल जा सकत बा की देश के अउरी राज्य सरकार के साथे-साथ झारखण्ड सरकार के मास्क नाहीं लगवला सोशल डिस्टेंसिंग जइसन उपाय के अनदेखी कइला पर एक लाख के जुर्माना अउरी दू साल के जेल के कानून बनावे के परल।

खबर पिछला दिन मीडिया के सुर्खी बनल। ऊ जवना में रहे कि मंत्री जी के मास्क ना लगवला आ कोरोना से सुरक्षा के उपाय के अनदेखी कइला के चलते जुर्माना भुगते के परल। कहे के मतलब ई बा कि का आम का

खास सभे कानून के माने में लापरवाही बरतता आ सबसे प्रशासन जुर्माना के राशि बसूल कर रहल बिया । सभकरा पाछे पुलिस लगावल सम्भव नइखे । जुर्माना से खजाना भरे के मंशा नइखे सरकार के, मकसद बा जागरूक क के जान के रक्षा कइल ।

सरकार त खाली स्थिति के भयावहता के प्रति सचेत कइल चाहतिया। हमनीके समझे के परी मास्क लगावल, सोशल डिस्टेंसिंग के पालन कइल, बेरी-बेरी साबुन बा सैनीटाइज़र से हाँथ धोबल, सार्वजनिक स्थान पर ना थूके के सरकारी आदेश हमनी के भलाई खातिर ही बा एकर पालन कइल हमनी के कर्तब्य के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारियो बा।लेकिन लोग एकरा के गंभीरता से लेते नइखे देश में बढ़ रहल जुर्माना के संख्या एह कड़वी सच्चाई के नटई फार के चिल्ला-चिल्ला के बयान कर रहल बा। दिन प दिन स्थिति भयावह से भयावह होत जा रहल बा। जगह-जगह बेरी-बेरी से लॉक डाउन लगावे के परता कहीं हफ्ता में दू दिन त कहीं १०-१५ दिन खातिर।

कोरोना संक्रमण में हमनीके देश पूरा दुनियाँ में दूसरका पायदान पर पहुँच गइल बा। रोजे-रोज कोरोना पॉजिटिव के संख्या पिछला दिन के रिकार्ड के तोड़त नजर आ रहल बा। स्वास्थ्य बेवस्था बिल्कुल चरमरा गइल बा। जब ई बात साफ़ हो गइल बा कि सुरक्षा मानक के पालन क के ही एह महामारी से बाँचल जा सकता दोसर कवनो इलाज़ अभी ले इज़ाद नइखे हो पावल। एकर समझल हम आप सभकर नैतिक जिम्मेदारी बा।

लागता की लॉक डाउन के हटते ही हमनी के गंभीरता खत्म हो गइल बा। कुछ लोग के लागता की सबकुछ समान्य हो गइल बा। साफ़ शब्दन में कहल जाव भा अपना से पूछे के समय आ गइल बा कि हमनी के अंदर सभ्य नागरिक के योग्यता बा का ? अगर बा आ हमनी के सभ्य नागरिक बानीं जा त संक्रमण के संख्या हेतना तेजी
से बढ़बे ना करीत।

एक बात समझ से परे बा कि हमनीके अपने जान के बचावे में गंभीर काहें नइखी जा ? हमनी के लागता "बै हमरा कोरोना ना होई" काहें जी का आप एह समाज में ना रहिना। केहू के सम्पर्क में ना आई ना का ? पता ना काहें हमनीके ई मानसिकता बन गइल बा की कानून के डर से ही हमनीके कानून के मानेनी जा। जुर्माना के डरे भले नियम मान लिहल जाव लेकिन अपना मन से त कतई ना।

समाज के छोड़ दिहिं अपने प्रति अइसन रवैया काँहे ? अपना खातिर त सोंचही के चाहीं। आपन जान के सुरक्षा अपने हाँथ में बा अगर केहू जान के उफ्फर परल चाहता त ओके के बचा सकत बा कवनो देवता भा कवनो कानून नइखे बचा सकत। सरकारी जुर्माना भा सजाय से ही हमनीके हिया में डर के लहर दउरेला पुलिस के डंडा के भय ही मजबूरी हमनीके कानून के माने के बाध्य करे ला।

आखिर कब तक हमनीके लॉक डाउन के चंगुल में फँसल रहल जाइ। कन्टेनमेंट जोन भा कर्फ्यू वाली स्थिति भी काहें आवो ? हमनीके थोरकी-सा सजगता से जब एह बेमारी से बचल जा सकत बा त सब कुछ ठप्प करे के हालत काहें पैदा कइल जाव ? आखिर हमनियो के आपन परिवार, समाज, देश के प्रति कवनो जिम्मेदारी बा की ना ? हमनीके तनिका सा लापरवाही के खामियाज़ा सभके भोगे के परी। रउरा अंदर एह बीमारी से लड़े के ताकत हो सकत बा लेकिन राउर घर के बड़ बुजुर्ग के लगे इ ताकत ना होखे ? उनकरा खातिर सावधानी बरतल जरूरी बा। अपना बाल गोपाल लोग खातिर सावधानी बरतीं।

जब हमनीके आपन दायित्व के प्रति सजग हो जाइल जाइ , सुरक्षा मानक के डर से ना मन से अपनावल जाइ तबे एह बेमारी से निजात मिली। हमनीके छोटी चुकी समझदारी सहयोग समूचा समाज खातिर हितकारी होइ । मन में बिठा लिहल जाव "सावधानी हटी दुर्घटना घटी " "दू गज के दुरी मास्क बा जरूरी"। सावधान रही स्वस्थ्य रही ब्यस्त रही।

✍तारकेश्वर राय "तारक"
सोनहरिया, गाजीपुर
उत्तरप्रदेश

बाबूजी ! बाबूजी !

'का हो ।'
उठीं त , देखीं के आइल बा?'
'के आईल बा ?'
'पापा हम हईं -- मुन्नी (माया)।'
आ। (भरल गला से)'मुन्नी?'
'हँ पापा । हेने का ओर मुंह कर$। उठ$।'
बाकी पापा उठे में असमर्थ रहलें ई देखके पापा में पहिले कतना फुर्ती रहे कि ....अउर आज.....?
उमिर के पड़ाव पर बिधना जवन विधि राखे...

उठते पापा हमरा के देखिके रोवे लगले।
लोर गिरता आ पूछतारे कि ठीक बाड़ू नू ?

भाभी अउर हम मिलके पापा के चौकी पर से उठा के बइठवनीं जा।

(जवन पापा होत भोरे उठि के, नहा धो के लगिहें शिवजी के (मंदिर में) नहवा धोववा के, मंदिर धो के,उहाँ के चंदन टीका करके घर आके हमरा के अउर भइया के जगावे , ई कहत कि हतना देर ना सुतेके चाहीं) आज उहे पापा के हिम्मत जबाब दे देले रहे।

पापा के इयाद से ही पूरा दिन रोवते जाला त ओह दिन त अइसन अवस्था मे देखनीं त ना मन मानता अउर ना लोर रुकता।

बाकी आवाज मधिम ना कइनीं हम।
'हँ।पापा ठीक बानीं जा।तहार आसीरबाद बा।'

'पाहुन ठीक बानी नू? आ बबुआ लोग ?'
तले इहों सब गोड़ लगनी जा।

(हाथ उठा के आसीरबाद देले अउर बबुआ लोग के ओर तकले)

इहनलोग के देखते उनकर चेहरा पर एगो छोट मुस्कान आ गइल।

हमरा पास शब्द ना रहे कि कुछ बात करीं।
बस नइहर में बितावल हर एक छण इयाद आवत रहे।अउर नजर खाली पापा के देखत रहे।

अतने में भाभी दूध रोटी लेके अइली।
'बाबूजी खाना खा लीं।'
'ना हो मन नइखे करत।'
'काहे नइखे मन करत बुची के अइला के खुशी में ?'

(भाभी द्वारा माहौल के बदले के कोशिश रहे)
पापा तनी हँसले।

भाभी दूध रोटी मिला के अपना हाथ से लइकवन नियन खिआवे लगली।खिअवला के बाद कटोरा में पानी ले के मुँह धोवली ,तौली से पोछली।

(पापा के हाथ पैर काँपत रहे।कुछ कर ना सकस।बस खाली बइठस)
उनकर सब दैनिक काम भइया भाभी करस।

(कबो हम एगो फोटो में इंसान के जीवन चक्र देखले रहनीं।अंत मे इंसान के लइका रूप में देखावल गइल रहे जवन आज हमरा के देखे के मिलल)।
पापा के जगह भइया भाभी लेले रहले लोग आ भइया के जगह पापा !

ई सब देखके मन ही मन एगो सवाल उठल कि आज भाभी एहिजा बाड़ी तब्बे नू ऊ हतना देख भाल करतारी ।एकरा खातिर हम चाहि के भी ना आ पइतीं। काहें कि हम बिआहल बानीं त हमार दोसर घर परिवार हो गइल बा । जेकरा खातिर हमार कर्तव्य एगो अलग रूप मे बन जाता।ए से एगो पतोह भइल भी गर्व के बात बा।

लइकी के कइ गो रूप में रहे के पड़ेला। कबो बेटी रूप ,कबो बहिन ,कबो पत्नी ,कबो पतोह ,कबो माँ ,कबो सास।अगर सभ रूप आपन आपन कर्त्तव्य करी त कबो केहू के परेशानी ना होई।रिश्ता बहुत सोच समझ के बनावल गइल बा अउर सबके आपन आपन कर्त्तव्य भी निर्धारित बा।बस कर्म कइल हमरा हाथ में बा।

✍**माया चौबे**
तिनसुकिया असम

हम इश्क़ करीं

तूँ रहिहऽ भरमइले जे हम इश्क़ करीं!
परछाई के जइसे जे हम इश्क़ करीं!

सब चूरन बटले बा वचन के पुड़िया में,
के बाटे हो खइले जे हम इश्क़ करीं!

ननदी से दुलहिन पूछे कलकतवा से,
कब ले भैया अइहें जे हम इश्क़ करीं!

ऊ तऽ दोसर के धुन पर नाचेली नऽ,
हमरो लिक्खल गइहें जे हम इश्क़ करीं?

छन में लभ के झोंक दिहल जे चूल्ही में,
ऊ तरक़ीब बतइहें?जे हम इश्क़ करीं?

छत पर बइठल तरई गीनल करीलां,
अब ऊ जलसा नइखे जे हम इश्क़ करीं!

✍अतुल कुमार राय
ग्रा.+पो.-मूर्तजीपुर
जिला-गाजीपुर(उत्तर,प्रदेश)

बिटिया (पूर्वी)

काहें तु डेराल सैंया बिटिया के अइला से ।।
काम नाहीं चली अइसे छोड़के परइला से ।।
बिटिया के पीरा हमरो कम नइखे बेटा से
जइब दुरदुरावल जब हट जइब हेठा से
हट जइब हेठा से
मिली ना पतोहिया कवनो महल बनइला से ।।
काम नाहीं चली अइसे छोड़के परइला से ।।
देखऽ सरकार तोहरा पीछे पीछे धावता
बिटिया के बढ़े खातिर मंतर बतावता
मंतर बतावता
बढ़ जाता इज्जत सैंया बेटी के पढइला से ।।
काम नाहीं चली अइसे छोड़के परइला से।।
चानी पो के बार जहिया तोहरो नोचाई
ओही दिन धीयरी के इयाद तोहरो आई
इयाद तोहरो आई
बबुआ बेलावत बाड़े ठठरी सुखइला से ।।
काम नाहीं चली अइसे छोड़के परइला से ।।
रसिक बाबा कहतारे जिनिगी के राज हो
काल मेड़राता जागऽ नयका समाज हो
नयका समाज हो
सगरो आन्हार होई दीयरी बुझइला से ।।
काम नाहीं चली अइसे छोड़के परइला से ।।

✍**कन्हैया प्रसाद रसिक**

जब मंत्री बनि जाइब

अबहीं छूँछे बेरहिन खा लऽ,
तियना पाछे खइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

कीन बेसह के सात पांॅच,
साझा सरकार बनाइब।
करेब घोटाला थैंथरई में,
लाज के भी लजवाइब।।
भीतर हम सरकार में,
तूँ बाहर मिरदंग बजइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

होत फजीरे चमचन के,
जनता दरबार लगाइब।
चोर डकइतन बटमरवन से,
रोज कमीशन खाइब।।
तुहूँ हीक भर खइहऽ,
आपन हीत-परित खिअइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

नहर खाँढ़ पोखरा इनार,
सभ कागज पर खोनवाइब।
सड़क में गड़हा ना रहि जाई,
चीप चाप सटवाइब।।
उड़नखटोला पर सवार,
हो के तूँ नइहर जइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

कहीं सुखार कतहुँ दहार के,
भरमन पर हम जाइब।
फंड रिलिफ के राशन खा के,
लमहर तोन फुलाइब।।
दुखियन के सोझा जा के तू,
घड़ियाली लोर बहइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

छुट दे दिहब अधिकरियन के,
लूट खूब मचवाइब।
गपचि फंड हम हर विभाग में,
लाल बत्ती जरवाइब।।
नवलाखा तब हार पहिर तूँ,
झमकि झमकि झमकइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

कस्टम अफसर के भिनुसहरे,फोनवे पर धमकाइब।।
बान्हल बा नब्बे हजार,अब लाख टका करवाइब।
पेरिस से जूती मँगवइहऽ,लन्दन शाल धोवइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

भोट के जब नियराई,
तिकड़म कवनो नया लगाइब।
भेस बना साधु मुल्ला के,
धरम जाति बँटवाइब।।
बोगस हम करवाइब,
तू इवीएम बदली करवइहऽ।
जब मंत्री बनि जाइब धनिया,
तब मुरगा रोज उड़इहऽ।।

✍अरविन्द श्रीवास्तव
एकमा, सारण (बिहार)

भोजपुरी:हमरा माटी के गमक

भोजपुरी भासा के लेके रोज कुछ ना कुछ लोग प्रयास करि रहल बा। चलीं एही बहाने भोजपुरी पर कुछ बात कइल जाव। अगर भोजपुरी शब्द पर विचार कइल जाव त एह शब्द के पहिलका प्रयोग सन 1789 में प्रकाशित रेमंड के पुस्तक "शेरमुताखरीन" के अनुवाद के दुसरका संस्करण के भूमिका में मिलेला। कहल जाला कि राजा भोजदेव (सन 1005-55 ई.) के नाम पर भोजपुर के नामकरण भइल। एह शब्द के प्रमाणिकता खातिर जार्ज गिर्यर्सन,उदय नारायण तिवारी आदि लोग बहुते काम कइले बाड़ें। कुछ लोग एह लोगन के मत से सहमत ना भइलें ।ओहमे दुर्गाशंकर सिंह नाथ आदि के नाम लिहल जा सकेला। कुछ लोग एकरा नामकरण के वेद से जोड़ेला,जवना में रघुवंश नारायण सिंह ,जितराम पाठक ,अउरी डॉ.ए.बनर्जी के नाम के उल्लेख कइल जा सकता।

कुछ लोग भोजपुरी के नामकरण के संबंध कन्नौज के राजा मिहिरभोज से जोड़ के देखेलें।,जवना में पृथ्वी सिंह मेहता आ परमानंद पाण्डेय के नाम लिहल जा सकेला। एह भासा के नामकरण में राहुल संकृत्यायन के नाम लिहल जाला,बाकिर ऊ भोजपुरी के दू गो भाग में बाँट के 'मल्ली'आ 'काशिका'नाम दे दिहलन। भले उनका नामकरण के ना मानल गइल। काहे कि तब तकले भोजपुरी नाम प्रचलन में आ गइल रहे।

भोजपुरी के केहू संस्कृत से त केहू मागधी से आ केहू प्राकृत अउरी अपभ्रंश से उपजल बतावेला। जवन भी बात होखे ,बाकिर भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सगरी भोजपुरी इलाका हिंदी क्षेत्र से बाहर पड़ेला। एकर समर्थन गिर्यसन ,उदय नारायण तिवारी आ सुनीत

कुमार चटर्जी भी कइले बाड़े ।भोजपुरी हिंदी के अपेक्षा बंगला, उड़िया आ असमिया के नजदीक बिया ।भोजपुरी त लिपि साम्यता के चलते हिंदी के करीब आ गइल। एकर त आपन खुदे बड़हन क्षेत्र आ भूभाग बा,जवन बिहार के सारण,सिवान,पूर्वी चंपारण,पश्चिमी चंपारण, गोपालगंज, भोजपुर, बक्सर, सासाराम, भभुआ, उत्तरप्रदेश के बलिया, आजमगढ़, देवरिया, कुशीनगर, वाराणसी, गोरखपुर,महाराजगंज,गाजीपुर,मऊ,जौनपुर,मिर्जापुर आ झारखंड के पलामू ,गढ़वा अउरी लातेहार जिलन के मातृभाषा हीय। एकरा के बोलेवालन के संख्या 20 करोड़ से उपर हो गइल बा।

अगर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखल जाव त कहल जा सकेला कि भोजपुरी एगो विश्वभाषा हीय। जवन नेपाल के रौतहट, बारा, पर्सा, बिरग, चितवन, नवलपरासी, रुपनदेही आ कपिलवस्तु में बोलल जाले। नेपाल के 9%से ज्यादा लोग भोजपुरी भाषी बाड़ें। भारत आ नेपाल के अलावे देखल जाव त ई मारीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, नीदरलैंड जइसन बड़हन देसन में भी बोलल आ समझल जाले। वर्तमान में एह देसन में कुछ कमी आइल बा,बाकिर चिंताजनक स्थिति नइखे।

एगो साँच बात इहो बा कि भोजपुरी भाषा के वाचिक रूप में विविधता देखल जाला, जवन एकरा विस्तृत भूभाग के चलते स्वाभाविक बर्ताव बा। जहाँ तक ले बोले या लिखे के सम्बन्ध में बात कहल जा सकेला,ओह में कई गो विचार आ मत देखल गइल बा। कुछ लोग ठेंठ भासा के त केहू शिक्षा,सरकारी कामकाज आ संचार माध्यम के स्वरुप के समर्थन कइले बा। हवलदार त्रिपाठी सहृदय ,रासबिहारी पाण्डेय अउर अवधबिहारी कवि ठेंठ भोजपुरी भासा के समर्थन कइलें,बाकिर एह धारा के ना के बराबर समर्थन मिलल।

हमनीं के इयाद राखे के चाहीं कि दुनिया के कवनो भासा जवना रूप में बोलल जाले एकदम ओहीतरे ना लिखल जाले। भोजपुरी अब खाली गीत गवनई के भासा नइखे रहि गइल। अब ई विचार, तर्क, शास्त्र, शासन, प्रशासन, ज्ञान, विज्ञान, कंप्यूटर, इंटरनेट, बाज़ार,रोजगार आदि के भासा बनि के विकास के राह पर अग्रसर बिया। हँ, भोजपुरी में जवना चीज खातिर शब्द बाड़ेसन ओकर बेहिचक प्रयोग करे के चाहीं,बाकिर अंग्रेजी आ अन्य भासा के शब्द के भोजपुरीकरण करे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे। अगर जरुरी होखे त दोसरा भासा के शब्द भी बेहिचक अपनाईं। एह से भोजपुरी समृद्ध अउरी समर्थ होई। ना त हिंदी के हाल हो जाई। हिंदी के तत्सम वादी दृष्टिकोण से बहुते नुकसान भइल बा। एही से हमनी के खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के चाहीं।

अंग्रेजी आ हिंदी के साथे दुनिया के सगरी भासा के भी स्थानीय रूप बाटे,बाकिर ओह हिसाब से ना लिखल जाला। भासा के दू गो रूप होला -पहिलका ग्राम रूप आ दूसरका शिष्ट रूप। भोजपुरी अब खाली गँवारन के भासा नइखे रहि गइल। एही से मूर्खतापूर्ण,संस्कारहीन आदि बातन के असली भोजपुरी ना माने के चाहीं। एकरा के बोलेवाला लोगन में बहुते विविधता बा।

अंत में,हम कहल चाहब कि रउवाँ भोजपुरी के समृद्ध आ समर्थ बनावे के चाहतानीं त सतही भासा से ऊपर उठि के विश्व पटल पर स्थापित करे खातिर अन्य भासा के प्रचलित शब्दन के भी अपना में समेट के एकरा में एगो सतत प्रवाह भरीं आ प्रेम से कहीं -जय भोजपुरी जिंदाबाद!तब कहीं जाके एह भूमंडलीकरण के युग में ई पूरा दुनिया में फइली हमरा माटी के गमक आ एकर व्यक्तित्व।

✍डॉ मनोज कुमार सिंह
ग्राम+पोस्ट-आदमपुर
थाना -रघुनाथपुर
जिला-सिवान (बिहार)

जा करोना जा

जा करोना जा करोना जा
जइसे अइलS चाइना से वइसे वापस जा
जा करोना जा करोना जा.....

रुस, अमेरिका, इटली, कइलS सगरो तबाह
फ्रांस, ब्राजील, इंडिया में, धइल रुप भयाह
तोहरे रुप समझ ना आवे , दS अब तू बता
जा करोना जा करोना जा.....

लाख जतन का बाद भी दुनियाँ बा मजबूर
हाथ धोवS घड़ी-घड़ी , रहS अब दूर -दूर
जल्दी तोहरो होई दवाई पइबS तू सजा
जा करोना जा करोना जा.....

दीया जलाव ,थाली बजाव, चाहे करS तू टोना
घर घर में रहS लुकाइल तबही भागी करोना
लाल बिहारी कहेलें बतिया, जइसे खरा बा सोना
जा करोना जा करोना जा.....

✍**लाल बिहारी लाल,**

<u>बाबा विश्वकर्मा राउर,महिमा अपार बा</u>

बाबा विश्वकर्मा राउर महिमा अपार बा
धरती के कण-कण में अजबे बहार बा
बाबा विश्वकर्मा राउर महिमा.....

दुनियाँ में पहिला शिल्पी बाबा रउआ बानीं
राउरे किरपा से बोले लागे मूर्ति बानी
देवलोक में झलकत बाबा राउरे सिंगार बा
बाबा विश्वकर्मा राउर महिमा.....

आज भी जाईं पूजल बाबा सितंबर में
बाजेला डंका राउर धरती संग अंबर में
महल अटारी बड़-बड़ रउए उपहार बा
बाबा विश्वकर्मा राउर महिमा.....

नया-नया तकनीक देखीं रोजो रोज खोजात बा
धरती त धरती लोग चाँद पर अब जात बा
सपना लाल बिहारी के होत अब साकार बा
बाबा विश्वकर्मा राउर, महिमा.....

✍**लाल बिहारी लाल,नई दिल्ली**

तीज व्रत गीत

हथवा में मेंहंदी लगाइबि
सेनूरा सजाइबि
महावर लगाइबि हो
करब निर्जल तीज के बरतिया
शिव के मनाइबि हो

तीज के बरत एहवात करे जग में
पिया के बसावेली अपना रग रग में
पंडित के घरवा बोलाइबि
कलसा सजाइबि
पूजा कराइबि हो
करब निर्जल तीज के बरतिया
शिव के मनाइबि हो

चिटुकी भर सेनूरा के मरम हम जानिले
पिया के उमरिया हम रउरा से मांगिले
सखी सहेली के बोलाइबि
शिव महिमा सुनाइबि
शीश नवाइब हो
करब निर्जल तीज के बरतिया
शिव के मनाइबि हो

सोरहो सिंगार साथे पेन्ही के कंगनवा
बरसे सोहाग भोला पूजा अंगनवा
प्रियंका पाण्डेय के बोलाइबि
गितिया गवाइबि
सरधा पुराइबि हो
करब निर्जल तीज के बरतिया
शिव के मनाइबि हो

✍**गणेश नाथ तिवारी"विनायक"**
श्रीकरपुर, सिवान

कोरोना बेमारी

आइल बा कोरोना बेमारी घनघोर ।
सबका के बना के रखि दिहलस मुँहचोर ।।

बहुते गजब ढावे मिले ना दवइया,
दिने में देखवले बाटे सबके तरइया ,
दुनियाँ के देले बाटे धके झकझोर ...।।

केहू के ना छोड़त बाटे छोट चाहे बड़ के ,
जीत ना सकत बा केहू एकरा से लड़ के ,
बाटे ई निहोरा कुछ.दिन रहीं जा एकोर ...।

नफ़रत रहे ना मन में करींजा उपइया,
नफ़रत से डूब जाई देशवा क नइया ,
नफरत अन्हरिया हउवे , प्रेम ह अँजोर ...।।

कुछे दिन क बात बाटे नइखे घबड़ाए के ,
जवन मिले सूखल पाकल उहे बाटे खाए के ,
रात करिया बीतल जाते होखल चाहे भोर ..।।

✍**कृष्ण मुरारी राय**

<u>एगो मुक्तक</u>

बिना मकसद क खाली अइसहीं तू का चलत बाड़S,
रोशनी दे सकत नइखS त झूठहीं का जलत बाड़S ।
लिखत रहS कविता ,कहानी , शायरी कुछुओ ,
बन के शब्द वीर , खुद के तू का छलत बाड़S ।।

✍**कृष्ण मुरारी राय**
टुटुवारी , बलिया

काठ करेजा कइके

काठ करेजा कइके दिहली धोखा हमके प्यार में
मन करेला छोड़ के दिल्ली बस जाईं बिहार में

चाँद चकोरी चाँद न देखली चाँदी पर इतरा गइली
नवका जुलुफीवाला पाके हमरा के बिसरा गइली
खूब लगइनीं तेल ना उगले एको केश कपार में
मन करेला छोड़ के दिल्ली बस जाईं बिहार में

जतना पइसा धइले रहनीं चाट पोंछ बिलवा दिहली
एड़ी चोटी कर्ज में डूबल बर्तन तक बिकवा दिहली
तबहूँ उनकर करीं चिरौरी का बाटे तकरार में
मन करेला छोड़ के दिल्ली बस जाईं बिहार में

प्रेम प्यार में पड़के सगरो दुनियाँ से अलगा भइनीं
तोंद पिचुक के पीठ से लागल साँचों में दुबरा गइनीं
सिगरेट जइसन देह बनल बा उनका इंतेजार में
मन करेला छोड़ के दिल्ली बस जाईं बिहार में

अगर कहीं जो गाँव में रहतीं उनका के बिसरा दिहतीं
खेत मे उनका याद में पाड़ा पाड़ी तक चरवा दिहतीं
खाब में उनका बइठ के ताड़ी छनती हम तरवार में
मन करेला छोड़ के दिल्ली बस जाईं बिहार में

✍**विजय कुमार चौबे "मनु"**

हमार गाँव के लोग

शहर के बात केहू कानोंकान ना जाने बाकी गाँव में त कौनो बात आग के तरह फइलेला ।

भोजपुरिया माई के बेटा के, अगर चाँद पर जाए के पड़ल त सबसे पहिले ऊ सतुआ बान्ह दिहें कि बाबू भोरे-भोरे घोर के पी लिहS, खराई ना मारी ।

उनकर बाबूजी नसीहत दे डलिहें,

स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान दिहS । स्वास्थ्य से बढ़कर कोई धन ना होखे ।हाथ रोक के खरच करिहS, बचावल धन आगे काम आवेला । सुरा-सुंदरी से परहेज रखिहS, ई कुल के चक्कर में पड़ के आदमी बर्बाद हो जाएला ।

बाबू त पढ़ते बेरा से ही बर्बाद बाड़े, चाँद पर त बनला के बाद जातारें ।

दादी अगर जीयत रहिहें त पतोह के सौ गो उलाहना दिहें, लइका चाँद पर जाता अउर खाली सतुआ !!

अरे निमकी, खजूर, ठेकुआ, पेड़किया, चिवड़ा, मिठ्ठा कुल बान्ह दS संगे भरवा मिर्चा दोस्त संघतिया भी खा ली लोग ।

अब बाबू का बतावस कि जौन पार्सल घरे से जात रहे ऊ होस्टल में बाहरे लुटा जाए उनका के एकाध गो मिल जाये त सोचस कि ई त बिल्कुल घरे के जइसन लागता । बाद में पता चले कि पार्सल उन्हीं के रहे अउर मित्र लोग सब उदरस्थ कर जाए ।बस घीव के डिब्बा हाथ लागे काहेसे कि ऊ त केहू पी ना सके ।

दादाजी बीड़ी धनकावत आँख सिकोड़ के मगन होके कहिहें, बाबू चाँद पर से "चाँद छाप" बीड़ी जरूर ले अवले अइहS, ओ जा जरूर सहता मिलत होखी ।रामचरन चाचा सुर्ती ठोकत सोचे लगले हम का मंगवाईं पता ना सुर्ती ओ जा मिलेला कि ना?

बहिन लिफाफा में भर के राखी दिहें , भइया राखी केहू से बन्हवा लिहS, समय पर रहितS त अपना हाथे बन्हतीं।नेग में घड़ी ले अवले अइहS ।

बड़ भाई इशारा से बुला के कहिहें, बाबू हम त बुरबक रहनीं जे परिवार के बात मान के गला में ढोल बन्हवा लिहनीं अउर निभावतनीं बाकी तू अगर चाँद पर चाँद जइसन मिले त छोडीहS मत, हम बानीं नू, सब सम्भार लेब ।

भाभी काहे चुकस, तनी उहो ठिठोली कर लिहली । चाँद पर तनी ठीक से चलब कहीं बिछलहर होखी त बिछिल जाएब अउर सीधे भुइयाँ गिरब । भाभी के कइसे समझावस कि चाँद पर बिछली कहाँ, उहाँ त उबड़-खाबड़, कंकड़-पत्थर इहे कुल्ही त बा ।

ओने रश्मि कुमारी बाबू के खिंचके आम के पेड़ के नीचे ले गइली । उँगली में दुपट्टा लपेटत सरमा के कहिहें, "हमरा खतिर हरिहर चूड़ी जरूर लेके आएब सावन के महीना चलता ।" सुनी कोई चाँद, अगर चाँद पर मिल गइल त हमरा के भुला त ना जाएब? रश्मि के कइसे समझाईं कि,..चाँद मिलता नहीं सबको संसार में ..

कंक्रीट के जंगल में त आदमी खुद के भुलाइल रहेला। गाँव के मिट्टी के नमी ओ जा कहाँ बा जे केहू करेजा में धँसल रही ।

तोहार नइखे कौनो जोड़ तू त बेजोड़ बाड़ू हो..

बाबू मन में सोचत रहले कि आज नील आर्मस्ट्रॉन्ग, माइकल कॉलिन्स, एडविड एल्ड्रिन रहित लोग त पूछतीं कि का लेके चाँद पर गइल रहे लोग और का लेके लौटल लोग । पिज़ा, बर्गर, केएफसी के जमाना में लोग सतुआ अउर चिवड़ा के बात करता, दुनिया चाँद पर चल गइल अउर ई लोग लैपटॉप, मोबाइल के जगह पर हरिहर चूड़ी,चाँद छाप बीड़ी,एच एम टी के घड़ी मंगवावत बा लोग ।

हे भगवान ! हमरा गाँव के लोग कबो ना सुधरी।

✍समता सहाय

महतारी भाखा (मातृभाषा) दिवस ::: एगो ब्यंग

जइसे स्वाधीनता दिवस ,मजदूर दिवस , झंडा दिवस---- वोइसहि हरेक साल आवेले महतारी भाखा दिवस उहो एक दिन खातिर । बिअहुती दुलहिनियो के मान जान सवा महीना तक होला बाकिर भाई भाखा के मान जान बस एक दिन तक होला ।

हमरो किहाँ आजु माई भाखा ::: भोजपुरी दिवस मनावल गइल ह । फेसबुक विश्वविद्यालय के भाखाविद् सर्व श्री लाइकर्स कुमार , मिस्टर कॉमेन्टबिहारी जी के साथे - साथे मैडम वाह ! वाह ! , सिस्टर क्या बात है ! मुख्य अतिथि रहल ह लोग । आयोजनकर्ता अखिल भारतीय ह्वाट्स्प संघ के मि• अभिव्यक्ति कुमार (हिन्दी ग्रुप के एडमीन), श्री कविता कुमार (साहित्य मंच ग्रुप के एडमिन), मिस• Wow (रंगमंच ग्रुप के एडमिन) आ आरा जिला भोजपुरी संघ के ह्वाट्स्प मंत्री भाई नीमन लागल कुमार जी रहनी ह ।

अति विशिष्ट अतिथि के रूप में हिन्दी के प्रोफेसर डॉगधर पुरस्कारानंद जी , अंग्रेजी भाखा के विद्वान प्रो• डिकोस्टा सर , उर्दू के नामचीन हस्ती मोहतरमा सुभान अल्लास साहिबा के अलावे बहुते नीमन - नीमन लो आइल रहलन ह । गोर - गोर अप्रवासी भोजपुरियन के फरफरात अंगरेजी त गजबे समा बन्हले रहलि ह । देखनहरू के खचाखच भीड़ लागल रहे । भाई एक्सक्यूज जी , मैडम सॉरी जी , मिस्टर एवेसम जी , सरदार वाह्हह्हह सिह साहब अइसन कतने मरद - मेहरारू , लइका - लइकी जुटल रहलनि हऽ ।

उदघाटन मंच तइआर रहे । उदघाटनकर्ता के स्वागत में इस्टेज प पछिमी ड्रेस में सज - धज के आयोजक लोग खड़ा रहलनि । जीन्स , टी सर्ट , सूट , जैकेट के उपर से माई भाखा के मात्र एगो चिन्हा के रूप में दू घंटा खातिर गमछा सभे लेले बा । स्थानीय नामी गिरामी अंग्रेजी इस्कूल

(जवना के हाता में भोजपुरी बोलला प नाम काट दिआला , जवना के भीतर गइला पर हमरो जस भोजपुरिया अंगरेजी में येस नो करे लागेलन) के लइका - लइकी स्वागत - गान गावे खातिर आइल रहलनि । एही बीचे हाला भइल कि चीफ गेस्ट जी (इहाँ के सहर के नामी इङ्गलिस स्पोकेन क्लासेज के डायरेक्टर) आ गइनी । इस्टेज प से मायेक से बड़ी मीठ आवाज में एनाउन्सर कहली कि रियली हमनी खातिर ई खुशी के इवेन्ट बा । हम चीफ गेस्ट सर से आग्रह करत बानीं कि इस्टेज पर तशरीफ लाईं । उहाँ के स्टेज पर अइनी । उहाँ के आ के मोमबती बारि के दियरी जरवनी । लोग जमि के थपरी बजावत रहे बाकिर क्लैपिग कहात रहे । एकरा बाद स्वागत गान के नाम पर वेलकम साङ्ग गवाइल । मंच के संचालिका चीफ गेस्ट से रिक्वेस्ट कइली कि आ के इनॉगुरल (उदघाटन) स्पीच दीं । माइक्रोफोन पकड़ि के स्टाइल में महोदय जी बोले सुरू कइनी , " रउआ लो के अपना लॉङ्गवेज के प्रति डिवोसन आ इमोसन देखि के रीयली आई एम टू मच पाजिटिव। अइसन कलचरल एक्टिविटी होत रहे के चाहीं । एह से मुच्युल अंडरस्टैन्डिङ्ग बढ़ेला । हम रउआ सभ के एह हिमालयन इफोर्ट के फ्राम द कोल ऑफ हर्ट सैल्यूट करत बानी । आ एह प्रेसटीजियस स्टेज से एनाउन्स करत बानी कि एह पिछड़ल छेत्र में असो से एक दर्जन इंगलिस स्पोकेन कोर्स के इन्सटिट्यूट खोल रहल बानी जेकरा से इहाँ के नवका पीढ़ी आगे बढ़ी । भोजपुरी लोक के ग्लोबल करे खातिर कजरी में रॉक , सोहर में ऑरकेस्ट्रा आ छठ के गीतन में रॉक मिक्सिग करे में सुबिधा होई आ भोजपुरी एगो वैश्विक बोली बनि जाई । लास्टली रउआ सभे के हम कान्ग्रुच्यूलेसन देत बानी । पूरा हाल खाड़ होके थपरी बजावल जब उहाँ के कहनी कि *आई लव यू भोजपुरी । "

अगिला वक्ता रहनीं हिन्दी ह्वाट्स्प ग्रुप के डबल एमे , लिमोबाइलधारी भाई श्रीयुत् अभिव्यक्ति कुमार जी । थपरी के सवखीन , मायक खातिर हहाइलि इहाँ के टपाक से बोले लगनी , "अंतस तरंगित बा वाह्य अनुरंजित बा आजु के दिन चहुदिशि उमंगित बा । अपार हर्ष होता बा कि आजु हिन्दी के उपबोली (चाहे छोट बहिन कह सकेनी) दिवस के आयोजन कइल गइल बा । दैनिक जीवन से अब धीरे - धीरे भोजपुरी के कनेक्टिविटी कम हो रहल बा जवन की रउआ सभ के भाषाई उदारीकरण के प्रतीक बा । तबो साल में एकाध गो अइसन क्रिया कर्म होत रहे के चाहीं , येह से हमनी के भाषाई परचार प्रसार में काफी मदद मिल सकेला । घर में भले हिन्दी भा अंगरेजी बोलीं बाकि बहरी भोजपुरी के प्रचार करीं , माई के खाईं मौसी के बतिआईं । " हम हृदयाभार व्यक्त करत बानी कि रउआ लो हमरा के मान - सम्मान दिहनी ।

अंत में धन्यवाद देबे के मोका आइल । संचालिका मैडम सारी जी , संयोजक मंडल के आरा समूह के ह्वाट्स्प मंत्री के बोलवली आ कहली कि अब रउआ थैन्किग यू क दीं । मंत्री श्री नीमन लागल कुमार जी ठाढ़ हो के असमंजस में बानी का कहीं का ना कहीं का कहबि त सभ समझी - बुझी । उहाँ के तनिका सा सकुचाते कहनी कि हमरा गर्ब कि हम भोजपुरिया हईं आ ई कहे में हमरा एथी होत बा कि आजु हमनी के चाऊ - चोखा खा के पाॅप आ झूमर मिक्स करत बानी , जीन्स - कुरती पहिर के बिदेसिया आ बीटल के गीत के फ्यूजन करत बानी आ सभ से बड़का बात त ई कि ई सभ भोजपुरी के सान में करत बानी जा । आजु नयकी पीढ़ी निरहुआ आ राखी सावंत के फिल्म के लोक से अस्लीलता मेटावत बा । सुटेबुल बाय उपन्यास पढ़ि के भिखारी प लेक्चर दिआत बा । ई भोजपुरी के प्रगतिशीलता के प्रतीक बा ।

हम रउआ लो के तहे दिल से धन्यवाद करत बानीं कि रउआ लोग अइनीं ।

✍अमरेन्द्र कुमार सिह
सह-सम्पादक
सिरिजन

हमार जिंदगानी

हमार जिंदगानी हमार जिंदगानी
भइलि पानी पानी हमार जिंदगानी।

लागता कि बीचहीं से जाइब चीराई
अइसन मचल बा हमार खींचातानी।

पाले परल बानी अइसन बलम के
मटिया में मिलल बा भरल जवानी।

हम भीड़ियो में हरदम रहीना अकेले
रहि- रहि के दरदा उठेला तूफानी।

नोकरी के रसरी से अइसन छनइनी
कि चउबीस घंटा दूहल जात बानी।

✍**हरेश्वर राय, सतना**

गुंडई के भासा

होइबे अँखफोर, त आँख तोर फोर देबि
जादे फटफटइबे, तोर मुँहवा झँकोर देबि।

चलत रहु हरदम गिरवले आपन मुड़िया
जहाँ मुड़ी उठवले, त मुड़िया ममोर देबि।

जवने-जवन कहब, तवने- तवन सांच बा
कटले तें बात, त कुकुर जस भभोर देबि।

आम के कहब महुआ, त तेहूँ कहबे महुए
नाहीं त आम अइसन, भूसवा में गोर देबि।

बनबे चल्हाक ढेर, त बतिया हमार सुन ले
धरब फफेली आ फोकचा जस फोर देबि।

✍**हरेश्वर राय, सतना**

बनत नइखे गणित

बनत नइखे गणित ई जिंदगी के जोर मुश्किल बा
करी बहुते गुणा भागा,मगर हर तोर मुश्किल बा।

बसल भीतर कलह के आग बुझते अब कहाँ बाटे,
गहिर बा रात करिया ई,सुहावन भोर मुश्किल बा।

चलत बानी डगर पर काँट छितरल बा चली कइसे,
सहल जाई भला कइसे,सुनल ऊ शोर मुश्किल बा।

बुझत बानी सभे बतिया, मगर दिल हार गइनी हम,
कुहुक के हूक के पनिया,छुपावल लोर मुश्किल बा।

खुदे जोतल हमर बा जाल उल्फ़त से बची कइसे,
भले होखो बहुत तकरार तूरल डोर मुश्किल बा।

✍**अनीताशाह, वीरगंज ,नेपाल।**

हँसत बा चेहरा

हँसत बा चेहरा बाकिर, नज़र भीतर कहानी बा,
मिलल अपमान अतना बा,भरल अब आँख पानी बा।

कहाँ खोजी भुलाइल मीत के अपना पता नइखे,
भटक गइनी उलझ गइनी ,समय बहुते गुमानी बा।

सही का बा गलत का बा ,समझ के फेर होखेला,
कहत रहले कबीरा झूठ के दिन कम रवानी बा।

गली सूना डगर के मोड़ सूना बा चलब कइसे,
चमक सब लूट लिहले ऊ ,बचल दुख के निशानी बा।

अधूरा बात बा दिल में, सुने वाला सुनत नइखे,
उमर के दौर दिन पर दिन,ढलत बीतत जवानी बा।

✍**अनीताशाह, वीरगंज, नेपाल।**

करीले निहोरा

करीले निहोरा कबो टेर सुन ली,
भरल आँख हरदम पुकारल करीले...
समय जिंदगी के घटल जात बड़ुवे
टुटल मन के जबरन सम्हारल करीले...

करीले निहोरा ....

अगर भूल कवनो भइल बा बता दीं,
मउअत से बड़वर जो होखे सजा दीं,
भइल जिंदगी बा इनारे के गगरी,
गिरल जाता फिर फिर निकारल करीले,

करीले निहोरा.. ....

सूरुज ताप देला जुड़ावे अँजोरिया,
पिरितिया के गितिया सुनावे बदरिया,
सकल धन धरम व्यर्थ माटी बुझाला,
हँसी होठ से हम बिसारल करीले...

करीले निहोरा ....

चिढ़ावेला दरपन जरा देला मनवा,
सिकड़िया बजा के बोलावे फगुनवा,
बहुत आस बा कहियो आएब , एहि ला,
रो रो के रूपवा सँवारल करीले,

करीले निहोरा..... ....

✍अमन पाण्डेय

बा जरूरी पढ़ाई

पसीना बहा के पसेवा करीला,
क्षुधा आध खाके कराईं पढ़ाई ।
रखीं लाज थोड़ा करीला निहोरा,
बड़ी काम आवे कहीं भी पढाई ।
रुहानी लगा के पढ़ी पाठ जेही,
लगी नाम श्रीमान होखी बड़ाई ।
पिता मातु बेटा जुडा दी करेजा,
पढ़ी ध्यान से पोस्ट ऊँचा कमाई ।।

मवाली बने से मिली मान हानी,
क्षती लाभ दूनो कभी ना बुझाई ।
कपारे चढ़ी दाल रोटी क चिन्ता,
समइया गवा काल्हु आँसू बहाई ।
बटाई सभे चीज ऐ के अलावा,
इहाँ बाँट हिस्सा कहाँ लाग पाई ।
बड़ा दर्द होला तनी खर्च कौडी,
लुटा दी घटी ना बढ़ी ई सवाई ।।

गहूं दाल खर्ची मिलेला दुकानी,
रुपैय्या रही लुत्फ भेटी मलाई ।
बुरा हाल बाटे जमाना निरेखी,
कहाँ जात बा रोजमर्रा मिलाई ।
गरीबी अमीरी लकीरी न होला,
पुरा खाब होई पिछा लाग धाई ।
जहाँ रोज-रोटी करावैं झमेला,
रही हाल का और आगे बताई ।।

✍पद्म सागर यादव

कविता भाषा क सबसे सुग्घर रूपक

हमार कविता हमरा के रचेलीं। ऊ एक तरह से अनुभूति के उत्कण्ठा क साक्षी रूप हईं। अनावृत होखे वाले अनुभव में समय, बिंब, आत्मीयता के एकाकार करत ई कविता असंतुलन आ असहायतो पर दृष्टि-निक्षेप करेलीं। कविता से जीवन महत्वपूर्ण हऽ बाकिर ओके शिल्प कविते देले। कविता एक तरह से मौलिक प्रश्न हवे जवन 'जेनुइननेस 'जइसन सामने आवेले। हर महत्वपूर्ण कविता एक तरह के 'कथा बंध ' रचेले, अपने वर्णन में विशिष्ट होले आ मार्मिकता के स्पर्श देले। आक्रोश के शब्द दिहला के साथे-साथे अंतःपीड़ा आ नूतनता के परिप्रेक्ष्य के रूपाकार देले। संकुचित श्रेणी-बद्धता के चुनौती दिहल ओकर प्रमुख पक्ष हवे। कविता एगो क्रियाशील नायिका जइसन समंजन आ परिवर्तन दूनो क हेतु हवे।

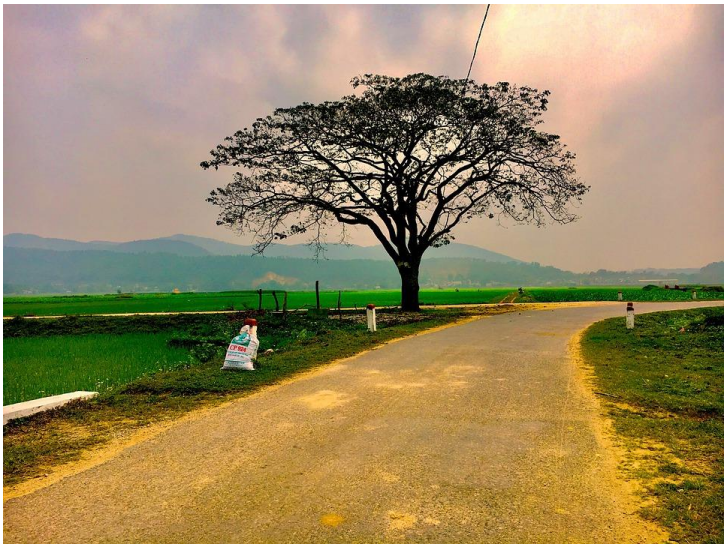

कविता के मन में जरुर यांत्रिक सभ्यता के जड़ता के अस्वीकरण क बाति होखी। क्षुब्धता आ असंगति से उठेलीं कविता के ध्वनि। सृजनात्मक शक्ति के परिचिति से कविता के भीत के अलंकृति भइल बा। सुगमता के बहाने कविता क सरलीकरण कइल हमार अभीष्ट नइखे। कविता विचार आ विचारधारा के परिवृत में समा न सकेले। एही से कविता के स्थानीय धरती व विश्व-बितान चाहीं ताकि ऊ सीमा के संकुचन के अतिक्रांत क सके।

समकालीनता से जुरल टर्म से आगे जात कविता खाली समकालीन मामलन के देखि के आगे ना बढ़ जाले। ऊ भागीदारी करेले। आज के समय भागीदारी के समय हवे। समाज के सबसे छोट तत्व सामान्य से असामान्य दिशा की ओर गतिशील हवें। उनके प्रति सूक्ष्म पर्यवेक्षण आ जीवंत भागीदारिये से कविता में हमार वास्तविक प्रवेश भइल हवे। हम सबसे अंतिम व्यक्ति आ किसान के साथे पर्यावरणीय असुरक्षा के भौगोलिक दौर में वैश्विक स्थिति के बहुते बारीकी से महसूस करीलाँ। हम अपने के निरा अनुभववादी ना मानीलाँ। अनुभूति के संश्लिष्टता के साथे कविता-कर्म में निमज्जित कऽ के श्रेष्ठतम शुभत्व के उपस्थिति दीहल हमार प्रयोजन रहल हऽ। हम व्यक्ति के महत्व देइलाँ, व्यक्तित्वो के। कविता के व्यक्तित्व के यथार्थवाद के झाँपी से ढाँकल उचित नइखे। यथार्थ सामने आवे¬ व्यक्तित्व के रक्षा के शिल्पीय इकाई के साथे।

आज के समय में भावनात्मकता से अधिक तार्किकताके पहलुअन के तनाव हवें। शायद एही से आज के कविता में गद्यात्मकता बढ़ल हवे बाकिर हम मानीलाँ कि कविता में गद्य क प्रवेश आ गद्य में कविता के अंतरंग आवाजाही एहर काफी बढ़ल हवे। एके सामयिक जीवन-संघनन के संदर्भो में देखे के चाहीं। पुरान गतिहीन पक्षन से अपन अस्वीकृति के हम अपन कविता क अनन्य शिल्प मानीलाँ। कविता हमरा अंतःस्थल के प्रस्तुत करेले बाकिर हमार कविता उहे ना हऽ जवन हम हईं आ जवन हम हईं, हमार कविता हूबहू ऊहे ना हऽ। हमार आंतरिक स्वभाव आ कविता के अंतःस्वभाव में एकरूपता आवश्यक नइखे।

भाषा के साथे हमार गहन साझा हवे। ओकरे माध्यम से हम कविता के वास्तविकता के ले आइलाँ। ई आवश्यक नइखे कि समाज क वास्तविकता ऊहे ह जवन काव्य क आत्यंतिक वास्तविकता हईं। आज के समय के सच क उचित प्रतिबिंबन देखावल कविता क मूलभूत आग्रह होखे के चाहीं। सच कई गो हवें। जइसे हमरे समय में कई गो समय हवें। वैकल्पिक दुनिया की ओर गइल हमनी के समयन क प्रमुख माँग हवे आ इहे कवितो क। अइसन उपेक्षित दुनिया : जेकर मुख्यधारा में इज्जत ना, जगह ना : उहाँ एह कविता के प्रवेश के आवश्यक जगह मिल रहल बा। ई कविता पर आरोपण के रूप में ना होखे के चाहीं।

अपना पहिले के टकसाली लेखन के हम अस्वीकृत करत हईं। कई बेर ओकरे कथ्य में अपर्याप्तता रहल हवे, शिल्प के संकुचन रहल हवे। हम लगातार तकनीकी नवाचार बनवले रखल चाहत हईं। हम ई ना कहीलाँ कि आज के कविता संपूर्णतः मौलिक हवे। मौलिकता एगो सापेक्षिक प्रश्न

हवे। आदर्श या सामान्य पाठकन के उम्मीद से विचलनो संभव बा हमरी कविता में होखे। अतीत के यथावश्यके ग्रहण करीलाँ। कई बेर परंपरा-भंजक या समकालीनता-भंजक :दूनो मान सकीलाँ हमके। हमार कविता एगो सावधान बौद्धिक स्वतंत्रता के रख-रखाव हऽ। सामाजिक तंत्र क जटिलता, अर्थव्यवस्था, विज्ञान के सम्मुख रखत हमार कविता अपन भीतरी तरलता के बनवले रखेले। हम अपने दृष्टिकोण के अपनी कविता पर अध्यारोपित ना करीलाँ। अपन वैयक्तिक चेतना के अकेलेपन क सुविधा ना मानीलाँ। खाली समाजे के ना, कलो के न्याय मिले के चाहीं। हमरा मन में कविता के एगो अवागार्द छवि हवे।

हमरे खातिर कविता समाज या स्वयं क विश्लेषण ना करेले। ऊ प्रश्न उठावेले, किंचित् विभोर क देले, शांत सालधान अवलोकन करेले। कविता कब्बो औपचारिक रूप से पूर्ण ना होले। ओकर अपूर्ण रहल ओकर नियति हवे। हमार हर कविता अपूर्ण हवे।

मऊनाथ भंजन उत्तर प्रदेश के देवलास के बड़हन ताल-तलइयन व तमसा नदी के किनारन के छूवल आ उन्हनीं के तोरला के कामना रखत हमार रचाव रामपुर कांधी गाँव के परती पर आत्म सर्जन व बतकही से होत चिकई, वॉलीबाल, फुटबाल खेलत, नौटंकी में अभिनय करत, लोकगीत गावत, पेंटिंग करत, कविता लिखत आधुनिकता के ओर अग्रसर भइलीं। एके गति मिलल, जब इलाहाबाद पढ़े गइलीं विज्ञान के पढ़ाई। मुहम्मदाबाद गोहना, मालटारी, फिर गोरखपुर विश्वविद्यालय में शोध। आगरा विश्वविद्यालय के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी विद्यापीठ में डी.लिट् शोध खातिर प्रवेश।

हम कविता के सार्वजनिक साक्षरता के रूप में लिहलीं। ओमे जन-संरक्षण, वोट के वास्तविक शक्ति आ परिवर्तन धर्मिता ह। कई बेर कविता अपने समय के पूर्णतः प्रतिबिंबित ना कर पावेलीं। उदाहरण खातिर भारतीय कविता में पाछिल पचीस तीस साल से किसान क कवनो केंद्रीय उपस्थिति ना हवे। जवन कविता स्थापित धारणा क महज परिपुष्टि करेले, ऊ आगे क ना हो सकेले। कला में इतिहास क विरेचन होखे के चाहीं। कविता सांसकृतिक समंजनो करेले।

हमार कविता (आवश्यक रूप से) भाषा विज्ञान के गहनता क प्रतिनिधित्व ना करेलीं। ऊ परीकथा, स्मृतियन से लेके पौराणिक प्रसंगन, मनोविचलन आदि तक आवेलीं, ओमे कई तरह के बारीक तनाव छिपल हवें। हम अमूमन लोक लुभावनशैली क इस्तेमाल ना करीलाँ, यद्यपि लोक के गहिर तनाव, उहाँ हवें।

कविता में जइसे निकटता क हेतु हवे, वइसहीं साँच दूरियो उहाँ हवे। ऊ मात्र समाजशास्त्रीय प्रवीनता ना रखेले। खाली सार्वजनिकता से ओकर मौलिक क्षति होखी। ओकरे आकृति में सहज उदारता हवे। कविता कुछऊ ‘ एकदम स्पष्ट ’ ना करेले, स्पष्ट कइला के बादो। ओकरे साफगोईपनो में एगो गहन रहस्यमयता होला।

हमनीं के कविता रचल जाला, भाषे के माध्यम से बाकिर कविता के सृजित करे वाले जानेलें कि भाषा केतनी अपर्याप्त हवे ! भाषा त हमनी के भीतरी रंग हवे। आखिर का वजह हवे कि जवने तरह हमनी के भाषण दीहल जाला, ओह तरह कविता ना लिखल जा सकल जाला? कविता कवनों घिसल-पिटल बयान नइखे। कविता में शब्दन क सावधान प्रयोग होला। विफलतन पर ओकर संवेदनशील समझ होले : आगे के जीवन खातिर। सहमति व मानक होखल : जरुरी ना कि ओकर अपरिहार्य हिस्सा होखे।

कविता के इतिहास में प्रवेश करे के चाहीं, बाकिर ऊ खाली उच्च शिक्षितन या फुरसती लोगन क क्रीड़ास्थल नइखे। ऊ अपने पठन खातिर एगो संस्कार चाहेले। कविता ऊ कहेले जवन गद्य में ना कहल जा सकल जाला। नीम्मन कविता खाली अभ्यास के प्रतिफल नइखे यद्यपि कविता में अपने समय के सबसे प्रामाणिक, प्रभावी आ गुंजायमान भाषा होले। कविता अपने समय के उच्चतम पिच पर रचल गइल रचना हवे। ओकर उत्कृष्टता सूक्ष्मता में निहित जटिलता आ सहजता हवे। ओम्में सुख-दुख क सहज द्वंद्व हवे।

हमरी दृष्टि में कविता भाषा क सबसे सुंदर रूपक हवे। भाषा प्रतीकात्मक आधार हवे। ई आधार अनजाने में कई बेर हमनीं के व्यवहार के प्रभावित करेला। ई रूपक हमनीं के सहज संवेदना के मानचित्र हवे। कविता शब्दन आ उनके अव्यक्त गुणन के प्रति संवेदनशील होले। कविता क भाषा क रचनाकार आ पाठक के जोड़ेले। ऊ स्वयंके अइसन माध्यम के रूप में रखेले, जवन कवनो अन्य कला-माध्यम ना क सकेला।

✍परिचय दास

नयी दिल्ली

योग अउर योगी- 9

नमस्कार ! योग गुरु शशि प्रकाश तिवारी के रउरा सभ के प्रणाम, योग अउर योगी के पिछला संस्करण में प्राणायाम के बारे में पढ़नी। हमनी के योग पथ पर आगे बढ़त पिछला संस्करण में अनुलोम विलोम अउरी कपालभाति प्राणायाम से रूबरू होखनी सन। एह संस्करण में हमनी के सीत्कारी प्राणायाम तथा शीतली प्राणायाम के बारे में जानकारी लिहल जाई।

सीत्कारी प्राणायाम

सीत्कारी प्राणायाम के करे से पहिले दुनू गोड़ के मोड़ के एक दूसरा का उपर चढ़ा के पद्मासन में बइठ जाए के बा, (यदि पद्मासन ना लाग सको त सुखासन भा अर्धकमलासन करी) एह प्राणायाम में सीत्कार के शब्द के उच्चारण का साथ साथ पूरक कइल जाएला। ध्यान रहे कि एहमे नासारन्ध्र(नाक) के उपयोग ना होखे के चाही। सीत्कारी प्राणायाम में अपना होठ के गोल आकार में कइके जीभ के एह प्रकार से मोड़ दिहल जाएला की जीभ दाहिना आ बायाँ दुनु तरफ से गोल हो जाओ। जीभ के गोल कइला के बाद ओके आगे होठ से सटा के जीभ के अग्रभाग के तारू से लगावे के बा। एह प्रकार जीभ के तारु से लगा के सीत्कार के समान उच्चारण करत स्वांस के अपना उदर में भरे के बा फेर यथाशक्ति सांस भर के नाक का दुनु छेद से समूचा सांस के बहरा निकाल दीहल जाई। एह प्रकार से एकरा के 10 से 15 बार दोहरावला के बाद दूसर प्राणायाम शीतली प्राणायाम करी।

शीतली प्राणायाम

शीतली प्राणायाम के अर्थ भइल कि जवना के कइला से शीतलता उत्पन्न होखे। शीतली प्राणायाम आ सीत्कारी प्राणायाम में कवनो विशेष अंतर ना होखेला , सीत्कारी प्राणायाम के भांति ही शीतली प्राणायाम में भी मुँह आ जीभ

के गोल करे के बा , बाकिर शीतली प्राणायाम में जीभ के तारु के जगह दांत पर सटावे के बा । दुनू जबड़ा के एक साथ मिला कर के टाइट कर लिहीं आ ओकरा बाद जीभ के गोल कर के मुँह के भीतर से दाँत के पीछा सटा दिहीं। अब धीरे धीरे साँस के भीतर पड़े खींची आ अपना गर्दन के मध्य भाग में साँस द्वारा भरल हवा के रोके के प्रयास करी। अब धीरे धीरे साँस के दुनू नाक से निष्कासित कर दीहीं।एह प्रकार से एकर 10 से 15 बार अभ्यास करीं।

लाभ

जहवाँ एक तरफ सीत्कारी प्राणायाम के कइला से शारीरिक कांति में बढ़ोतरी होखला के साथ साथ तेज़, स्फूर्ति आ उत्साह के प्राप्ति होखेला ज़वना के नियमित अभ्यास से अनेक प्रकार के सिद्धि के उपलब्धि आ निद्रा,आलस्य का साथे साथे भूख प्यास पर आपन नियंत्रण मिल जायेला। सीत्कारी के निरंतर अभ्यास से शरीर निरोग हो के झाईं झुर्री आदि दूर हो जायेला जेहसे सुंदरता आ रंग रूप में कामदेव के समान लावण्य के प्राप्ति होखेला ।

उहवाँ दोसरा तरफ शीतली प्राणायाम के कइला से पित्त ज्वर, प्लीहा,तृष्णा, गुल्म इत्यादि रोग शांत होखेला। शीतली प्राणायाम के नियमित अभ्यास से उपर्युक्त कवनो रोग उत्पन्न भी ना होखेला आ साथे साथे अजीर्ण ,कफ पित्त के विकार इत्यादि भी उत्पन्न ना होला । शीतली प्राणायाम के सबसे बड़का गुण त ई ह कि एकर नियमित अभ्यास करे वाला व्यक्ति के कबो कवनो भी प्रकार के जहर ना चढ़ेला काहे कि ई सब जहर के अपना नाम के भांति शीतल (ठंडा) कर देवेला।

सावधानी

सामान्य रूप से त योग केहू योग चिकित्सक का देख रेख में ही करे के चाहीं बाकी थायरॉइड का अति विकास भइला पर , कमजोर दिल वाला , ढेर चर्बी वाला, मस्तिष्क से संबंधित कवनो रोग भइल होखे, चक्कर आवत होखे, आ भा जेकर कवनो प्रकार के आपरेशन भइल होखे ऊ विशेष रूप से केहू के परामर्श लिहला का बाद जानकार के सम्मुख ही प्राणायाम करे त जादे नीमन रही।

उच्च रक्तचाप,हृदय रोग,सर्दी जुखाम , Thrombosis,Anterio Salerosis,Cronic,Catarrah,मलबंध,किडनी, नेत्र,कान का रोगी खातिर बिना परामर्श के शीतली प्राणायाम ना करे के चाही।

विशेष रूप से ध्यान राखे के बा कि आसन कइला के बाद कम से कम 5 मिनट के शवासन कर के अर्थात 5 मिनट के अंतर का बाद कवनो भी प्राणायाम शुरू करे के चाहीं।

एह संस्करण में एतना ही रहे देवे के, शेष अगिला अंक में रही। योग से संबंधित कवनो प्रकार के सहायता भा कुछऊ पूछे के होई त हमरा से shashiprakashtiwari640@gmail.com पर भा 9599114308 / 7217897727 पर हमरा के फोन/वॉट्सएप कर के हमरा से संपर्क क सकत बानी। यदि रउरा चाही त यूट्यूब पर भी हमके yogguru shashi prakash tiwari का नाम से खोज सकतानीं। जहवाँ रउरा योग से संबंधित नया नया जानकारी लगातार मिलत रही। रउरा सभे के एक बार फेरु से हमार प्रणाम का संगे संगे दुनू हाथ जोड़ के जय श्री राम।

✍योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी
जिला प्रभारी छपरा (अखिल भारतीय योग शिक्षक महासंघ)
परफेक्ट जिम व योगा केन्द्र
भटकेशरी ,जलालपुर, छपरा (सारण) बिहार 841403

फुलेसर गाँव का बहरी रास्ता पर अकेले गुमसुम बइठल गाँव का ओर टुकुर- टुकुर ताकत रहलें। आँखि से झहर- झहर लोर बहत रहे। संजोग से बुधन चहुँप गइलें। फुलेसर के ए हालत में देखि के बुधन का बड़ा दुख भइल। पुछलें- 'ई का ए भइया! काहें ए हाल में बइठि के लोर बहावतानीं?'

फुलेसर- 'का कहीं, ए बाबू! गोबर फेंके का बहाने आवत रहली ह त भेंट हो जात रहल ह। तनी देखि लेत रहनीं हँ त दिन भर के टवनिक हो जात रहल ह।

बुधन- 'त अब का भइल बा? अइहें नू, बइठल रहीं।'

फुलेसर- 'ना, अब कब्बो ना अइहें।

बुधन- 'काहें?'

फुलेसर- 'उनुका घरवाला भँइसिए बेंचि दिहलेसँ।

******

बखार के पेहान

घटना लगभग चालीस बरिस पुरान ह। फुलेसर आ उनुके लंगोटिया इयार बुधन का देउरिया सिनेमाहाल में जा के बाबी फिलिम देखे के मन कइलसि। दुनू जने मिलि के सोच करे लागल लोग कि कइसे देउरिया चलल जाई? घर के लोग जानि जाई त कत्तई सिनेमा देखे ना जाए दी। ए समसेआ के हल त तुरते हो गइल। बुधन कहलें कि ओहि दिन पढ़े ना चलल जाई। इसकूल का बदले देउरिया सइकिल से निकलि जाइल जाई, बारह से तीन वाला शो देखि के तनी मेहनत कइल जाई त पाँच बजे ले अपना-अपना घरे हाजिर रहल जाई। केहू ना जानि पाई कि इसकूल से ना देउरिया से आवतारेसँ।

अब समसेआ पइसा के रहे। पइसा आई कहाँ से? ओ समय एतना पइसा त पढ़गितिया लो का घर से मिले ना। पढ़े जाए का बेरा आधा घंटा रोअला-ठनला का बाद चउअन्नी मिलि जा त पढ़गितिया लो बमबम हो जा। दू- तीन एही पर बात आ के रूकि गइल रहे। एन्ने बाबी फिलिम दुनू जना के दिमाग से उतरे ना। अन्त में, एगो जोगाड़ सोचिए लिहल लो।

निरनय ई भइल कि बुधन का बखार में रहर राखल बा। रात में रहर निकाल के बेंचि दिहल जाई आ सिनेमा देखे चलि दिहल जाई। ए स्कीम से दुनू जने बड़ा गदगद रहे लो। लेकिन, आजु ले केकर सगरे सोचल भइल बा कि ए लो के होखो।

घर- परिवार, टोला- मोहल्ला के सभे सूति गइल त फुलेसर आ बुधन एकाठा भइलें। बखार का लगे चहुँपल लो। जल्दी- जल्दी बुधन अपना घर से रहर राखे के एगो बोरा आ बखार के पेहान (टोपी) उठावे खातिर एगो बरियार बाँस के टेना उठा ले अइलें। दुनू जने मिलि के बाँस का टेना की मदद से बखार के पेहान ऊपर उठा के चाँड़ लगा दिहल लो। अब बखार में ढुके के बेरा आइल। फुलेसर बुधन से तनी देहिगर आ बरियार रहलें। ए से अपने बाहर रहि के बुधन के सहायता क के भीतर पहुँचा दिहलें। कहलें कि जल्दी बोरा में रहर भरि कि हमके पकड़ा दे आ जल्दिए निकलि आउ। लेकिन, ओहि दिन साइत बुधन के संजोगे ठीक ना रहे। बुधन का भीतर पहुँचत कहीं कि पेहान के ऊपर उठावेवाला लागल चाँड़ अपनी जगहि से छिटिक गइल। बखार के पेहान भद्द से गिरि के अपनी पुरनकी जगहि पर आ गइल। बाहर से फुलेसर बड़ी कोरसिस कइलें कि चाँड लगा दीं। लेकिन, सगरे बल लगवला का बादो पेहान अकेले उठला मान के ना रहे। सगरे दाव फेल हो गइल त फुलेसर अपना इयार के बखारिए में फँसल छोड़ि के अपने बचे खातिर अपना घरे भागि गइलें।

ओन्ने बुधन बहुत देर ले बखार में गमाइल रहलें। बहुत देर ले बाहर से कवनो चाल ना मिलल त धीरे बोललें- 'इयरवा! काहें नइखे पेहनवा उठावत कि हम निकलीं रे? फुलेसर उहाँ होखसु तब नू बोलसु? थोरे देर बाद बुधन का बुझा गइल कि फुलेसरा भागि गइल बा त भीतरे पेहान उठावे के बल भर कोरसिस कइलें। जिउ उकबिक हो गइल। बुझाइल कि परान निकलि जाई त लगलें बुक्का फारि के रोवे।

बुधन का बाबा का कान में रोवाई के आवाज परल त घर का लोग के हाँक लगवलें- 'रे! हई सुनबसँ, बुधना रोवत बा का रे? सभे चारूओर बहरी खोजि लिहल। अन्त में, पता चलल कि बखार में रोवता।

बखार के पेहान हटावल गइल। बुधन निकालल गइलें। बखार में समइला के कारन जनला का बाद ऊ ना दवाई भइल कि बुधन का चले में खाली पुरुआ बहला पर दरद होला, लेकिन आजुओ ले बहुत देर ले सही- सलामत बइठि ना पावेलें।

बिहान भइला फुलेसर किहाँ ओरहन गइल। फुलेसरो बाबी त बाबी ह, दुसरो कवनो फिलिम देखला कि नाम पर थरथर काँपे लागेलें। बुझिए गइल होखबि लोगें कि काहें?

✍संगीत सुभाष

नवकी कलम

फूलवा

हरी भरी बगिया में फूलवा खिलल बा
कहीं जूही कहीं चमेली लगल बा
कहीं बा गेंदा त कहीं गुलाब सोभत बा
हर फूलवा अपने अपने में मस्त बा
त कहीं सूरजमुखी चमकत बा

बाकिर

बेचारा फूलवा के इहो पता नइखे कि
कौनो भँवरा ओकरा पीछे पड़ल बा
फूलवा के सब रस चूस के भँवरा उड़ जाला
कबो त नटखट लड़िकवा सब तोड़ के ले जाला
फूलवा से शोभे कबो देवी देवता सब
कबो एकरा से सुहाग सेज बन जाला
आजु के फैशन में देखी त ई फूलवा
बड़ा कमाल करि जाला
कबो त रूठल कनियाँ के मनावल जाला
हमरा से कोई बतलावे एकरा बदला
फूलवा के का दियाला?
वाह रे फूलवा कहस अजनबी
तोहरा बिना ई जिनगी अधूरा रह जाला।

✍अजय अजनबी
छपरा

कुंडलिया

बाँटे ज्ञान गली गली , जेके नइखे ढंग।
चिंहत नइखे लोग सब,आँति आँति के रंग।।
आँति आँति के रंग,सब जगे फइलल बाटे।
केहू करे ना कुछ, स्वाद लेबे बस चाटे।।
सोझाँ सबका होत, केहू तनिक ना डाँटे।
बनता ज्ञानी लोग, घूम, घूम ज्ञान बाँटे।।

दुनिया सब बा स्वार्थी ,मतलब के ही यार।
हो जइसे जोरू करे, शौहर ला सिंगार।।
शौहर ला सिंगार, करे नारी हो जइसे।
मैत्री के हाल अब,कुछ भइल बाटे वइसे।।
काम निकाले ख़ाति,गढ़ावे लोग नथुनिया।
होते हासिल जीत, जाला भूल ई दुनिया।।

शाने सब मातल रहे,आज काल के लोग।
नाही कतो दवा मिले,अस ना धइलस रोग।।
अस ना धइलस रोग,मानी जान लेई के।
जबले रही जीवन, रख दी लागे मही के।।
बुरबक चतुर दीपक, सब एकरा के जाने।
छोड़े तबो आदत, ना मातल रहे शाने।।

दूसर के जे छत छिने,अपने होत उघार।
होत बाटे जुग जुग से,जाने जग संसार।।
जाने जग संसार,नेक करम जे करेला।
जुगों जुग चले नाँव ,ओकरे लोग धरेला।।
जिनगी बनाव अपन,बंजर रेह ना ऊसर।
कुकरम कुल्ही छोड़,अपनाव मार्ग दूसर।।

हमरा के भुला गइलें, जाई बलम प्रदेश।
उनका ख़ाति मन तरसे,होला दीपक क्लेश।।
होला दीपक क्लेश,हिया में मन परला से।
होला नाही कमति,हरद दूध घटरला से।।
शौख सिंगार भुलल,सुन लागे सेज कमरा।
वियोग में मरी हम,आग लागल तन हमरा।।

नेता भाव छाव करे, छानी लेला गोड़।
वोट हमके देबि सभे,हाथ कहेला जोड़।।
हाथ कहेला जोड़,तनि कृपा रहबि बनवलें।
पाँच साल ले जवन,नइखे मुँही देखवले।।
कबो हरे ना दरद,भाषन ढ़ेर ऊ देता।
गाँवे आके आज, बड़ी बढ़ चढ़ के नेता।।

✍दीपक तिवारी,श्रीकरपुर,सिवान।

हर दर्द हसी के छुपावे पडेला

हर दर्द हँसी के छुपावे पड़ेला
आँसू लेके भरि अखिया
मुस्कुराये पड़ेला ।।
भीड़ मे रहला प भी
अपने से ही बतियावे पड़ेला।
हर दर्द हँसी के छुपावे पड़ेला।।

बात कहल बा साँचे भइया,
सबसे बड हवे समइया ।।
अपने बनावल जाल में,
मकडी जस अझुराये पड़ेला ।
हर दर्द हँसी के छुपावे पड़ेला।।

चहले न चहले से का होला
जवन लिखल बा उहे मिलेला
समय के संघे जिनगी बितावे पड़ेला।
दिलवा में का बा बतावे पड़ेला।
हर दर्द हँसी के छुपावे पड़ेला।।

स्वार्थी दोस्त यार ,
घाव करे बरियार।।
तबो कन्धा से कन्धा मिलावे पड़ेला।
हर दर्द हँसी के छुपावे पड़ेला।।

उपजाऊ जमीन त उपजाऊ बा
बंजर मे फुलवा खिलावे पड़ेला।

धूप छाँव मे देहिया जरावे पड़ेला।
समय साथे जिनगी बितावे पड़ेला।

✍राजू साहनी
ग्रा/पोः-मदनपूर
जिला -देवरिया(उ०प्र०)

हम हिंदुस्तानी हई

चौराहा पर बेचत तिरंगा अम्मा के
लाठी बनल चाहत बानीं।
हम हिंदुस्तानी हईं ..
हिंदुस्तान के माटी बनल चाहत बानीं।
कलाम के मजहब,
कबीरा के बानी,
अजमेर के अजान,
बनारस के आरती,
इंसानियत जहवाँ बसे,
ऊ छाती बनल चाहत बानी,
हम हिंदुस्तानी हईं..
हिंदुस्तान के माटी बनल चाहत बानीं।
करी गुरु से राम राम
पीर के सलाम करी,
बनी ईद के सेवई,
दिवाली में ममता के मिठास भरी,
सत्य अहिंसा के डगर के,
राही बनल चाहत बानीं,
हम हिंदुस्तानी हईं..
हिंदुस्तान के माटी बनल चाहत बानीं।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई,
एक डाली के फूल,
एक धागा में गुथी,
बन जाइ अइसन माली,
भूख मिटावे जवन ऊ गरीब के,
थाली बनल चाहत बानीं,
हम हिंदुस्तानी हईं..
हिंदुस्तान के माटी बनल चाहत बानीं।

✍अभियंता सौरभ कुमार

बिधना कौन बिधि भेजलऽ

बिधना कौन बिधि भेजलऽ ना ठाँव दिहलऽ... 2
रहे के मड़इयो नाहीं.... 2 गाँव दिहलऽ ....
बिधना कौन बिधि भेजलऽ.....

कवना कलमिया से, भाग मोरा लिखलऽ हो ...
कवना जनमिया के बदला तू लिहलऽ हो...
बोले के मुँहवा नाहीं... 2 पाँव दिहलऽ..
बिधना कौन बिधि भेजलऽ ना ठाँव दिहलऽ...

माई मोरा कइसन बाड़ी हम नाही देखनीं हो .....
कोरवा में उनका हम कुदनीं ना खेलनीं हो.....
ऊ निर्मल अँचरवा के ना...2 छाँव दिहलऽ
बिधना कौन बिधि भेजलऽ ना ठाँव दिहलऽ. ..

बाबूजी के बोलिया के कबहू ना सुनली हो...
अइसन बिपतिया के कबहूँ ना गुनली हो....
केकर हम लइकवा हईं..2 ना नाँव दिहलऽ...
बिधना कौन बिधि भेजलऽ ना ठाँव दिहलऽ....

तूहीं बताव दइबा जिअब केकरा साथे हो
केहू के ममता नाहीं बाटे मोरा माथे हो
श्याम जी कहेलें कइसन..... 2 घाव दिहलऽ...
बिधना कौन बिधि भेजलऽ ना ठाँव दिहलऽ..

✍श्याम श्रवण

आइल गइल तऽ लगले रही

आइल गइल त लगले रही, जिनगी के ह खेला।
स्वारथ जनम कइल जो चाहऽ, प्रभु के बनि जा चेला।
अकेला न तू बारऽ बबुआ, अकेला न तू बारऽ बबुआ।

जिनगी कब ठहरे ला कबहूँ, दरिया जस बह जाला।
पतझड़ के मौसम आइल त, सावन आवे वाला।
माया मोह क बंधन सगरो, जनम मरन के खेला।
अकेला----------१

हाय हाय मत करिहऽ भइया, रुपया हउए माटी।
राम नाम बस भजि ले मनवा, उहे न बाटे थाती।
जबले सँसरी चली ए भइया, लागल रही झमेला।
अकेला----------२

भले भरल ह घर अंगनइया, खेलें नाती पोता।
अंत समय महसूस हो जाई, सगरी सिक्का खोटा।
सथवा में केहू ना जाई, लागल भले ह मेला।
अकेला ----------३

माटी के लालच में सुगना, बिरिथा जनम गँववलऽ।
अंत समय जाए क बेरा, कफ़न तू दू गज पवलऽ।
धन दउलत इहवें रहि जाई, साथ न जाई धेला।
अकेला----------४

✍सन्तोष कुमार "सूर्य"
तुर्कपट्टी, देवरिया, (उ.प्र.)

ओल्हा पाती आइस-पाइस

ओल्हा-पाती, आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।
ए डाढ़ी से ओ डाढ़ी पर,कूदि-कूदि के भगनी जा ।।
बड़ सेयान सब मिनहा करें,तबो न मानी हमनी जा ।
जो काका से कबो धरइनी,भुइयाँ तब पटकइनी जा ।।

कान पकड़ के घरे ले आवस,कचकी कोइन खोजे ऊ ।
बाबा ईआ कहिके चोकरी,अब बस जान बचाव तू ।।
बाबा ईआ अइले कहले,सब कढ़ले जवन खिअवनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

बाबा गरिआवे काका के कि,काहे मरले ते लइका के ।
खेलिहे ना त करिहे बाबू,का ते ना खेलले लइका में ।।
बेर-बेर अस गलती क के,हमनीका बच गइनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

ओल्हा-पाती के डरे अब,आइस-पाइस शुरू भइल ।
लुक्का-छुप्पी, छुपा छुपाई,खेलत में बहुते समय गइल ।।
काका सूतल रहें अन्हारे,उनकी खटिया तर छुपनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

हमनी से हिलल खटिया उनकर,कपकपी समाइल जगले में।
अब इहवाँ के हमे बचाई,बस भलाई बा भगले में ।।
भाग के कइसो उहवाँ से,मारी से बच गइनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

हमनी का भागी आगे-आगे,पीछे चोटिआवे काका हो ।
कतहू रुके ना ऊ बिलमे,जइसे गोड़वा रेल चाका हो ।।
हमनी से परेशान ऊ काका,उनसे परेशान तब हमनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

ऊ दिनवा आ जाइत फिरसे,मन बड़ा ई करेला ।
काका क गरिआवल डाँटल,ओहसे मन कब भरेला ।।
हे 'मणि' ई सम्भव नइखे,बस बचपन याद करि लिहनी जा ।
ओल्हा-पाती आइस-पाइस,बचपन में खूब खेलनी जा ।

✍रघुवंश मणि दूबे

नेतवा महान बा

होखत बा चारू ओरिया ऐलान पर ऐलान बा
गूँजत बा जय जय जयकारी नेतवा महान बा

केहु नाही रखवइया बा, पुछवइया केहू ना बा
डुबलन सगरे खसी-पाठी अब आफत में जान बा

चोर, चाई, क्रिमनल, गुंडा कुछऊ होखे त का
जात भाई आपने एम, एल, ए. होखे शान बा

नेतवा चाचा, ईया, बाबा कहि के पाव धरे लागल
कब ई फिर से आई वापस का ई तहरा भान बा

जब मुर्गा, दारू, पइसा पर बिकत वोट बा लोगवा के
लोगवा के भोटवा के 'अनिल 'का अब तनिको मान बा

✍अनिल कुमार
गोपालगंज

माई के नेहिया

माई के नेहिया में एतना बा प्यार
कइसे करीं हम ओकर बखान,
शब्द अइसन नइखे बनवले संसार
जेह में समा सके माई के प्यार।
नौ महीना अपने कोख में रखली
आंसू और पीड़ा सहली अपार।
तबहूँ ना मनली माई कबो हार
देहली हमनीं के माई जीवन दान।
माई के नेहिया में एतना बा प्यार--

कई कई रतिया ना सुतली ऊ अबला
देवे खातिर हमनी लोग पर ऊ ध्यान,
गीला पर अपने सूत गइली माई
हमनी के अपना सीना से लगाई।
अपना सुख पर ना देहली ऊ ध्यान
हमनी के बनावे खातिर नेक इंसान।
अपना गहना गुरिया के बेच देहली
हमनी के करवावे खातिर इलाज।
माई के नेहिया में एतना बा प्यार--

उनके काहे आज तू देहलऽ बिसार
तोहरे खातिर जवन पूजली पहाड़,
कबो स्टेशन पर त कबो आश्रमवां में
छोड़ के अवतारऽ माई लोग के हाथ।
अपना करेजावा के करके कठोर
तू आज मार देहलऽ माई के ठोकर,
जेकरे कारण मिलल ई जीवन दान
छोड़ देहलऽ ओकरा तड़पत आज।
माई के नेहिया में एतना बा प्यार--

अब सुनि के माई के दर्द भरल अरजिया
जवन आश्रम में तू हमके छोड़ गइलऽ,
तनी आ के देख लेतऽ इहवाँ के हाल
बानीं हम इहाँ केतना बेहाल परेशान।
गरमिया में जरताटे ई देहिया हमार
सुतत बाड़ऽ तू ए .सी में लेके परिवार।

एतने बाटे तोहरा से अरजिया ए बेटा
काहे नइखऽ लगवा देते इहाँ एगो पंखा।
माई के नेहिया में एतना बा प्यार–

काहे कि समइया जब इतिहास दोहराई
जब तोहरा के कबो छोड़ केहु इहा जाई,
तब ना होई तोहरा के पछतावा ए बाबू
चल ना पाई जब तहार वक्त पर काबू।

सुन लऽ ए बेटा हमार एतने अरजिया
कर जोड़ करऽ तानी तोहसे विनितिया।
अब तऽ चलता अंतिम हमारे सांस
एहिसे चेतावत बानीं ए हमार लाल।
माई के नेहिया में एतना बा प्यार--।।

✍पूजा प्रसाद प्रज्ञा

कुंडलिया

भारत भूमि अयोध्या,देखत शिलान्यास।
मोदी जी के राज में,रचा गइल इतिहास।।
रचा गइल इतिहास,आजु दुनियाँ बा देखल।
अइसन देखि विकास,लोग कुछ भइलें बेकल।
पूरा भइल सपना,मंदिर के राह निहारत।
आजु बुझस संसार,गजब बा महान भारत।।

✍गणेश नाथ तिवारी "विनायक"
श्रीकरपुर सिवान

अगिया बाबा

ऊ एतवार रहे आ रंजन अपना कमरा में बइठ के दू दिन बाद होखे वाला आपन विज्ञान के परीक्षा के तइयारी करत रहले। ओह बेरा घड़ी में दुपहरिया के 1 बजत रहे। रतनपुरा नामक ओह गाँव में ऐ बेरा सभ रास्ता सुनसान रहे काहे से कि आज टेलिविजन पर एगो नया फिलिम के प्रसारण होत रहे। एही समय

रंजन के बहरी से कुछ लोग के हल्ला के आवाज कान में पड़ल। पहिले त ऊ एकरा अनसुना क दिहले बाकिर जब ऊ सुनले कि "पानी लेयावऽ, आगि के बुतावऽ" त उनका बुझाइल कि बहरी केहू के घर में आग लागल बा आ ई सोंचते ऊ फट से आपन पढ़ल छोड़ के अपना कमरा के जंगला पर जवन बहरी सड़क पर खुलत रहे पर जाके खड़ा हो गइले आ बहरी देखे लगले। रंजन देखले कि एगो आदमी जवन अपना कपार पर पेटारी के बोझा ले के जात रहल ह ऊ आ एगो साधु बाबा अपना 4-5 गो चेला लोग के संगे लोग के भीड़ के बीचे खड़ा बा लोग। ओही लोग के लगे ओह मजदूरा के पेटारी के बोझा में से धुँआ अबहियो उठत रहे। रंजन के ई समुझत देर ना लागल कि अबहीं तनिका घरी पहिले लोग जवन आगी बुतावे के हाला करत रहल हऽ ऊ इहे आगि के बुतावे के कहत रहले हँ आ हो ना हो साधु बाबा आ ओह मजदूरा में कवनो बात भइल होखी जेकरा बाद साधु बाबा चाहे उनकर चेला लोग मजदूरा के बोझा के जरा दिहले होइहें। खैर रंजन बहरी के ई कुल्ह बात के छोड़ के फेर से अपना पढ़ाई में ध्यान लगावे लगले।

ए घटना के अबहीं एको सप्ताह ना भइल रहे तले साझि बेरा जब रंजन आ उनकर संघतिया लोग खेल के लवटत रहे त देखल लोग कि एक जगहा लोग के भीड़ जुटल रहे आ लोग साधु बाबा के जय-जयकार करत रहे। रंजन आ उनकर संघतिया लोग भी ओह भीड़ के लगे चल गइल। ऊहवाँ पहुँच के रंजन देखलें कि साधु बाबा एगो आसन पर बइठल रहले आ उनकर चेला लोग ओहिजा चार पाँच जगे सुखल लकड़ियन के

कुंडिया के धरत बा लोग आ बाबा अपना कमंडल में से जल लेके कुछ मंत्र पढ़स आ ओह लकड़ियन के एगो कुंडी पर छीट देस। एमें कवनो आश्चर्य के बात ना रहे, अइसन त बाबा लोग पवित्र करे खातिर करबे करेला। रंजन अबहीं अपना मन में इहे सोंचत रहले तले ऊ देखले कि बाबा जवना कुंडी पर जल छीटले रहलहन ऊ कुंडी में अपने से आग धऽ लिहलस। एने कुंड़ी में आग धइलस आ ओने लोग बाबा के जय-जयकार करे लागल। रंजन के देखते-देखते बाबा ओजा राखल सभ कुंडी के पानी से ही जरा दिहलें। रंजन के एह बात से बड़ा आश्चर्य भइल। आ ऊ मन में इहे सोचत कि आखिर लकड़ी में पानी से कइसे आग लागल हऽ अपना घरे आ गइलन। इहवाँ हम बता दीं कि रंजन नउवाँ में पढ़े वाला एगो तेज लइका रहले आ उनकर बाबूजी सरकारी विभाग में एगो वैज्ञानिक रहनीं आ अबहीं कुछ महीना पहिलहीं ऊ लोग सपरिवार एजा रहे आइल रहे लोग। चलीं अब कहानी में फेर से लवटल जाव।

अब त गाँव में आइल एह नयका साधु बाबा के चरचा रोज होखे लागल आ उनकर प्रसिद्धि दिन पर दिन बढ़े लागल। साधु बाबा गाँव के बहरी एगो खाली पड़ल सुनसान हवेली के आपन आश्रम बना के ओही में रह लगलें, आ गाँव के लोग कवनो समस्या के समाधान खातिर उनकरा लगे जाव आ साधु बाबा के आशीर्वाद से अपना समस्या से छुटकारा पा लेवे लोग। साधु बाबा के लोग अब अपना घरे भी हवन आ पूजा पाठ करे खातिर बोलावे लागल लोग। ऊ लोग के ई कहनाम रहे कि बाबा के हवन कइला से घर के दुख बलाए भाग जाला काहे से कि बाबा पानी से हवन के समिधा में आगि लगा के ओह में घर के सभ दुख बलाए के जरा देले।

एही तरे एक दिन रंजन जब दुपहरिया में इस्कूल से लवट के अइले त देखले कि उनका घर के बगल में रहे वाला कमेसर काका के घरे भी ई साधु बाबा आ इनकर चेला लोग हवन करत रहे। आ उनकर(रंजन के) माई भी ओहिजा गइल रहली। ओहि दिने राति में जब सभे खाना खाए बइठल रहे त रंजन के माई कहली कि "गाँव में जवन साधु बाबा आइल बानीं, ऊ बहुत पहुँचल बाबा बानीं, ऊहाँके जेकरा घरे भी हवन करीले ओकरा घर के सभ कष्ट मेट जाला। हमरो मन करता कि अपनो घरे एक बेर बाबा से हवन करवा लिहल जाव। " अपना माई के मुँह से बाबा से हवन करवावे के बात सुन के रंजन चिहा गइले आ कुछ कहिते ओकरा पहिलहीं उनकर बाबूजी कहलें कि ठीक बा जवन तहरा नीमन लागे करऽ बाकिर ई सभ बाबा के फेरा में अधिका मत पड़िहऽ।"

खैर रंजन के माई ई बात सुन के बहुत खुश भइली आ बिहान भइला रमावती चाची(कमेसर काका के मेहरारु) के संगे जाके बाबा के अगिला एतवार के अपना घरे हवन करे के नेवता दे अइलीं। एने रंजन जे विज्ञान के एगो तेज विद्यार्थी रहलें ऊ एह बात के पता लगावे में जुट गइलें कि आखिर सुखल लकड़ियन में पानी के छिटला से आग काहे धऽ लेता। ऊ सोचलें कि ए में कवनो ना कवनो राज बा जवन बाबा आ उनकर चेला जानतारे। ई बात दिमाग में आवते अब रंजन जहाँ जहाल गाँव में बाबा हवन करस ओजा जाए लगले, एह दौरान रंजन देखले कि जहाँ पहिले गाँव के पांडे बाबा हवन करावे आईं त जजिमान लोग अपने हवन के लकड़ी हवनकुंड चाहे तसला में सरिहारे, बाकिर ई बाबा जहाँ हवन करे जा तारे ओजा इनकर चेला लोग पहिलहीं से जाके हवन के लकड़ी सरिहारत बा। एह सभ में जब ऊ धेयान से देखले त पवले कि बाबा के चेला लोग जब लकड़ी सरिहारे ला त घर का लोग के नजर बचा के ओह लकड़ियन के बीच में अपना छोरा में से तनी-तनी उजर रंग के कवनो चीज राख देला लोग। बस ई देखते रंजन के ई बात बुझा गइल कि हो ना हो सभ करामात इहे ऊजरका चीज कर रहल बा। अब रंजन के अपना इस्कूल के विज्ञान के अध्यापक आठवाँ में बतावल ऊ बात कि "कुछ पदार्थ अइसनो बाड़ें जे पानी के संपर्क में आवते जरे लागेले" इयाद पड़ गइल। मास्टर साहेब ओह दिन कक्षा में इहो बतवले रहनीं कि "सोडियम नामक एगो पदार्थ जवन देखे में तनी ऊजर पर होला, अइसने एगो पदार्थ हऽ जवन पानी के संसर्ग में आवते आग ध लेवेला"। ई सभ मन पड़ते रंजन अपना मन में बहुत खुश भइले आ उनका दिमाग में ई बाबा के पोल खोले के एगो जुगुति बने लागल। ओही दिने रात में जब ऊ अपना बाबूजी के संगे टहलत रहले त उनकरा से आपन जुगुति बतवले आ हवन के दिने गाँव के थाना के जे थानेदार बाड़े उनकरो के मय सिपाही लोग का संगे अपना घरे

बोलावे के कहलें। रंजन के बाबूजी के भी रंजन के ई बात पसंद पड़ल आ ऊहाँ के भी एह जुगुति में रंजन के संगे शामिल हो गइनी।

अब नियत एतवार के दिने बाबा के चेला लोग रंजन के घरे बाबा से पहिले हवन के तइयारी करे खातिर अइले। ओही समय में थाना के भी पूरा टीम आ गइल आ गाँव के भी सभ लोग रंजन का घरे जुट गइल। जब साधु बाबा के चेला लोग हवन खातिर लकड़ी सरिहारे चलल लोग त रंजन आ उनकर बाबूजी आगे बढ़ के कहल लोग कि "हवन के लकड़ी रउआ लोग ना हमनी के सरिहारेब। ई सुन के बाबा के चेला लोग के चेहरा के रंग बदल गइल बाकिर गाँव के लोग आ पुलिस के जवान के देख के ऊ लोग कुछऊ ना कहल चुपचाप एकोरा जाके खड़ा हो गइल लोग।" एकरा बाद रंजन आ उनकर बाबूजी मिल के हवन के सभ लकड़ी सरियावल लोग आ गाँव के लोग के संगे बाबा के इंतजार करे लागल लोग। तनिका देर में बाबा अपना दू जना चेला लोग के संगे रंजन का घरे आ गइलें। आवते बाबा अपना आसन पर बइठलें आ लोग के कुछ प्रवचन दिहलें आ ओकरा बाद कुछ मंतर पढ़ के आँख मूनि के अपना कंमडलु में से जल लेके हवन के लकड़ी पर छींटले आ कहले कि "हवन शुरु कइल जाव," बाकिर ई का हवन के लकड़ी में त आग धइबे ना कइलस, ई का भइल ओजा उपस्थित सभ लोग इहे चर्चा करे लगले, बाबा फेरू एक बेर मंतर पढ़े के ढ़ोंग कइले आ अपना कमंडलु के जल लकड़ी पर छिरिकले बाकिर लकड़ी के ना जरे के रहे से ऊ ना जरल अब बाबा चिहा के पहिले से आइल अपना चेला लोग कि ओर देखले आ आँखिए आँखि में कुछ पुछले, त ओने से चेला लोग ना में आपन मूड़ी हिलावल जवना के बाद बाबा ऊहाँ से उठ के जाए खातिर ई कहत खाड़ा भइले कि "एजा कवनो गलती भइल बा एही से अग्नि देवता नाराज हो गइल बाड़ें, आ ऊ प्रकट नइखन होत, अब ई हवन आज ना बलुक तीन दिन बाद होई।" ई कहके ऊ जइसहीं चले लगले रंजन के बाबुजी के इशारा पा के थानेदार साहेब अपना सिपाही लोग से बाबा आ उनकरा चेला लोग के रास्ता रोकवा दिहले। एकरा बाद रंजन अपना जगहा से खाड़ा भइले आ ऊ सभ लोग से कहले कि "ई बाबा कवनो करामाती बाबा ना हउवन, ई जवन पानी से आग लगावे के करामात करत रहले हँ, दरअसल ऊ सभ विज्ञान के सहारा से करत रहले हँ। केहू के घरे जब-जब ई बाबा हवन करे जात रहले हँ त ओजा इनकरा से पहिले इनकर चेला लोग पहुंच के लकड़ी अपना से सरियावत रहल हऽ आ ओही घरी ई लोग सोडियम नामक पदार्थ के ओह लकड़ियन के बीच में चोरा के ध देत रहल हऽ। सोडियम में गुण होला कि ऊ पानी के संपर्क में आवते आग ध लेला, जइसन कि बाबा के द्वारा अपना कमंडल में से पानी छिरिकला से होत रहल हऽ, आ एही के इनकर चेला लोग बाबा के चमत्कार कहत रहल हऽ।" एह बात के साबित करे खातिर रंजन अपना कमरा में गइले आ अपना इस्कूल के झोरा में से विज्ञान के शिक्षक से मांग के ले आइल सोडियम के डिब्बी लेके हवन वाला जगहा पर अइले आ सभकरा के देखा के ऊ ओह डिब्बी में से तनकी सा सोडियम हवन खातिर धइल लकड़ियन के बीच में ध दिहले आ बाबा के कमंडल में से पानी लेके ओह लकड़ियन पर छिरिक दिहले, लोग के देखते-देखते ऊ लकड़ी जरे लगलीसँ आ लोग अचंभा करे लागल। एकरा बाद थानेदार साहेब बाबा आ उनकरा चेला लोग के गाँव के लोग के बुड़बक बना के धोखा देवे के आरोप में गिरफ्तार क के थाना में ले जाके सख्ती से पुछताछ कइले त पता चलल कि ई लोग एगो दूर के शहर में बैंक में डाका डाल के आइल बा लोग आ एहू गाँव में डाका डाले के फेरा में ही लोग के घरे घरे हवन के ढोंग करत रहल हऽ लोग। ओह लोग के निशानदेही पर बैंक के लूटल सगरी रूपिया पइसा पुलिस बरामद कर लिहलस। एकरा बाद ओही साल गणतंत्र दिवस के दिने सरकार के ओर से रंजन के उनकरा सुझबुझ आ समझदारी खातिर पुरस्कार भी दिहल गइल।

✍राम प्रकाश तिवारी "ठेठबिहारी"
ग्राम+पोस्टः भटकेसरी, थाना जलालपुर
जिला सारण(बिहार)

भुनेसर भाई के ठेकुआ

जिउतिया आवे से महीना भर पहिले से ठेकुआ के नाम जपत बाड़े भुनेसर भाई. काल्ह जिउतिया त बीत गइल लेकिन सोमेसर बो भउजाई एक्के ठेकुआ माने कि खाली 'ओठंधन' से भेंट होखे देले बाड़ी भुनेसर भाई के. बाकी ढेरे मनी ठेकुआ बना के सिकहर पर धर देले बाड़ी कि भोरे जेतना मन करी, खा लेम.

भुनेसर भाई के रात कटले नइखे कटात कि कब भोर होखे आ ठेकुआ के भोज कइल जाव. ऊ आँख खोलत बाड़े तबो भा बंद करत बाड़े तबो आँखि के सामने ठेकुए लउकत बा. हमरा लागत बा कि दुइ चार साल बितला के बाद भोर के चार बजल रहे ओह दिन. मुर्गा बांग ना देले रहे लेकिन भुनेसर भाई के संतोष जवाब दे गइल रहे. ना हाथ धोवले ना मुँह आ पहुँच गइलें चूहानी में.

सिकहर पर हाथ ड़ालत बाड़े त का... बरगुना तs खाली बा...

एक्को ठेकुआ के आता पाता नइखे... भुनेसर भाई के त दुनो जहान हिल गइल.

दुनो हाथ से माथा पकड़ले, धमाक से जमीन पर बइठ गइलें भुनेसर भाई.

हमरा धन प डकइती...

आज जे चोर भेटा गइल न त दुनो हाथ आ गोड़ फरिके फरिके कइले बिना ना छोड़ेम...

तबले जमीन में कुछ खुरू खुरू लेखा बुझाइल. सारा खिस्सा एक मिनट में बुझ गइले भुनेसर भाई. ले अइले कुदारी आ कोड़ देले चूहानी. तेरह में से जोड़ जाड़ के कुल एगारह गो ठेकुआ बरामद क ले ले आ पानी से धो के बइठ गइले जिमे.

जब सोमेसर बो भउजाई उठली त चूहानी हर बैल से जोतल देख कपार पीट ले ली. अगिला दुआरी प भुनेसर भाई माटी में लोटाइल पोटाइल ठेकुआ पावत रहले त पूछ देली ई का कइनीं भुनेसर बबुआ?

हँसत बाड़े भुनेसर भाई. "मजाल बा केहू के, जे भुनेसर के ठेकुआ ले के भाग जाई."

आ देखते देखत कुलि ठेकुआ पा गइले भुनेसर भाई. ई दोसर बात बा कि अगिला दस पनरह दिन दवाई बीरो चलल. लेकिन आजो कहे से मानत नइखन कि "मजाल बा केहू के, जे भुनेसर के ठेकुआ ले के भाग जाई."

✍**विशाल नारायण**

ग्राम - सखुआँ, पोस्ट- पाँजर, थाना- करगहर, जिला रोहतास, बिहार, 802215

बिलइया

का जाने माई बाबू ओकर नाव का धइले रहे, बाकी भर जवार के लोग ओकरा के 'बिलइया' कह के बोलावत रहे।

7-8 बरिस के एगो छोट लइकी जवन भर दिन अपनी सहेली सब का संघे 'बगे छू' खेले आ साँझ होते अपना मड़ई में जा के सूत रहे। भर गाँव के लोग खातिर बिलइया फोकट के दाई रहे, कबो पंडी जी के गगरा माँज देवे, कबो मुखिया जी के मेहरारू के साड़ी फींच देवे, कबो केहू के बरतन माँज देवे आ कबो कबो लइका के खेलावे। एकरा बदला में ऊ लोग से बिलइया कुछो मांगे ना बाकी लोग मोहे कुछो खाए के दे देवे।

समय एक जगे रुकल त रह ना सके, ऊ अपना रफ्तार से बढ़ते रहेला। देखते देखते दस बरिस बीत गइल बिलइया के गाँव में रहत। एक दिन मुखिया जी पंचायत बोलवलन आ सभे से कहलन कि अब हमनी के बिलइया के बियाह क देवे के चाहीं। सभे लोग आपन सहमति दिहलसि। लइका खोजे के काम दिआइल ओ गाँव के पुजारी जी के। बिलइया के एगो जन्मकुंडली बनावल गइल आ ऊ ले के पुजारी जी चललन लइका खोजे। आखिरकार बिलइया के रिस्ता तय भइल। गाँव भर के लोग अपना अपना सहजोग से बियाह के तैयारी में जुटल।

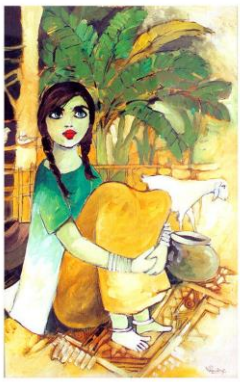

कहल जाला कि समय से जादे बलवान केहू ना होला। का जाने कइसे लइका वाला के पता चल गइल कि बिलइया ओह गाँव के ना हिय, कहीं से भाग के आइल बिया, ओकर माई बाबू, जात, गोत्र, खानदान, परिवार ई सब के बारे में केहू नइखे जानत, पंडी जी झूठो के कुंडली बना के दिहले बाड़न। बस तब का सब कइल धइल माटी में मिल गइल, बियाह टूट गइल आ साथे साथे बिलइया के सुख के आस भी टूट गइल। अब बिलइया चुपचाप अपना मड़ई में पड़ल रहेले, केहू से जादे बोले ना।

एक दिन बिलइया आएना के सामने खड़ा रहे तले ओकरा बुझाएल कि ओकरे रूप आएना में से कुछो कहता।

- का रे बिलइया ते त बहुत कमजोर बारे, तोर बियाह टूट गइल त सब छोड़ छाड़ के पड़ गइले। जवना से कबो भेंट नइखे भइल ओकरा खातिर ते उदास हो गइले आ जवन गाँव के लोग बचपन से तोरा के पाल पोस के बड़ कइलसि ओकरा प्रति तोर कवनो फर्ज नइखे का, जो जा के काम कर एही खातिर ते इहाँ आइल बारे, बियाह के सपना छोड़ दे... छोड़ दे।

बिलइया के आँख से टप टप लोर चुए लागल, ओकरा बुझा गइल कि बियाह ओकरा भाग में नइखे। लोर पोंछ के बिलइया उठल आ चलल काम करे।

धान के रोपनी होत रहे, बिलइया धड़धड़इले खेत में ढुकल आ लागल गीत गा गा के धान रोपे। सब चिंता फिकिर भुला गइल। अब ओकरा जिंदगी के एके मकसद लउकत रहे, जे ओकरा के पाल पोस के बड़ कइलसि ओकर कर्जा उतारे के आ ई काम में ऊ तन मन से लाग गइल।

केतना समय आइल आ केतना गइल, बाकी बिलइया आपन उहे धुन में काम करते रह गइल।

जब आदमी जावनी से बुढ़ौती का ओर बढ़ेला त धीरे धीरे ओकर देह के दम हेराए लागेला बाकी सत्तर बरिस के उमिर में भी बिलइया जवना फुर्ती से काम करेले ओकर परतर भर जवार में केहू ना कर सके।

बिलइया अपना तन मन से गाँव के कर्जा चुका रहल बिया आ तबतक चुकावत रही जबतक ओकर साँस चलता।

✍कुमार चंदन
छपरा, बिहार

जहिया टूटि जइहें

जहिया टूटि जइहें नथिया के तार गोरिया।
तहिया हो जइहें नथिया बेकार गोरिया।।

अम्बर,आगि,हवा,जल,माटी।
रचिके बनायो करतार गोरिया।।

पाँच रतन से नथिया बनिगै।
अगिनि तपाय बार-बार गोरिया।।

एह नथिया के तार जो टुटिहें।
जोरि नाहिं पइहें सोनार गोरिया।।

नथिया जोगा के जतन से रखिह।
कई कई बाने लूटनहार गोरिया।।

काम,क्रोध,मद लोभ लुटेरा।
लूटि लीहें भरले बजार गोरिया।

कहे"रविनंदन"सुनहु सयानी।
नथिया के रखिह सँभार गोरिया।।

✍**रविनंदन सैनी**
ग्रा.+पौ. सहडिगरी
विजयीपुर गोपालगंज

कोरोना

आफत में बाटे ई सगरो जहनवाँ
हाय राम आइल बा जबसे कोरोनवाँ

बढ़ते बेमरिया से जियरा डेराइल
मनवा के खुशिया बा सगरो हेराइल
चलि गइलें केतनन के सेतिहे परनवाँ
हाय रामआइल बा----

पसरि के आइल कचहरियो में भाई
कोरोना बा दिहले मवक्किल भगाई
मुंसी वकीलन के बिखरल सपनवाँ
हाय राम आइल बा----

खेतिया के चिंता त सुतहूँ न देला
लागल बा जिनगी में अजबे ई खेला
चुअत मडइया में सिसके किसनवाँ
हाय राम आइल बा----

सून पड़ल गउवाँ लोगवा न लउके
मेड़वा-डगरिया त जोर-जोर ठउके
अब त अकेले में रोवे सिवनवाँ
हाय राम आइल बा-----

दुइ गज रहे दूरी ढपना जरूरी
मनइन के जमघट कोरोना के धूरी
मानि ल तू कृष्णा के सगरो कहनवाँ
हाय राम आइल बा-----

✍**कृष्णा श्रीवास्तव**
हाटा,कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

राउर बात

✍कृषक जीवन के लुप्त हो रहल भव्य विरासत के तलाश करत विवेक जी के कहानी 'जुआरी' वर्तमान युग के जथारथ से पैदा प्रेरणा परक कथा ह। बहुत नीक लागल। आस जगा गइल। # दिनेश पाण्डेय, पटना

✍सिरिजन (लोकप्रिय भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका) अपना नौवाँ अङ्क का सङ्गहीं प्रकाशन का तिसरा बरिस में प्रवेश क लिहले बा। सभे रचनाकार आ समस्त सिरिजन परिवार के अनघा बधाई, शुभकामना। सिरिजन के झपोली हर विधा का रचनन से उपरौंछा भरल बा। हास्य व्यंग्य के सुप्रसिद्ध कवि आ लोकप्रिय मंच संचालक आ0 अनिल चौबे भैया के ए गो धारदार तेवर देखे के मिलल।दिल खुश हो गइल। # शशि रंजन शुक्ल सेतु, बैंगलोर

✍सिरिजन दिन ब दिन निखरल जाता।सब तरह के उच्च स्तर के सामग्री से अंक भरल बा।अब सिरिजन के प्रकाशन के धरती पर उतारे के बा।सिरिजन परिवार के खंचियन साधुवाद।# कनक किशोर, रांची, झारखण्ड

✍जन-जन के , घर-घर के पत्रिका सिरिजन के नियमित पाठक अउ रचनाकार होखे के नाते सभसे पहिले हम सरल , सहज , सलिल आ समरस नउवाँ अंक के प्रकासन खातिर समूचे सिरजन परिवार के सादर बधाई देत बानी ।येह पत्रिका के हर अंक में अपना माटी की खाँटी परिपाटी झलकेला। साँच कहीं तऽ सिरिजन भोजपुरिया लोक साहित्य, हास-परिहास , ग्यान विज्ञान से भरल सरोवर के ऊ जल बा जवना खातिर मनई आकुल बिरहाकुल रहेलनि।जसहिं पत्रिका के पी॰ डी॰ एफ॰ प्रति मिललि हा , मन में शांति मिलल ह , हियरा अघा रहल बा सिरिजन के सर्जक बहिनी - भइया के सुन्नर सुग्घर सब्दन से सजल रचना पढ़ि के। सच्चाई के दू सब्द

लोक के टहटह लाल ललाई से सजल
काल के कुचकुचु साम सियाही से सजल
सिरिजन जन मन गन के नैनन के अंजन
प्रेम के टहटह लाल ललाई से सजल

सुभकामना के साथे साथ सादर प्रणाम
#अमरेन्द्र, भोजपुर, बिहार

✍पढ़ि के करेजा जुड़ा गइल, ई भोजपुरी त एकदम हमनी की जवार वाला भोजपुरी ह। जोरदार हास्य की संघे संघे जोरदार कटाक्ष भी बा। दुआरपूजा की दीया जइसन भभकते बा, सभे जगावते बा त सुतल के बा, रउवा सफल नइखीं त हर सफल आदमी के गरिया सकेनी, बढ़िया तंज। उच्च स्तरीय भाषा में खानदानी गारी दीं। शाब्दिक दलिद्दर, सचहूँ मन अघा गईल पढ़ि के, हमरो ओर से बहुते बधाई| # वी. एम वृष्टि, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश

✍समसामयिक आवरण चित्र से सजल सिरिजन के नौवाँ अंक में जेतना ले अबहीं पढ़े पवले बानी ओकरा आधार पर ई कहे में आनंद के अनुभूति हो ता कि भोजपुरी सेवा का अपना एकमेव लक्ष्य की ओर पतिरका डेगे-डेगी बहुत सधल अंदाज में बढ़ि रहल बा। मय सिरिजन परिवार के अनघा बधाई, शुभकामना, जय भोजपुरी जय भोजपुरिया # शशिरंजन, गोपालगंज, बिहार

✍सादर श्री के जथा जोग दण्ड परनाम आवाभगत सहित हार्दिक बधाई आ स्नेहिल सुकामना बा कि #सिरिजन के दशांक प्रकाशित होखे जा रहल बा। अनेकन भारतीय भाखा में तरह - तरह के पत्रिका छपेलिन सन बाकिर भाई भाखा भोजपुरी में प्रिन्ट चाहे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आजु भी गिनल चूनल पत्रिका बारिन सन। जेमे अधिकतर में एगो खास Class के लोगन(जवन कि माई भाषा आ गँवई संस्कृति के उद्धार महानगर में एसी में बइठ के करत बारन) के बात विमर्श छपत रहेला , जवना में आम Mass के कवनो स्थान ना रहे। सादर, हमरा ई लिखे में तनिको संकोच नइखे कि #सिरिजन Mass के पत्रिका बा जवना में हमरा जस कतने ठेंठ, अनजान, देहाती आ बेमंच के जीयेवाला साधारन मनई के बात बिचार छपत बा।#सिरिजन के प्रशासकीय सह संपादकीय टीम के बारंबार मंगलकामना करते हुये, सादर निहोरा बा कि येह मौलिकता के बरकरार राखि के साहित्यिक, संस्कृतिक समाजिक अउ ऊँच्च वैचारिक धारा के आगे बढ़ावत रहीं। हार्दिक अभिनंदन । #अमरेन्द्र सिंह, आरा, बिहार

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

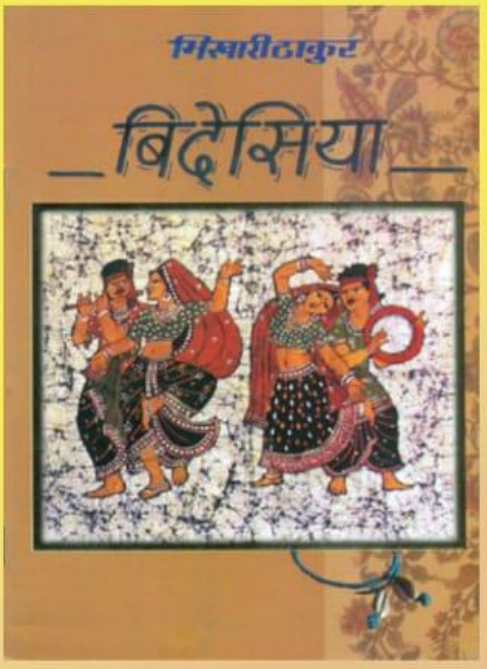

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के तारामंडल के महत्वपूर्ण तारा स्व. श्री भिखारी ठाकुर के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :

वाणी प्रकाशन

मोबाइल नं.- +91-9811053214